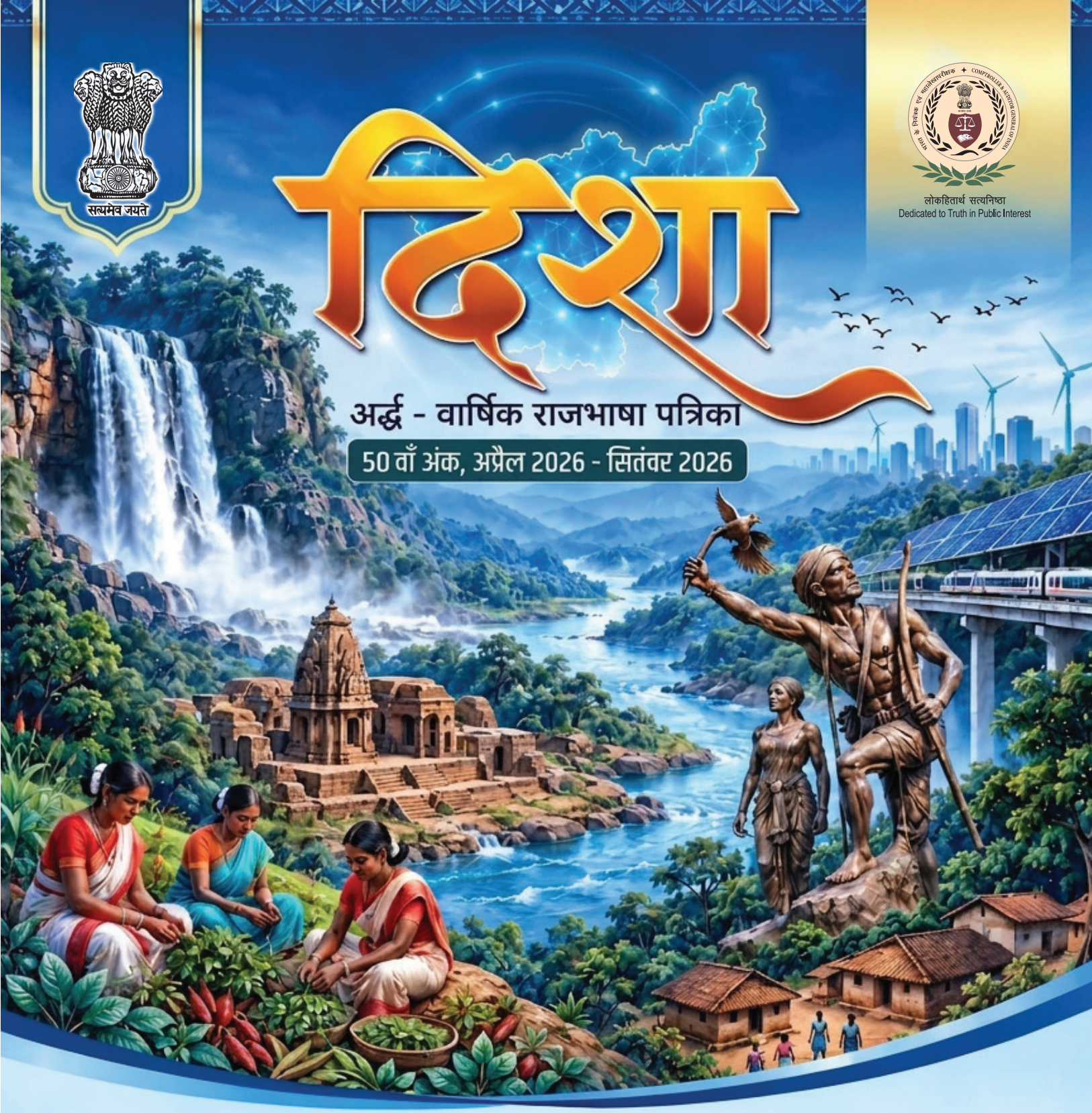
सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

50 वाँ अंक, अप्रैल 2026 - सितंबर 2026



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची

पो. डोरंडा, राँची, झारखण्ड - 834 002

दूरभाष :- 0651-2412942, 2412582 फैक्स :- 0651-2411745

वेबसाइट :- https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en

ई-मेल पता :- rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in



नराकास (का-3), रांची की प्रथम छमाही बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण



हिंदी पखवाड़ा 2025 का समापन समारोह



उप महालेखाकार महोदय का अभिभाषण



हिंदी पखवाड़ा 2025 का समापन समारोह



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर नृत्य प्रदर्शन



नराकास (का-3), रांची की प्रथम छमाही बैठक में उपस्थित सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

50वाँ अंक, अप्रैल 2026 - सितम्बर 2026

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय

पो.- डोरंडा, राँची – 834002 झारखण्ड

दूरभाष :- 0651- 2412942, 2412582 फैक्स :- 0651-2411745

वेबसाइट :- https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en

ई-मेल पता :- rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

राजभाषा परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री चन्द्र मौलि सिंह

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री सुमेधा अमर

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशक परामर्शदातृ समिति

श्री सुभाष कुमार रजक

उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री भार्गव राम ख्याति

उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी.)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री सुनील कुमार साव

सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्रीमती असाई माई पाड़ेया

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री दीपक दयाल प्रसाद

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री हिमांशु पाण्डेय

सहायक लेखा अधिकारी

संपादन सहयोग

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री अमित कुमार

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अस्वीकरण

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। कार्यालय के संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दिशा

अर्द्ध - वार्षिक राजभाषा पत्रिका

50वाँ अंक, अप्रैल 2026 – सितम्बर 2026

स्वत्वाधिकार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची

प्रकाशन

'दिशा' परिवार
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची

अंक

50वाँ

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं,
जिनसे दिशा परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री चन्द्र मौलि सिंह	05
2	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	सुश्री सुमेधा अमर	06
3	उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश	श्री सुभाष कुमार रजक	07
4	उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी.) का संदेश	श्री भार्गव राम ख्याति	08
5	संपादकीय	श्री सुनील कुमार साव	09
6	आपके पत्र		10-13
	गद्य भाग	**लेखक / रचनाकार**	
7	सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अवसर, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ	श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)	15-18
8	अहम	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी, ग्रेड – II	19
9	मेरी पहली विदेश यात्रा	श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार	21-22
10	वेंटिलेटर : एक महायात्रा का पूर्णविराम	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	23-27
11	भाईचारा – एक अटूट बंधन	श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार	28-29
12	प्रायश्चित	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी, ग्रेड – II	30-31
13	भक्ति आंदोलन : श्री चैतन्य महाप्रभु और उसके सामाजिक परिणाम	श्री चंदन साहा, सहायक लेखा अधिकारी	32-34
14	भारत में महिलाओं की स्थिति : इतिहास, कानून, चुनौतियाँ और भविष्य	श्री गोविंद कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	35-36
15	वैश्विक संकट, आर्थिक प्रभाव और भारत के कदम : एक नीतिगत विश्लेषण	श्री गोविंद कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	37-38
16	दार्जिलिंग की यात्रा	श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	39-41
17	सेहत एवं जीवनशैली	श्री बृज नंदन कुमार (द्वारा – श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)	42
18	छत वाली गर्मी	श्री वैभव नंदन डांगिल (द्वारा – श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)	43
19	सिक्किम : जहाँ रास्ते डराते भी हैं और मोह लेते हैं !	श्री कुंदन कुमार, लेखाकार	44-45
20	सोनपापड़ी – परतों में छिपी कहानी	श्री प्रतीक जैन, सहायक लेखा अधिकारी	46
21	काशी घाट	श्री राहुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	47
22	रावण : एक प्रतापी प्रतिनायक का अंतर्द्वंद्व	श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	48-51
	पद्य भाग	**रचनाकार**	
23	मेरा गाँव अब उदास रहता है... (भाग–II)	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	52
24	अब के नेता	श्री जगर नाथ सन्डील, वरीय प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी सुवर्णरेखा नहर प्रमंडल, जमशेदपुर	53
25	ए.आई. बनेगा साथी हमारा	श्रीमती रंजना कुमारी (द्वारा- श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार)	54
26	मैं भी अजीब हूँ	श्रीमती काजल कुमारी (द्वारा- श्री कुंदन कुमार, लेखाकार)	54
27	कुछ खोया और कुछ पाया	श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार	55
28	नन्हीं-सी कदम, तेरे दम से है दम	श्रीमती पूनम कुमारी (द्वारा- श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार)	56
29	प्रकृति	श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	57
30	बैगों की आधी रात वाली पंचायत	श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार	58
	बाल रचना	**बाल रचनाकार**	
31	घमंडी का सिर	सुश्री आदिती प्रिया (द्वारा- श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार)	59
32	लाल लिफ़ाफ़ा और स्कूल का खज़ाना	सुश्री आदिती प्रिया (द्वारा- श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार)	60

प्रधान महालेखाकार का संदेश



कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 50वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

किसी भी संस्थान की पहचान केवल उसकी कार्यप्रणाली और उपलब्धियों से ही नहीं, बल्कि उसके बौद्धिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से भी होती है। इस दृष्टि से 'दिशा' हमारे कार्यालय की सृजनात्मक ऊर्जा, साहित्यिक चेतना तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतिबिंब है। यह पत्रिका केवल रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि कार्यालय परिवार के अनुभवों, विचारों, संवेदनाओं और रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति देने वाला एक जीवंत मंच है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'दिशा' ने अपने प्रकाशन की यात्रा के 50वें पड़ाव को सफलतापूर्वक प्राप्त किया है। यह उपलब्धि पत्रिका से जुड़े संपादकीय मंडल, रचनाकारों तथा उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सतत प्रयास, सहयोग और उत्साह का परिणाम है। पाँच दशकों के इस सफर में पत्रिका ने समय के साथ स्वयं को समृद्ध करते हुए साहित्य, संस्कृति, प्रशासन और सामाजिक सरोकारों के विभिन्न आयामों को अपने पृष्ठों पर स्थान दिया है।

'दिशा' का यह 50वाँ अंक विशेष रूप से इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इसमें प्रकाशित लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण एवं अन्य रचनाएँ हमारी विविध साहित्यिक रुचियों और जीवन के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करती हैं। इनमें समसामयिक विषयों के साथ-साथ मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, प्रकृति, संस्कृति और जीवनानुभवों की भी सार्थक झलक मिलती है। प्रसन्नता की बात है कि हमारे युवा अधिकारी एवं कर्मचारी भी उत्साहपूर्वक इस रचनात्मक यात्रा से जुड़ रहे हैं। उनकी सहभागिता पत्रिका के भविष्य के प्रति आश्वस्त करती है।

राजभाषा हिंदी का प्रभावी प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि हमारी कार्य-संस्कृति को अधिक सहज, व्यापक और जनोन्मुख बनाने का माध्यम भी है। मुझे विश्वास है कि 'दिशा' इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के साथ-साथ साहित्यिक एवं रचनात्मक वातावरण को भी निरंतर सुदृढ़ करती रहेगी।

इस गौरवपूर्ण अवसर पर मैं 'दिशा' के संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति अपनी हार्दिक सराहना एवं आभार व्यक्त करता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि 'दिशा' आने वाले वर्षों में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करे, अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखे और कार्यालय परिवार की प्रतिभाओं को निरंतर एक सशक्त मंच प्रदान करती रहे।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

(चन्द्र मौलि सिंह)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश



कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 50वें अंक के प्रकाशन पर मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, रचनाकारों एवं संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

'दिशा' हमारे कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, साहित्यिक अभिव्यक्ति तथा रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने का एक प्रभावी माध्यम है। इस अंक में प्रकाशित विविध रचनाएँ हिंदी की समृद्ध परंपरा और हमारे सहयोगियों की सृजनशीलता का परिचय देती हैं।

मुझे विश्वास है कि 'दिशा' भविष्य में भी इसी गुणवत्ता के साथ प्रकाशित होती रहेगी तथा राजभाषा हिंदी के संवर्धन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुमेधा अमर)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

उप महालेखाकार (पेंशन) का संदेश



कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका **'दिशा'** के **50वें अंक** के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है। इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, रचनाकारों तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

किसी भी कार्यालय की कार्य-संस्कृति केवल उसके प्रशासनिक दायित्त्वों और कार्य-निष्पादन तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसके भीतर विकसित होने वाली साहित्यिक, सांस्कृतिक और सृजनात्मक चेतना भी उसकी पहचान को समृद्ध करती है। इस दृष्टि से **'दिशा'** हमारे कार्यालय की रचनात्मक ऊर्जा और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का सशक्त माध्यम है। यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने विचारों, अनुभवों, संवेदनाओं और कल्पनाशीलता को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

'दिशा' का 50वाँ अंक इस सतत रचनात्मक यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। इसमें सम्मिलित लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण एवं विविध रचनाएँ न केवल पाठकों की साहित्यिक रुचि को समृद्ध करती हैं, बल्कि जीवन के विविध पक्षों, सामाजिक सरोकारों, मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों से भी परिचित कराती हैं। इन रचनाओं में अभिव्यक्त विचार यह दर्शाते हैं कि हमारे कार्यालय परिवार में प्रशासनिक दायित्त्वों के साथ-साथ साहित्य और सृजन के प्रति भी गहरी संवेदनशीलता विद्यमान है।

इस अवसर पर संपादकीय मंडल, सभी रचनाकारों एवं सहयोगी अधिकारियों-कर्मचारियों को पुनः हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(सुभाष कुमार रजक)

उप महालेखाकार (पेंशन)

उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी.) का संदेश



कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 50वें अंक के प्रकाशन पर सभी सहयोगियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, कार्यालय की साहित्यिक संस्कृति तथा कार्मिकों की रचनात्मक सोच का सुंदर परिचय प्रस्तुत करती है। इस अंक में संकलित रचनाएँ पाठकों को नई दृष्टि, सकारात्मक विचार एवं ज्ञानवर्धक अनुभव प्रदान करेंगी।

मैं आशा करता हूँ कि 'दिशा' इसी प्रकार निरंतर प्रकाशित होती रहेगी और अधिकाधिक अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी मौलिक रचनाओं से इसे समृद्ध बनाते रहेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(भार्गव राम ख्याति)
उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी.)

संपादकीय



"सृजन मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और भाषा उसके विचारों, अनुभवों तथा संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम।" इन्हीं भावनाओं को केंद्र में रखते हुए कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका **'दिशा'** का **50वाँ अंक** आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष और प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। हिंदी की समृद्ध साहित्यिक परंपरा, सहज अभिव्यक्ति, व्यापक स्वीकार्यता और मानवीय संवेदनाओं को स्पर्श करने की क्षमता ने इसे सदैव जन-मन से जोड़कर रखा है। इसी जीवंत परंपरा की एक छोटी-सी कड़ी बनने का प्रयास **'दिशा'** निरंतर करती रही है।

दिशा पत्रिका के 50वें अंक का प्रकाशन केवल एक संख्या का पड़ाव नहीं, बल्कि एक सतत साहित्यिक एवं राजभाषायी यात्रा का गौरवपूर्ण मील का पत्थर है। यह उपलब्धि इस बात का प्रमाण है कि हमारे कार्यालय परिवार ने राजभाषा हिंदी के प्रति न केवल अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है, बल्कि उसे अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति और कार्य-संस्कृति का अभिन्न हिस्सा भी बनाया है। पत्रिका की अब तक की यात्रा में प्राप्त सहयोग, प्रोत्साहन और सहभागिता ने **'दिशा'** को निरंतर नई ऊर्जा प्रदान की है।

इस विशेष अंक को विविधता और रचनात्मकता से समृद्ध बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें **कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत, बाल रचनाएँ तथा समसामयिक विषयों पर केंद्रित लेख** सम्मिलित हैं। विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त ये रचनाएँ जीवन के विविध रंगों, अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों को हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। कहीं स्मृतियों की आत्मीयता है, कहीं कल्पना की उड़ान, कहीं सामाजिक सरोकारों की गंभीरता तो कहीं बालमन की सहज और निश्छल अभिव्यक्ति—इन सबने मिलकर इस अंक को अधिक जीवंत, समृद्ध और संतुलित स्वरूप प्रदान किया है।

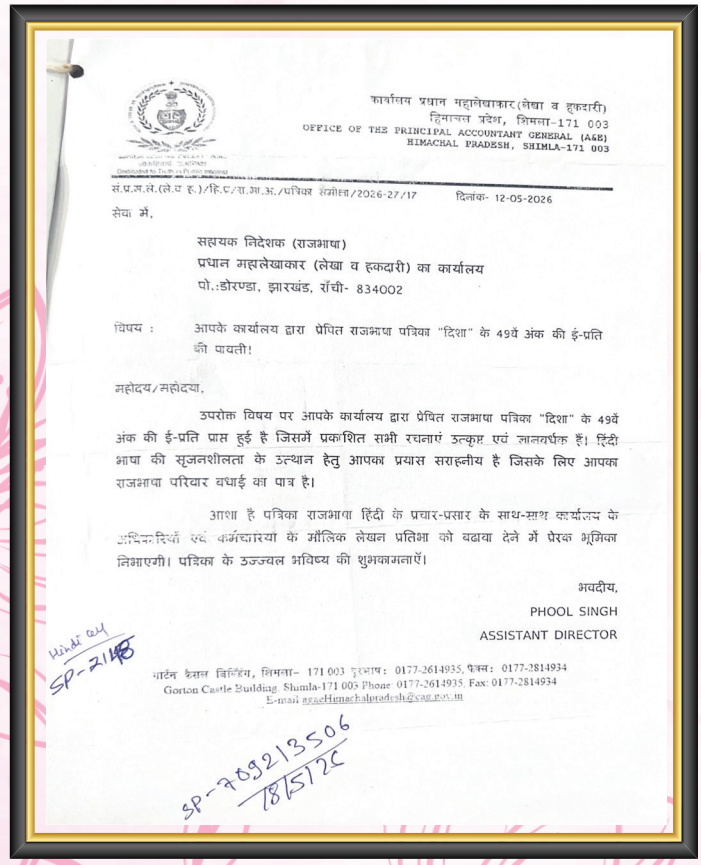
आज का समय तीव्र परिवर्तन और तकनीकी विस्तार का समय है। **डिजिटल माध्यमों ने संप्रेषण की गति को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है, किंतु भाषा की गरिमा, साहित्यिक संस्कार और विचारों की गंभीरता का महत्व आज भी उतना ही प्रासंगिक है।** ऐसे समय में **'दिशा'** केवल रचनाओं का संकलन मात्र नहीं, बल्कि कार्यालयीन परिवेश में सृजनशीलता, सकारात्मक चिंतन, साहित्यिक अभिरुचि और बौद्धिक संवाद को प्रोत्साहित करने का एक सार्थक प्रयास है। हमारा विश्वास है कि हिंदी का प्रयोग जितना सहज और व्यापक होगा, हमारी कार्य-संस्कृति भी उतनी ही अधिक संवेदनशील, प्रभावी और जनोन्मुख बनेगी।

इस अंक की परिकल्पना से लेकर इसके प्रकाशन तक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले **सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल, अधिकारियों एवं कर्मचारियों** के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से उन सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता, जिन्होंने अपने समय, अनुभव, बहुमूल्य सुझावों और रचनात्मक योगदान से इस अंक को सार्थक बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह पत्रिका वास्तव में हम सभी की सामूहिक सृजनात्मकता का प्रतिबिंब है।

इसी विश्वास और आशा के साथ **'दिशा'** के **50वें अंक** को आपके कर-कमलों में सौंपते हुए पत्रिका की सतत प्रगति, निरंतर समृद्धि एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(सुनील कुमार साव)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं.प्र.ज.ले.(ले.व ह.)/हि.प्र./रा.भा.अ./पत्रिका रसीदा/2026-27/17 दिनांक- 12-05-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय
पो.:डोरण्डा, झारखंड, राँची- 834002

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की ई-प्रति की पावती!

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

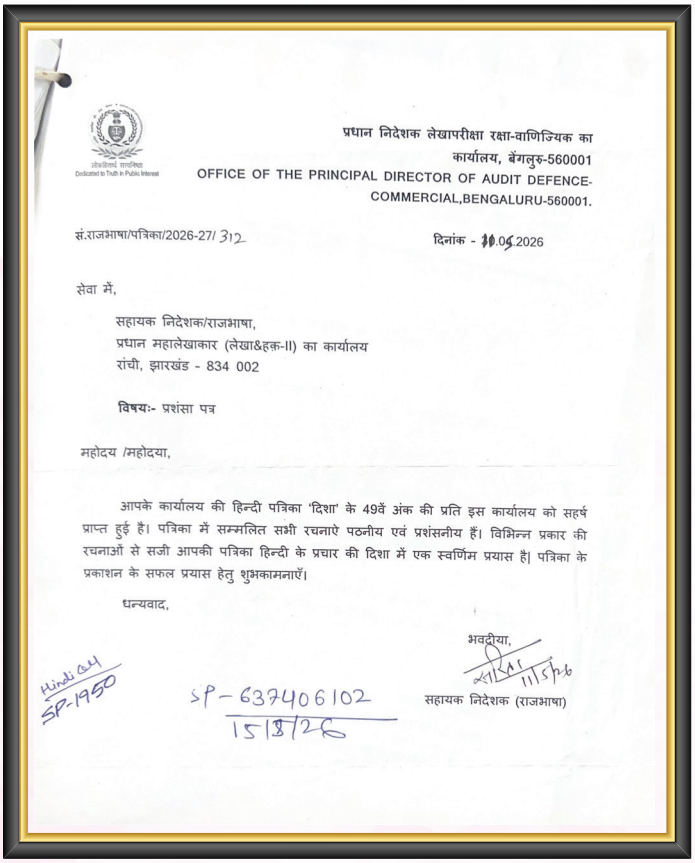
आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,
PHOOL SINGH
ASSISTANT DIRECTOR

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला- 171 003 दूरभाष: 0177-2614935, फैक्स: 0177-2814934
Gorton Castle Building, Shimla-171 005 Phone: 0177-2614935, Fax: 0177-2814934
E-mail agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

Hindi Cell
SP-21145

SP-709213506
18/5/26



प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय, बेंगलुरु-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT DEFENCE-COMMERCIAL,BENGALURU-560001.

सं.राजभाषा/पत्रिका/2026-27/ 312 दिनांक - 10.06.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक/राजभाषा,
प्रधान महालेखाकार (लेखा&हक़-II) का कार्यालय
रांची, झारखंड - 834 002

विषयः- प्रशंसा पत्र

महोदय /महोदया,

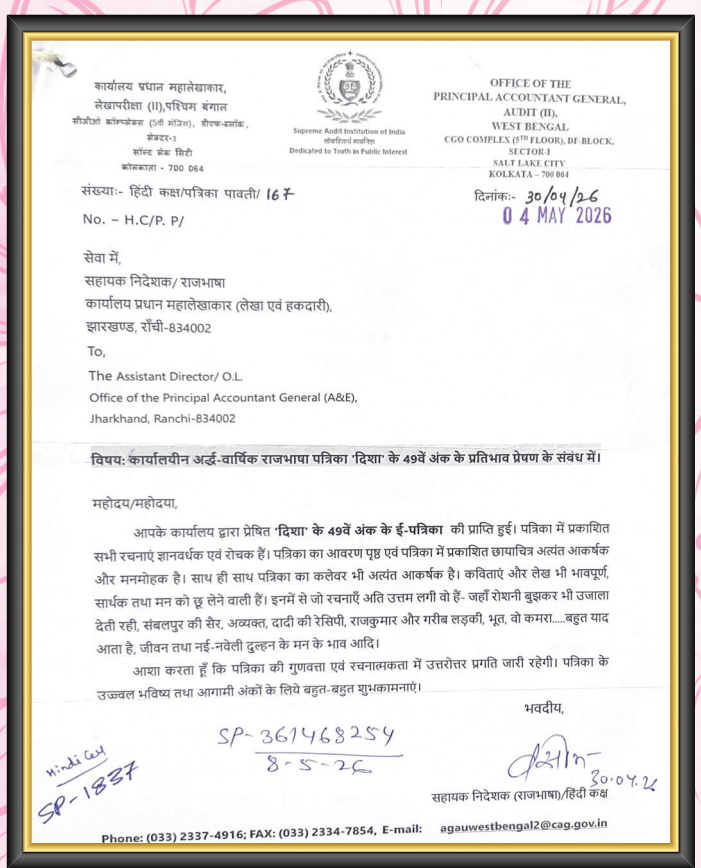
आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी के प्रचार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Hindi Cell
SP-1950

SP-637406102
15/8/26



कार्यालय प्रधान महालेखाकार,
लेखापरीक्षा (II),पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वी मंज़िल), डीएफ-ब्लॉक, सेक्टर-1
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

Supreme Audit Institution of India
सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL,
AUDIT (II),
WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK,
SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्याः- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 167 दिनांकः- 30/04/26
No. – H.C/P. P/ 04 MAY 2026

सेवा में,
सहायक निदेशक/ राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
झारखण्ड, राँची-834002

To,
The Assistant Director/ O.L.
Office of the Principal Accountant General (A&E),
Jharkhand, Ranchi-834002

विषय: कार्यालयीन अर्द्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'दिशा' के 49वें अंक के ई-पत्रिका** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- जहाँ रोशनी बुझकर भी उजाला देती रही, संबलपुर की सैर, अव्यक्त, दादी की रेसिपी, राजकुमार और गरीब लड़की, भूत, वो कमरा.....बहुत याद आता है, जीवन तथा नई-नवेली दुल्हन के मन के भाव आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

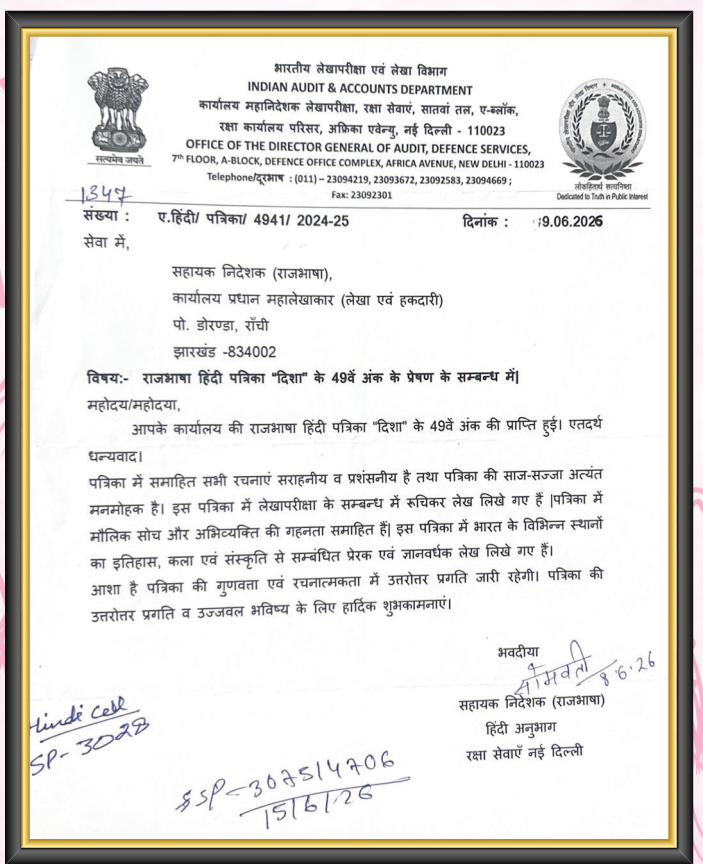
भवदीय,
सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी कक्ष

Hindi Cell
SP-1837

SP-361468254
8-5-26

30.04.26

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in



भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएं, सातवां तल, ए-ब्लॉक,
रक्षा कार्यालय परिसर, अफ्रिका एवेन्यु, नई दिल्ली - 110023
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, DEFENCE SERVICES,
7TH FLOOR, A-BLOCK, DEFENCE OFFICE COMPLEX, AFRICA AVENUE, NEW DELHI - 110023
Telephone/दूरभाष : (011) – 23094219, 23093672, 23092583, 23094669 ;
Fax: 23092301

सत्यमेव जयते
Supreme Audit Institution of India
सत्यनिष्ठा सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

1347
संख्या : ए.हिंदी/ पत्रिका/ 4941/ 2024-25 दिनांक : 9.06.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पो. डोरण्डा, राँची
झारखंड -834002

विषयः- राजभाषा हिंदी पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक के प्रेषण के सम्बन्ध में|

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय व प्रशंसनीय है तथा पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत मनमोहक है। इस पत्रिका में लेखापरीक्षा के सम्बन्ध में रुचिकर लेख लिखे गए हैं |पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं| इस पत्रिका में भारत के विभिन्न स्थानों का इतिहास, कला एवं संस्कृति से सम्बंधित प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया
सहायक निदेशक (राजभाषा)
हिंदी अनुभाग
रक्षा सेवाएँ नई दिल्ली

8.6.26

Hindi Cell
SP-3028

SP-307514706
15/6/26

आपके पत्र

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2026-27/ 71 दिनांक : 05.05.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, रांची

विषयः- अर्द्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक की पावती।

संदर्भः- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 27.04.2026

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं विषय वस्तु बेहतरीन है। इस अंक में प्रस्तुत लेख ज्ञानवर्धक हैं तथा वे कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता, बौद्धिक दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त करते हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषतः **'आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण में सहकारिता का योगदान', 'अव्यक्त', 'भौतिक बनाम आध्यात्मिक- एक खोज', 'नियमों के पारः एक अनोखी जुगलबंदी', 'शुक्रिया मन', 'मरता क्या न करता'** एवं **'सीख'** सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और तथ्यात्मक है। चित्रों, संदर्भों और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संतुलित संयोजन विषय को और अधिक जीवंत बनाता है।

ऐसे सार्थक और गुणवतापूर्ण अंक के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

5-5-26

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone:- 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

---

महानिदेशक लेखापरीक्षा(केन्द्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद, शाखा:भुवनेश्वर
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL), HYDERABAD
BRANCH OFFICE: ODISHA, BHUBANESWAR

सं-हिंदी प्रकोष्ठ/सी.आर.ए./हिन्दी पत्रिका पावती/2025-26/02/18 दिनांक- 21/05/2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, रॉंची

विषय- हिंदी पत्रिका "दिशा" के 49 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति की पावती का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका **"दिशा" के 49 वें अंक** (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई । तदहेतु धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत मनमोहक होने के साथ-साथ पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं भी पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं विशेषकर जहाँ रौशनी बूझकर भी उजाला देती रही, अव्यक्त, दादी की रेसिपी, जीवन, अनोखा बर्थडे।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS EPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

380

सं. प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/अंक- 18 दिनांक : 04.05.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक/राजभाषा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड, राँची
विषयः कार्यालयीन पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "दिशा" के 49वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री सुनील कुमार साव	वो कमरा... बहुत याद आता है, आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण में सहकारिता का योगदान
2.	श्री कृष्ण लाल	जहाँ रोशनी बुझकर भी उजाला देती रही
3.	श्री कुंदन कुमार	दिसंबर की सर्दी, हिटमैन की गर्मी
4.	श्री सोनू कुमार	राजकुमार और गरीब लड़की
5.	श्री अमित कुमार	नियमों के पार : एक अनोखी जुगलबंदी, एक स्वप्न : माँ का गुजरना

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

व.ले.प.अ./राजभाषा

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे, गोरखपुर-273012
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
Railway, Gorakhpur-273012

Dedicated to Truth in Public Interest

सं.प्रशा./10-4/पारिजात/01/19/804 दिनांक-18-07-2026
14

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
झारखण्ड, राँची-834002

विषय- कार्यालयीन अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका **"दिशा" के 49वें अंक** के ई-संस्करण की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की कार्यालयीन अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका **"दिशा" के 49वें अंक** की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित श्री सुनील कुमार साव का लेख **"वो कमरा बहुत याद आता है",** सुश्री मधु कुमारी पाण्डेय का लेख **"मरता क्या न करता",** श्री अमित कुमार का लेख **"एक स्वप्न मां का गुजरना",** श्री पुरुषोत्तम दास का लेख **"अव्यक्त"** एवं श्री कृष्ण लाल का लेख **"जीवन"** विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की अधिकाधिक प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., सैक्टर 17-ई, चंडीगढ़ - 160017.

Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T., Sector-17 E,
Chandigarh – 160017.

Phone: 0172-2702906, 2703117, 2709576
Fax – 0172-2702286
Mail: agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/पत्र-10/2025-26/I/1451642/2026 दिनांक:29-05-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड
पो.: डोरण्डा, रांची - 834002

विषय: अर्ध वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'दिशा'** के 49वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री पुरुषोतम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी की रचना **'अव्यक्त'**, श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक की रचना **'एक स्वप्न 'मां का गुजरना'**, तथा श्रीमती गीतांजली कुमारी, लेखाकार की रचना **'शुक्रिया माँ'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

Digitally signed by
Devendra Singh
Date: 29-05-2026
10:23:36

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे, नई दिल्ली (शाखा कार्यालय जयपुर)

संख्या: लेप/मु./प्रशा./पुस्तकालय/विविधपत्राचार/2022-23/ दिनांक:20-05-2026

सेवा में.

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एंव हकदारी)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची

विषय: अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका- "दिशा" के 49वें अंक की प्राप्ति पर प्रशंसा से सम्बंधित।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका- "दिशा" के 49वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ अति मोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है अपितु सामाजिक पहलूओं पर भी प्रकाश डालती है।

1. श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक की "वो कमरा...बहुत याद आता है"
2. श्रीमती प्रभा देवी (दवारा कृष्ण लाल, लेखाकार) की "भौतिक बनाम आध्यात्मिक- एक सोच"
3. श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय, कनिष्ठ अनुवादक की "मरता क्या न करता"
4. श्री प्रदीप कुमार,लेखाकार की "जीवन पतंग"

पत्रिका का संपादक मंडल विशेष तौर पर बधाई का पात्र है। पत्रिका की सफलता एवं उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

SUDESH KUMARI
सहायक निदेशक (राजभाषा)
जयपुर

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI-752003

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2026-27/21 दिनांक:- 19 .05.2026

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
झारखंड, रांची-834002

विषय : अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के अंक 49वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपकी हिन्दी पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"दिशा" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत आकर्षक, दर्शनीय व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "जहां रोशनी बुझकर भी उजाला देती रही", "अव्यक्त", "नियमों के पार : एक अनोखी जुगलबंदी" और "मरता क्या न करता" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सुधाम सेठी 19.5.26
(सुधाम सेठी)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग,
कार्यालय: प्रधाननिदेशक लेखापरीक्षा, वित्त व संचार दिल्ली
शाखा: वित्त व संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
बसवा भवन, दूसरा तल, बसवेश्वरा सर्किल, बेंगलुरु-560001
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT, FINANCE AND COMMUNICATIONS DELHI
BRANCH: FINANCE AND COMMUNICATIONS AUDIT OFFICE
BASAVA BHAVAN, BASAVA CIRCLE, BENGALURU-560001
(ईमेल : brptbangalore@cag.gov.in, फोन: +९१ -८८० -२२२ ६२३४१)
(Email: brptbangalore@cag.gov.in, Phone: +91-080-22262341)

सत्यमेव जयते

सं.हिं.क./हिं.पत्रि.पा./2026-27/24 दिनांक: 18.05.2026

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय,
राँची- 834002

विषय: हिंदी पत्रिका *'दिशा'* के 49वां अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिका *'दिशा'* के 49वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेषकर श्री सुनील कुमार साव का लेख *'आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण में सहकारिता का योगदान'*, श्री विनय प्रधान का लेख *'ऑडिट सलाह'*, श्री गौरव आनंद का लेख *'मंदिर निर्माण कला का संक्षिप्त इतिहास एवं झारखण्ड के प्रमुख मंदिर'*, श्री अमित कुमार की कविता *"एक स्वप्न 'मां का गुजरना'"*, सुश्री ज्योति कुमारी की कहानी *'सीख'* तथा सुश्री आदिती प्रिया की कविता *'चतुर चित्रकार'* रचनाएँ।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 18-05-2026
16:59:14

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आपके पत्र

फाईलनाम हि.अ./ले.एवंहक./05/पत्रिकाप्रतिभाव/2024-25 I/1436383/2026

प्रधान महालेखाकार (ले0ए0) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार – 800001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIRCHAND PATEL PATH PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यनिष्ठता सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/ Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/26-27/ 19
दिनांक/ Date:- 10.05.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय,
राँची-834002

विषयः कार्यालयीन अर्द्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका "दिशा" का 49वां अंक ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। श्रेष्ठ एवं रोचक कृतियों से सुसज्जित यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा प्रदान करती है, बल्कि यह कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्साह में वृद्धि भी करती है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं; विशेषकर **भौतिक बनाम आध्यात्मिक- एक खोज, राजकुमार और गरीब लड़की, जीवन, पकड़ुआ विवाह : एक अनचाहा बंधन, सीख, वो कमरा.... बहुत याद आता है एवं जीवन पतंग** इत्यादि रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन को सफल बनाने के लिए सभी रचनाकारों तथा पत्रिका के प्रकाशन कार्य में संलग्न संपादक मंडल को हृदय से बधाई। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

सुनील कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: 0612-2225634 Fax: 0612-2221056 Email: agaebihar@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट
नंबर 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण
मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2026-27/46 **दिनांक/Dated:** 04.05.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़.)
झारखण्ड का कार्यालय

विषय - कार्यालयीन अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'दिशा'** की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं। पत्रिका की साज-सज्जा और विषयों का प्रस्तुतीकरण अत्यंत मनमोहक है।

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त कार्मिकों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय हैं। पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(रा.भा.)

हि.प्र./ले.प./2022-23/पत्रिकापावती/90 I/1429320/2026

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय, झारखण्ड, राँची
Office of the Principal Accountant General (Audit), Jharkhand, Ranchi

संख्या- रा.भा.अनु./ले.प./90/पत्रिका पावती/2026-27/40 दिनांक:12-05-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय,
डोरण्डा, राँची- 834002

विषय- अर्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की ई-प्रति की पावती का प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "दिशा" के 49वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आंतरिक पृष्ठ बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है एवं मुद्रण कार्य उच्च स्तरीय है। साथ ही, पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ विशेषकर श्री सुनील कुमार साव द्वारा लिखित "आत्मनिर्भर भारत के नव-निर्माण में सहकारिता का योगदान", श्रीमती असाई माई पाड़ेया द्वारा लिखित यात्रा-वृतांत "संबलपुर की सैर", श्रीमती प्रभा देवी द्वारा लिखित "भौतिक बनाम आध्यात्मिकः एक खोज", श्री अमित कुमार की लेख "नियमों के पारः एक अनोखी जुगलबंदी- भाग(1)", श्री कृष्ण लाल द्वारा रचित कविता "जीवन", श्रीमती काजल कुमारी की कविता "नई-नवेली दुल्हन के मन के भाव" एवं सुश्री ज्योति कुमारी द्वारा लिखित कविता "भगवान जी, मौसम समझाना" आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रकृति की हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Shailendra Kumar
Date: 12-05-2026
12:03:13

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Telephone: 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax: 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail: agaujharkhand@cag.gov.in

---

Re:[Cag-all-users] कार्यालयीन अर्द्ध-वार्षिक राजभाषा पत्रिका 'दिशा' के 49वें अंक (अक्टूबर 2025 से मार्च 2026) की ई-प्रति का प्रेषण। **rajbhasha.jhr.ae** < rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in >

6 emails

CHITRA V < chitrav.tmn.au@cag.gov.in >
Fri, 31 Jul 2026 2:59:37 PM +0530

To "Rajbhasha Ranchi"<rajbhasha.jhr.ae@cag.gov.in>

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई - 18

सं.प्र.मले.(लेप- II)/ रा.भा.अ./प्रशंसा पत्र/7-38/32 दिनांक: 31.07.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड,
राँची - 834002

विषय : कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका **'दिशा' के 49वें अंक** की अभिस्वीकृति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **'दिशा' के 49वें अंक** की ई-प्रति प्राप्त की गई। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।
पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, उच्चस्तरीय एवं रोचक हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। पत्रिका के सभी रचनाकारों को साधुवाद । विविध विषयों पर उत्कृष्ट रचनाएं संकलित करके **'दिशा'** के इस अंक के कुशल संपादन एवं श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए आपको और संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां । पत्रिका के निरंतर विकास की कामना करते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी पत्रिका की प्रतियां हमें मिलती रहेंगी ।

भवदीया,

(वी. चित्रा)
सहायक निदेशक (राजभाषा)



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर विजेताओं को पुरस्कृत करते समूह अधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर विजेताओं को पुरस्कृत करते समूह अधिकारी



निर्णायक को मोमेंटो से सम्मानित करते समूह अधिकारी



हिंदी पखवाड़ा 2025 के समापन समारोह पर विजेताओं को पुरस्कृत करते समूह अधिकारी



नन्हें कलाकारों को पुरस्कृत करते वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अवसर, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ



श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

इक्कीसवीं शताब्दी को यदि सूचना और ज्ञान का युग कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र - शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, बैंकिंग, स्वास्थ्य, संचार, मनोरंजन, न्याय, अनुसंधान तथा शासन-को गहराई से प्रभावित किया है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), क्लाउड कम्प्यूटिंग, बिग डेटा, मशीन लर्निंग, सोशल मीडिया तथा मोबाइल प्रौद्योगिकी ने विश्व को एक वैश्विक डिजिटल मंच पर ला खड़ा किया है। आज सूचना का आदान-प्रदान कुछ ही सेकंड में विश्व के किसी भी कोने तक संभव है। यह परिवर्तन केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का भी आधार बन चुका है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में सूचना प्रौद्योगिकी की सफलता तभी सार्थक हो सकती है, जब उसकी पहुँच देश के प्रत्येक नागरिक तक उसकी अपनी भाषा में हो। हिंदी भारत की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है तथा यह करोड़ों भारतीयों के दैनिक जीवन, प्रशासन, शिक्षा और संचार की प्रमुख भाषा है। ऐसे में सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा का संबंध केवल तकनीकी सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समावेशी विकास, लोकतांत्रिक सहभागिता और डिजिटल सशक्तिकरण का आधार भी है।

पिछले दो दशकों में हिंदी ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। यूनिकोड, इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, वॉइस टाइपिंग, मशीन अनुवाद, मोबाइल एप्लिकेशन, सोशल मीडिया, डिजिटल समाचार पोर्टल, ई-गवर्नेंस सेवाएँ तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों ने हिंदी को वैश्विक डिजिटल मंच पर नई पहचान प्रदान की है। आज कोई भी व्यक्ति मोबाइल फोन पर हिंदी में संदेश लिख सकता है, ई-मेल भेज सकता है, ऑनलाइन बैंकिंग कर सकता है, सरकारी सेवाओं का लाभ उठा सकता है तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्लेटफॉर्म से हिंदी में संवाद कर सकता है। यह परिवर्तन हिंदी भाषा के डिजिटल सशक्तिकरण का सशक्त प्रमाण है।

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ एवं स्वरूप

सूचना प्रौद्योगिकी से अभिप्राय उन सभी तकनीकों से है जिनके माध्यम से सूचना का संग्रहण, प्रसंस्करण, संरक्षण, विश्लेषण तथा आदान-प्रदान किया जाता है। इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल संचार, क्लाउड कम्प्यूटिंग, डेटाबेस, सॉफ्टवेयर, नेटवर्किंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा डिजिटल संचार माध्यम सम्मिलित हैं।

आज सूचना प्रौद्योगिकी केवल कंप्यूटर तक सीमित नहीं है। प्रत्येक स्मार्टफोन एक लघु कंप्यूटर के रूप में कार्य कर रहा है। डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, टेलीमेडिसिन, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन टिकट बुकिंग, डिजिटल दस्तावेज, आधार आधारित सेवाएँ, यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI), डिजिलॉकर तथा विभिन्न सरकारी पोर्टल इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई **डिजिटल इंडिया** पहल ने सूचना प्रौद्योगिकी को सामान्य नागरिक के जीवन से जोड़ दिया है। इसका उद्देश्य डिजिटल अवसंरचना का विकास, ऑनलाइन सेवाओं की उपलब्धता तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण है। इन सभी प्रयासों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि सेवाएँ नागरिकों की भाषा में उपलब्ध हों।

हिंदी भाषा का महत्व

हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह केवल भारत की राजभाषा ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषा है। विश्व के अनेक देशों में भारतीय समुदाय हिंदी का प्रयोग करता है। संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, नेपाल तथा अनेक यूरोपीय देशों में हिंदी का अध्ययन एवं प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

आज हिंदी साहित्य, पत्रकारिता, सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो, सोशल मीडिया तथा डिजिटल मीडिया के माध्यम से वैश्विक पहचान बना चुकी है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की मात्रा पिछले कुछ वर्षों में तीव्र गति से बढ़ी है। समाचार पोर्टल, ब्लॉग, ई-पुस्तकें, ऑनलाइन पत्रिकाएँ तथा शैक्षणिक सामग्री हिंदी में बड़ी संख्या में उपलब्ध हो रही हैं।

नई शिक्षा नीति 2020 ने भी मातृभाषा तथा भारतीय भाषाओं में शिक्षा पर विशेष बल दिया है। इससे हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के डिजिटल संसाधनों के विकास को नई गति मिली है।

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी का पारस्परिक संबंध

भाषा किसी भी सूचना प्रणाली का मूल आधार होती है। यदि उपयोगकर्ता अपनी भाषा में सूचना प्राप्त नहीं कर सके, तो तकनीक का वास्तविक लाभ समाज तक नहीं पहुँच सकता। इसी कारण सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं।

प्रारम्भिक दौर में कंप्यूटर मुख्यतः अंग्रेजी भाषा तक सीमित थे। हिंदी में कार्य करना कठिन था क्योंकि विभिन्न फॉन्टों के कारण एकरूपता नहीं थी। एक कंप्यूटर पर तैयार दस्तावेज दूसरे कंप्यूटर पर सही प्रकार से नहीं खुलते थे। इससे हिंदी के डिजिटल विकास में अनेक बाधाएँ थीं।

यूनिकोड के आगमन ने इस समस्या का स्थायी समाधान प्रस्तुत किया। यूनिकोड एक वैश्विक मानक है जिसके माध्यम से हिंदी सहित विश्व की अनेक भाषाओं में एक समान रूप से कार्य किया जा सकता है। आज माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, गूगल डॉक्स, वेब ब्राउज़र, मोबाइल फोन, ई-मेल, सोशल मीडिया तथा अधिकांश सॉफ्टवेयर यूनिकोड आधारित हिंदी का समर्थन करते हैं।



आज उपयोगकर्ता इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, फोनेटिक टाइपिंग, रेमिंगटन लेआउट, वॉइस टाइपिंग तथा हस्तलेखन पहचान (Handwriting Recognition) जैसी सुविधाओं के माध्यम से सहज रूप से हिंदी में कार्य कर सकते हैं। इससे हिंदी का प्रयोग कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों तथा निजी क्षेत्र में निरंतर बढ़ रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और हिंदी

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे प्रभावशाली क्षेत्र बनकर उभरी है। चैट जी.पी.टी, गुगल जैमिनी, माइक्रोसॉफ्ट Copilot तथा अन्य ए.आई आधारित प्रणालियाँ हिंदी में प्रश्नों के उत्तर देने, लेख लिखने, अनुवाद करने, सारांश तैयार करने, भाषण लिखने तथा विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में सहायता प्रदान कर रही हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। कार्यालयी पत्राचार, टिप्पणियाँ, प्रतिवेदन, कार्यवृत्त, भाषण, परिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति तथा अनुवाद कार्य अब पहले की अपेक्षा कहीं अधिक तेजी और दक्षता से किए जा सकते हैं। हालांकि AI द्वारा तैयार सामग्री का तथ्यात्मक एवं भाषाई परीक्षण मानव विशेषज्ञ द्वारा किया जाना अभी भी आवश्यक है।

AI आधारित वॉइस असिस्टेंट अब हिंदी में आदेश समझने लगे हैं। किसान मौसम की जानकारी हिंदी में प्राप्त कर सकते हैं, विद्यार्थी हिंदी में अध्ययन सामग्री खोज सकते हैं और नागरिक सरकारी योजनाओं की जानकारी अपनी भाषा में प्राप्त कर सकते हैं। इससे डिजिटल समावेशन को नई दिशा मिली है।

डिजिटल इंडिया और हिंदी भाषा

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में प्रारंभ किए गए **डिजिटल इंडिया अभियान** का उद्देश्य भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित करना है। इस अभियान के तीन प्रमुख आधार हैं—प्रत्येक नागरिक के लिए डिजिटल अवसंरचना, मांग पर सरकारी सेवाओं की उपलब्धता तथा नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण।

डिजिटल इंडिया की सफलता का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार भारतीय भाषाओं में डिजिटल सेवाओं की उपलब्धता है। भारत की बड़ी आबादी अंग्रेज़ी की अपेक्षा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य करना अधिक सहज समझती है। यदि सरकारी पोर्टल, मोबाइल एप्लिकेशन, बैंकिंग सेवाएँ, कृषि संबंधी जानकारी, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा शिक्षा सामग्री केवल अंग्रेज़ी में उपलब्ध हों, तो डिजिटल समावेशन का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा।

आज अधिकांश सरकारी वेबसाइटें और नागरिक सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। **डिजिलॉकर, उमंग (UMANG), आधार सेवाएँ, आयुष्मान भारत, पीएम किसान, आयकर ई-फाइलिंग, ई-कोर्ट्स, जीएसटी पोर्टल तथा रेलवे और बैंकिंग सेवाओं** में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है। इससे ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्रों के नागरिक भी डिजिटल सेवाओं का लाभ आसानी से प्राप्त कर रहे हैं।

ई-गवर्नेंस और राजभाषा हिंदी

ई-गवर्नेंस का तात्पर्य सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रशासनिक सेवाओं को सरल, पारदर्शी, उत्तरदायी तथा प्रभावी बनाना है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में ई-ऑफिस प्रणाली, डिजिटल फाइल प्रबंधन, ऑनलाइन पत्राचार तथा ई-नोटिंग का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज अधिकांश कार्यालयों में यूनिकोड आधारित हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है। ई-ऑफिस में हिंदी टिप्पणियाँ, कार्यालय आदेश, परिपत्र, अधिसूचनाएँ, प्रतिवेदन तथा पत्राचार तैयार किए जा रहे हैं। राजभाषा विभाग द्वारा विकसित विभिन्न हिंदी सॉफ्टवेयर तथा ऑनलाइन संसाधनों ने हिंदी में कार्यालयी कार्य को अधिक सरल और प्रभावी बनाया है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ (नराकास), विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ तथा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी कंप्यूटिंग, यूनिकोड, इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, वॉइस टाइपिंग तथा डिजिटल हिंदी उपकरणों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इससे प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को नई गति मिली है।

सोशल मीडिया और हिंदी

सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा के विकास में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। फेसबुक, एक्स (पूर्व ट्विटर), इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सएप,

टेलीग्राम तथा विभिन्न ब्लॉगिंग प्लेटफॉर्मों पर हिंदी में प्रतिदिन लाखों संदेश, लेख, वीडियो और विचार साझा किए जाते हैं।

यूट्यूब पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रतियोगी परीक्षाओं, कृषि, स्वास्थ्य, वित्त, कानून तथा रोजगार संबंधी हजारों चैनल हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण हुआ है और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों एवं युवाओं को गुणवत्तापूर्ण सामग्री अपनी भाषा में प्राप्त होने लगी है। हालाँकि सोशल मीडिया ने हिंदी को लोकप्रिय बनाया है, परंतु इसके साथ भाषा की शुद्धता, वर्तनी तथा अभिव्यक्ति की गुणवत्ता बनाए रखना भी आवश्यक है। तकनीकी सुविधा के कारण हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, किंतु मानक हिंदी के संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी समाज की भी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी का नया युग

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे प्रभावशाली क्षेत्र बन चुकी है। चैट जी.पी.टी, गुगल जैमिनी, माइक्रोसॉफ्ट कैलीपॉट तथा अन्य ए.आई आधारित प्रणालियाँ हिंदी में लेखन, अनुवाद, सारांश, भाषण, रिपोर्ट, प्रश्नोत्तर, शोध-सहायता तथा कार्यालयी कार्यों में उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। आज AI केवल अनुवाद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह भाषा को समझने, संदर्भ के अनुसार उत्तर देने, दस्तावेज तैयार करने तथा आवाज़ को पाठ (Speech-to-Text) और पाठ को आवाज़ (Text-to-Speech) में परिवर्तित करने में भी सक्षम हो गया है।

कृषि, स्वास्थ्य, न्याय, शिक्षा, बैंकिंग तथा प्रशासन जैसे क्षेत्रों में हिंदी आधारित AI अनुप्रयोगों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। किसान अपनी स्थानीय भाषा में कृषि संबंधी सलाह प्राप्त कर रहे हैं। विद्यार्थी कठिन विषयों को हिंदी में समझ पा रहे हैं। दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है।

भविष्य में हिंदी आधारित AI भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार बनने जा रही है।

मशीन अनुवाद और भाषा प्रौद्योगिकी

मशीन अनुवाद (Machine Translation) सूचना प्रौद्योगिकी की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके माध्यम से एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में तीव्र गति से परिवर्तित किया जा सकता है। भारत में विभिन्न संस्थानों तथा तकनीकी कंपनियों ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए अनेक अनुवाद प्रणालियाँ विकसित की हैं।

हालाँकि मशीन अनुवाद की गुणवत्ता निरंतर बेहतर हो रही है, फिर भी साहित्यिक, विधिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक दस्तावेजों के लिए मानव संपादन आवश्यक है। भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing) के विकास से हिंदी मशीन अनुवाद और अधिक प्रभावी होगा।

शिक्षा और अनुसंधान में हिंदी

ऑनलाइन शिक्षा ने हिंदी भाषा को नई पहचान प्रदान की है। SWAYAM, DIKSHA, NPTEL तथा अनेक डिजिटल शिक्षण मंचों पर हिंदी माध्यम की सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। नई शिक्षा नीति 2020 ने मातृभाषा आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन तथा अन्य तकनीकी विषयों की सामग्री भी भारतीय भाषाओं में विकसित की जा रही है। विश्वविद्यालयों एवं अनुसंधान संस्थानों में हिंदी माध्यम से शोध को प्रोत्साहन मिल रहा है। डिजिटल पुस्तकालय, ई-पुस्तकें, ऑनलाइन शोध-पत्र तथा मुक्त शैक्षिक संसाधनों ने हिंदी शोधार्थियों के लिए नए अवसर प्रदान किए हैं।

व्यापार, बैंकिंग और डिजिटल अर्थव्यवस्था में हिंदी

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ई-कॉमर्स, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन बैंकिंग, बीमा, निवेश, शेयर बाजार तथा ग्राहक सेवाओं में हिंदी इंटरफेस की मांग लगातार बढ़ रही है।

आज अधिकांश बैंक अपने मोबाइल एप्लिकेशन हिंदी में उपलब्ध करा रहे हैं। UPI आधारित भुगतान, मोबाइल बैंकिंग तथा ग्राहक सहायता सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध होने से करोड़ों नए उपयोगकर्ता डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़े हैं।

डिजिटल विपणन (Digital Marketing) में भी हिंदी की भूमिका तेजी से बढ़ रही है। अनेक कंपनियाँ अब अपने विज्ञापन, वेबसाइट और सोशल मीडिया अभियान हिंदी में तैयार कर रही हैं ताकि वे अधिक से अधिक भारतीय उपभोक्ताओं तक पहुँच सकें।

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

यद्यपि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ आज भी विद्यमान हैं।

1. गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री का अभाव - यद्यपि हिंदी में सामग्री की मात्रा बढ़ी है, किंतु उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी, वैज्ञानिक, विधिक, चिकित्सा तथा शोधपरक सामग्री अभी भी अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। अनेक क्षेत्रों में अंग्रेज़ी सामग्री पर निर्भरता बनी हुई है।
2. तकनीकी शब्दावली की जटिलता - कई बार हिंदी की तकनीकी शब्दावली अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ होने के कारण सामान्य उपयोगकर्ताओं को कठिन प्रतीत होती है। परिणामस्वरूप लोग अंग्रेज़ी शब्दों का अधिक प्रयोग करते हैं। आवश्यक है कि सरल, व्यवहारिक एवं जनस्वीकार्य हिंदी शब्दावली विकसित की जाए।
3. डिजिटल साक्षरता का अभाव - ग्रामीण क्षेत्रों तथा वरिष्ठ नागरिकों में डिजिटल साक्षरता अभी भी सीमित है। अनेक लोग हिंदी में उपलब्ध सुविधाओं से भी अनभिज्ञ हैं। डिजिटल प्रशिक्षण का व्यापक प्रसार समय की आवश्यकता है।
4. मशीन अनुवाद की सीमाएँ - यद्यपि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद प्रणालियाँ निरंतर विकसित हो रही हैं, फिर भी मुहावरों, सांस्कृतिक संदर्भों, विधिक दस्तावेजों तथा साहित्यिक अभिव्यक्तियों के अनुवाद में अभी भी मानवीय हस्तक्षेप आवश्यक है।

5. भाषाई शुद्धता - सोशल मीडिया और त्वरित संदेशों के कारण रोमन लिपि में हिंदी लिखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इससे देवनागरी लेखन, वर्तनी और व्याकरण की शुद्धता प्रभावित होती है। डिजिटल माध्यमों पर मानक हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।
6. साइबर सुरक्षा और डिजिटल नैतिकता - सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार के साथ साइबर अपराध, फर्जी समाचार (Fake News), डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दुरुपयोग जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। हिंदी उपयोगकर्ताओं के लिए साइबर सुरक्षा संबंधी सामग्री और प्रशिक्षण भी उनकी भाषा में उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

समाधान एवं सुझाव - इन चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय प्रभावी हो सकते हैं—

1. **हिंदी में डिजिटल सामग्री का व्यापक सृजन** किया जाए, विशेषकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, विधि, इंजीनियरिंग और प्रबंधन के क्षेत्रों में।
2. **यूनिकोड आधारित हिंदी** का शत-प्रतिशत उपयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि सभी डिजिटल मंचों पर एकरूपता बनी रहे।
3. सरकारी एवं निजी संस्थानों में **हिंदी कंप्यूटिंग, इनस्क्रिप्ट कीबोर्ड, वॉइस टाइपिंग तथा AI आधारित उपकरणों** का नियमित प्रशिक्षण आयोजित किया जाए।
4. विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में **डिजिटल हिंदी साक्षरता** को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।
5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित हिंदी सॉफ्टवेयर, मशीन अनुवाद, स्पीच रिकग्निशन तथा प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing) के क्षेत्र में अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाए।
6. हिंदी में उपलब्ध सरकारी वेबसाइटों, मोबाइल एप्लिकेशनों तथा ई-सेवाओं को अधिक सरल, उपयोगकर्ता-अनुकूल तथा दिव्यांगजन के लिए भी सुलभ बनाया जाए।
7. सोशल मीडिया पर **शुद्ध, प्रभावी और उत्तरदायी हिंदी** के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए तथा डिजिटल नैतिकता के प्रति जागरूकता विकसित की जाए।

भविष्य की संभावनाएँ

हिंदी का भविष्य सूचना प्रौद्योगिकी के साथ अत्यंत उज्ज्वल दिखाई देता है। आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ब्लॉकचेन, क्वांटम कम्प्यूटिंग, ऑगमेंटेड रियलिटी तथा वर्चुअल रियलिटी जैसी उन्नत तकनीकों में भारतीय भाषाओं की भूमिका निरंतर बढ़ेगी।

भारत विश्व का सबसे बड़ा डिजिटल उपभोक्ता बाजार बनकर उभर रहा है। करोड़ों नए इंटरनेट उपयोगकर्ता भारतीय भाषाओं के माध्यम से डिजिटल दुनिया से जुड़ रहे हैं। अनुमान है कि आने वाले वर्षों में इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी, की सामग्री अंग्रेज़ी की तुलना में कहीं अधिक तेजी से बढ़ेगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित संवाद प्रणालियाँ, वर्चुअल सहायक, स्मार्ट उपकरण, स्वचालित ग्राहक सेवा, डिजिटल शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाएँ हिंदी में अधिक प्रभावी रूप से उपलब्ध होंगी। इससे भाषा और तकनीक के बीच की दूरी लगभग समाप्त हो जाएगी।

राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन में भी सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण होगी। ई-ऑफिस, डिजिटल अभिलेख, ऑनलाइन प्रशिक्षण, मशीन अनुवाद तथा AI आधारित कार्यालयी सहायता के माध्यम से हिंदी में प्रशासनिक कार्य और अधिक सरल, तीव्र तथा पारदर्शी होंगे।

निष्कर्ष

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा का संबंध आज केवल तकनीकी सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक और आर्थिक विकास का आधार बन चुका है। हिंदी ने डिजिटल युग की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए स्वयं को आधुनिक तकनीकों के अनुरूप ढाल लिया है। यूनिकोड, इंटरनेट, मोबाइल प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद तथा डिजिटल प्रशासन ने हिंदी को नई शक्ति और नई पहचान प्रदान की है। आज आवश्यकता इस बात की है कि तकनीकी विकास के साथ-साथ हिंदी में गुणवत्तापूर्ण ज्ञान-सामग्री का सृजन हो, डिजिटल साक्षरता का विस्तार किया जाए तथा भारतीय भाषाओं को अनुसंधान और नवाचार का माध्यम बनाया जाए। जब तकनीक और भाषा का समन्वय होगा, तभी "डिजिटल भारत" का सपना वास्तविक अर्थों में साकार होगा।

हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, लोकतांत्रिक सहभागिता और राष्ट्रीय एकता की भाषा है। सूचना प्रौद्योगिकी के साथ इसका समन्वय भारत को ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर और समावेशी राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आने वाला युग **"डिजिटल हिंदी"** का युग होगा, जहाँ तकनीक और भाषा मिलकर विकास के नए आयाम स्थापित करेंगी।

अहम

कोटा शहर के प्रतिष्ठित इंस्टिट्यूट अंशल क्लासेस का कम्पाउंड, छात्र-छात्राओं की गहमागहमी से बेजार था। जे.ई.ई. एडवांस्ड का परिणाम आया था। ढाई लाख अभ्यर्थियों में करीब चालीस हजार के हाथ सफलता लगी थी। कुछ चेहरे प्रफ्फुलित थे तो कुछ मायूस। ऐसे माहौल में दो दोस्त अनिकेश चेतन और हर्षित आनंद कैंटीन के टेबुल पर डटे थे।

हर्षित- "कांग्रेट्स ड्यूड नाउ यू आर क्वालिफाइड।"

अनिकेश- "हाँ यार लेकिन आज तू बिलकुल बुझा हुआ क्यों है, होता है न यार सारे के रिजल्ट तो एक बार में ही नहीं आ जाते न। यू शुड ट्रस्ट योरसेल्फ। तुम अगली बार क्रेक कर रहे हो।"

हर्षित- "नहीं ऐसा तो नहीं है, आज तुम्हारे पसंद का बड़ा पाव मंगाते हैं, और साथ में क्या लेगा बोल।" अनिकेश- "तुम हॉस्टल में हाउस कीपर से क्यों उलझ रहे थे, ऐसा करते तो तुम्हें नहीं देखा कभी।" हर्षित दांत भींजते हुए- "उलझे नहीं तो सर पर बैठा लें उसको। काम तो आता नहीं उसको।"

अनिकेश चुप ही रहा। हर्षित इतनी ऊँची आवाज में उससे भी बात नहीं किया था। वह समझ रहा था कि उसके दोस्त को भीतर कुछ चल रहा है। हर्षित हॉस्टल की टैरेस पर था कि तभी उसकी माँ का फोन आया।

"क्या हुआ हर्षित तुम अनिकेश से उखड़कर बातें कर रहे थे। क्या हुआ बेटा तुम रिजल्ट के बारे में तो नहीं सोच रहा है, इस बार नहीं हुआ तो अगले बार हो जाएगा।"

"नहीं तो मम्मी, अनिकेश को यूं ही लगता है। तुम टेन्शन मत लो, मुझे कोई दिक्कत नहीं है। पापा ठीक है न, खाना खाए? उनका केयर करना है तुमको।"

"तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे मैं हूँ ही नहीं। पापा के लिए केयर मैं नहीं करुँगी तो कौन लेगा। मुझे टेन्शन नहीं लेने कह रहे हो, मुझे तो तुम टेन्शन में लग रहे हो।"





श्री पुरुषोत्तम दास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी
ग्रेड – II

"नहीं मम्मी मैं अब और टेन्शन नहीं दूंगा, तुम सब को। कल से सब ठीक हो जाएगा।"

मम्मी ने उसकी आवाज में खलीश को महसूस किया। फिर भी वह बोली- "तुम्हारी बातें न, कुछ समझ में नहीं आती है। माना कि पापा की तबीयत ठीक नहीं रहती, कुछ खर्च भी बढ़ा है लेकिन हमारे साथ हमारा बेटा है, न तो कल भी ठीक था और आज भी ठीक है।"

मम्मी ने हॉस्टल फोन किया, अपने पति को कुछ समझाया और बैग लेकर स्टेशन के लिए निकल गई। हर्षित हॉस्टल के कमरे में सोने जा ही रहा था कि दरवाजे पर दस्तक हुई। हर्षित बाहर निकला, तो सामने वार्डन और हाउस कीपर बॉय राजू था। इससे पहले की वह कुछ बोलता कि वार्डन ने कहा- "राजू ने बताया कि सुबह उससे कुछ गलती हुई है इसलिए वह माफी मांगने आया है।"

हर्षित- "नहीं सर, गलती राजू से नहीं मुझसे हुई है। मैंने ही आपा खो दिया था और मुझे खेद है कि मैंने इसे भला-बुरा कहा। लेकिन आगे से ऐसा नहीं होगा सर अब आज के बाद से कभी गलती नहीं होगा।" वार्डन- "लेकिन इसने तो खुद डायरेक्टर सर से कहा कि गलती सरासर इसकी है। तो डायरेक्टर साहब ने इसे गलती की सजा भी सुना दी है। आज राजू तुम्हारे कमरे में सोएगा। तब न बच्चू को पता चलेगा कि प्रेशर क्या चीज होती है।"

हर्षित- "लेकिन सर.....।"

वार्डन- "लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, तुम तो जानते हो न डायरेक्टर सर को। जो कह दिया सो कह दिया।"

राजू ने दरवाजा बंद किया और अपने साथ लाए बेडिंग को फर्श पर बिछाकर सो गया। सो गया नहीं सिर्फ सोने का नाटक किया और पूरी रात आँखों में ही काटी। वह महसूस करता रहा कि हर्षित भी रात भर बैचेन रहा। एक पल के लिए भी नहीं सोया। आखिर क्या बैचेनी थी उसकी।

थोड़ी देर के लिए आँख लगने के बाद सुबह तड़के राजू जगा तो हर्षित को सोते हुए पाया। वह दरवाजा सटाकर बाहर टॉयलेट के लिए चला गया। जब वापस आया तो हर्षित कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर चुका था। उसने दरवाजा खटखटाया तो कोई आवाज नहीं आई।

उसने जोर से खटखटाया तो भी कुछ नहीं। वह भागा खिड़की की तरफ, खिड़की भी बंद थी। वह रोने लगा और रोते-रोते ही बोला- "दरवाजा खोल दो मेरे भाई, नहीं तो मेरी नौकरी चली जाएगी। भगवान के लिए दरवाजा खोल दो।"

"राजू तुम जाओ यहाँ से, अब मुझे जगा नहीं पाओगे। मैं जगने के लायक हूँ भी नहीं।"

राजू सन्न। उसके पैरों तले जैसे जमीन निकल गई। वह बेतहाशा भागा। वार्डन के कमरे तक गया और रोते हुए वार्डन से कहा-"सर जल्दी चलिए, हर्षित अपनी ईहलीला खत्म करने पर तुला है।"

वार्डन, गार्ड और राजू को लेकर हर्षित के कमरे की ओर भागा। सभी मिलकर दरवाजे को जोर-जोर से धक्का देते रहे, दरवाजे से कंधा भी टकराया पर दरवाजा टस-से-मस नहीं हुआ। लगा जैसे कोई भारी चीज जैसे अलमारी, दरवाजे के पीछे रख दी गई हो। वार्डन ने गार्ड की तरफ देखते हुए बोला- "जल्दी करो, खिड़की तोड़ दो।" गार्ड ने लोहे के एंगल से खिड़की पर दे मारा और खिड़की का एक हिस्सा टूटा। इस बार अंदर से गाढ़ी आवाज आई- "सर छोड़ दो यह सब..... जब तक आप मुझ तक पहुँचोगे मैं बहुत दूर जा चूका हूँगा।"

"वार्डन सर आप लोग छोड़ दीजिए, मैं जानता हूँ वह दरवाजा नहीं खोलेगा।" यह आवाज एक महिला की थी, हर्षित की माँ का।

हर्षित की माँ खिड़की में बने दरार के पास आई। हर्षित पंखे के नीचे झूलती रस्सी से हरकत कर रहा था। माँ की बेटे से आँखें मिली। हर्षित नजरें नीचे करते हुए ही कहा- "मम्मी तुम जाओ यहाँ से, अब बहुत देर हो चुकी है मैं अब और तुम लोगों पर बोझ नहीं बनना चाहता हूँ।"

"जाओ यहाँ से..... क्यों?? जो माँ जन्म दे सकती है वह तुम्हें जाते हुए भी देख सकती है। तुम डिगा दो अभी इतनी असहाय नहीं हुई तुम्हारी माँ। और क्या कहा तुमने बोझ। तुम दिखाना चाहते हो कि तुम अयोग्य हो और इसकी सजा तुम अपने आप को देने जा रहे हो। नहीं तुम अयोग्य नहीं अहंकारी हो तुम ..... सुना तुमसे किसी ने न कहा होगा मैं कह देती हूँ अहंकारी हो तुम। और अपने अहंकार में इतने अंधे हो चुके हो कि इसके सामने तुम्हारा जीवन छोटा पड़ गया है।"

"मम्मी....." माँ की बात से भीतर तक दहल गया वह।

"तुम दिखाना चाहते हो कि तुम्हें मलाल है अपने माता-पिता की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरने का..... नहीं ये सच नहीं है, सच यह है कि तुमने अहंकार के सामने घुटने टेक दिए हैं। तुम हेल्पर का काम करो तो हम तुमको टिफीन तैयार करके देंगे, तुम रेहड़ी डाल लो हम तुम्हारा ठेला साफ कर लेंगे। तुम कुछ भी करो हमें तो कोई दिक्कत नहीं है। दिक्कत तुझमें है कि इंजीनियर नहीं बन पाओगे तो समाप्त कर लोगे खुद को। माता-पिता की अपेक्षा तो केवल यही रहती है कि उसकी संतान जिम्मेदार बने और यह कतई जरूरी नहीं कि संतान आईआईटी कॉम्पीट करेगा तभी जिम्मेदार होगा और जिम्मेदार तुम क्या ही बनोगे, तुम तो मतलबी निकले।"

"तुम क्या बोले जा रही हो माँ, मैं तो मेरे शरीर से भी मतलब नहीं रखना चाहता।"

"मैंने तो सिर्फ मतलबी कहा पर तुमने तो सिद्ध कर दिया। ये शरीर तुम्हारा कैसे हुआ, परमात्मा ने जीवन दिया, माँ-बाप ने जन्म दिया, परिवार ने लाड़-प्यार से रखा, समाज में पला और इस देश के संसाधनों ने तुझे जवान किया तो फिर ये शरीर केवल तुम्हारा कैसे हुआ?"

कुछ देर मौन रहकर फिर "कैसी बेईमानों जैसी भाषा बोल रहे हो कि ये शरीर तुम्हारा है। तुम क्या करते हो इसपर किसी का नियंत्रण नहीं है, क्योंकि तुम्हारा आचरण तुम्हारी स्वतंत्रता होगी लेकिन, जीवन परमात्मा का दिया है और वही इसका मालिक है। शरीर तो माता-पिता का होता है, नाते-रिश्तेदारों का होता है, दोस्तों का होता है, समाज का होता है और इन सबसे बढ़कर इस देश का है जिसने अपनी माटी में तुम्हें पाला-पोसा बड़ा किया। किसी को खुद के शरीर को नुकसान पहुँचाने का कोई हक उसे नहीं बनता है। इसलिए विधान भी इसकी इजाजत नहीं देता और चोरी, डकैती, हत्या जितना संगीन जुर्म है अपने शरीर को खुद नुकसान पहुँचाना।"

"रिजल्ट के बाद तो पापा भी मुझसे बुझ गए होंगे, मन-ही-मन फटकार रहे होंगे मुझे।"

"पापा डांट दे या फटकार दे तो तुम्हारे अहम को चोट लग जाती है, और जब पापा प्यार करते हैं तो क्या तुम आसमान पर ले जाते हो उन्हें। तुम्हारा अहम तुम्हारे माता-पिता से भी बड़ा हो गया है कि तुम बर्दाश्त नहीं कर सकते।"



हर्षित भरभराकर रह गया। ग्लानि में उसने नजरें नीची कर ली मानो चोरी करते हुए पकड़ लिया गया हो। लेकिन उसे वह ज्ञान मिला था जो इस घड़ी न मिलता तो अनर्थ हो जाता। वह दौड़ा, वजन हटा दरवाजा खोला, और अपने गुरु, अपने माता के चरणों में गिर पड़ा। माँ की नेत्रों से भी ममता का बांध टूट कर बहने लगा था। उसने अपने बच्चे को एक ही जीवन में दूसरी बार जन्म दिया था।

मेरी पहली विदेश यात्रा



श्री विनय प्रधान
वरिष्ठ लेखाकार

यह मेरी पहली विदेश यात्रा की यात्रा वृतांत है, जिसे मैंने अपने दोस्तों के साथ पूरी की। दोस्तों के साथ विदेश यात्रा के मजेदार पल अक्सर यादगार होते हैं क्योंकि दोस्तों के साथ यात्रा करने से हर अनुभव में मज़ा और खुशी जुड़ जाती है। पहली बार विदेश जाने का विचार मेरे मन में उत्साह और थोड़ा डर लेकर आया था। पासपोर्ट बनवाने से लेकर टिकट बुक करने तक की प्रक्रिया में बहुत कुछ नया सीखने को मिला। एयरपोर्ट पर दोस्तों के साथ पहली बार फ्लाइट पकड़ने का अनुभव अलग ही था। बोर्डिंग पास, इमिग्रेशन लाइन और अपनी फ्लाइट को खोजने का आनंद भी न्यारा रहा। जैसे ही हमारी फ्लाइट टेक ऑफ हुई, एक नई दुनिया की खोज की शुरुआत हो गई। खिड़की से बादलों को देखकर जहां रोमांच था, वहीं बाहर की संस्कृति और माहौल देखने की उत्सुकता भी थी।



फुकेत: नई दुनिया में पहला कदम

सर्दियों की ठिठुरन से बचकर जब हम फुकेत इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर कदम रखे, तो हवा में नमकीन-सी खुशबू और हल्की सी धूप ने जैसे हमारे मन का हर बोझ उतार दिया। मेरी यात्रा की शुरुआत दक्षिणी थाईलैंड के फुकेट शहर से हुई, जो नीले समंदर, स्वच्छ तट और रंगीन बाजारों के लिए प्रसिद्ध है। टैक्सी से पटोंग बीच की ओर जाते हुए रास्ते में हरे-भरे पेड़, छोटे रंग-बिरंगे कैफे और सड़क किनारे लगीं थाई फलों की दुकानें मन मोह लेती हैं। होटल में सामान रखने के बाद, सबसे पहले पटोंग-बीच जाने का मन बनाया। यहां का नीला पानी और सफेद रेत आपको घंटों बैठे रहने पर मजबूर कर देता है। यहाँ का माहौल बहुत जीवंत था—तालियों की गूंज, समुद्र तट की विविध गतिविधियाँ और खाने-पीने की दुकानों की रंगीन कतार यात्रा में मिठास घोल देती है। संध्या होते ही बांग्ला रोड की रौनक़ देखने लायक होती है। रात की रोशनी, संगीत, बाजार की भीड़ और समुद्री खाने की खुशबू माहौल को और भी दिलचस्प बना देती है। यहाँ का नाइटलाइफ थाईलैंड के मस्त माहौल की झलक दिखाता है।

फी-फी आइलैंड: सपनों का द्वीप

अगली सुबह हमनें फी-फी आइलैंड के लिए बोट टूर बुक किया। समुद्र की लहरों के बीच, बोट की हल्की थरथराहट के साथ, एक घंटे बाद हम माया-बे की ओर पहुंचे। माया-बे का नजारा जैसे किसी पेंटिंग से बाहर आया हो—हरा-नीला पानी, ऊंची-ऊंची हरी चट्टानें, और साफ आसमान। यहां आकर हमारे सफर की सारी थकान गायब हो गई। तैराकी, धूप सेंकना और सफेद रेत पर लेटकर समुद्री हवा का आनंद लेना, सबकुछ बेहद सुकून देने वाला था।

टूर की अगली मंज़िल थी पीले लगून—जहां बोट को बीच समुद्र में रोक दिया गया। यहां साफ़ पानी में तैरने का मौका मिला। जिनको तैरना नहीं आता वे भी लाइफ जैकेट पहनकर इस पानी में जा सकते थे। मैंने भी लाइफ जैकेट पहनकर साफ़ पानी में तैरने का आनंद लिया। इसके बाद 'मंकी केव' देखा, जहां चट्टानों पर कूदते-फांदते बंदर अपनी शरारतों से हंसा देते हैं।

फिर पहुंचे खाई नक आइलैंड—जहां बीच किनारे बने छोटे-छोटे कैफे में बैठकर समुद्र के करीब चाय-कॉफी पीना, अपने आप में खास अनुभव रहा। यहीं पर खाने-पीने के भी कई ऑप्शन्स थे—कहीं समुद्री व्यंजन, तो कहीं भारतीय मसालों की खुशबू भी मिल गई।

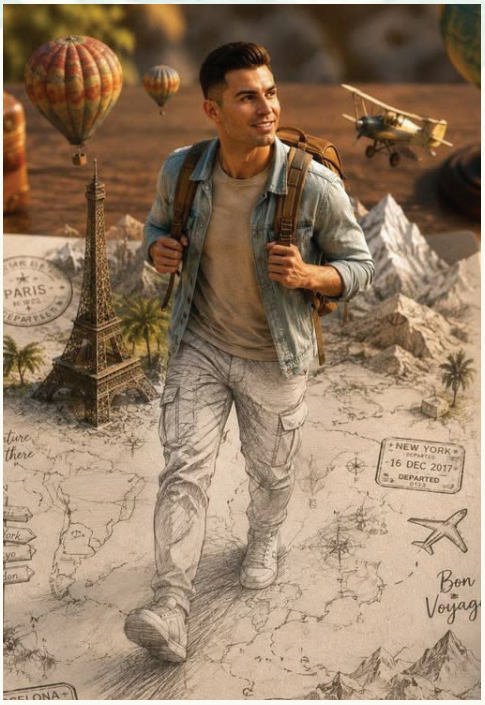
शाम में फी-फी आइलैंड की स्थानीय गलियों में, बाजार और कैफे की सैर करते हुए हम वापस फुकेत पहुचें। लोगों से मिलना, संगीत और डांस पार्टी—सबकुछ नई ऊर्जा से भर देने वाला रहा।

फुकेट से पटाया की ओर

अगले दिन हम सभी दोस्त फुकेट से पटाया के लिए निकले। फुकेट से पटाया पहुंचना एक लंबा सफर था—करीब **975** किमी की दूरी, जो बस, फेरी या फ्लाइट से तय की जा सकती थी। हमने ये यात्रा फ्लाइट से तय की।

एयरपोर्ट से पटाया के होटल तक का सफ़र हमने सड़क मार्ग से तक़रीबन 2 घंटे में पूरा किया। रास्ते में कैफे पर हल्का स्नैक, थाई चाय

और थोड़ी बहुत बातचीत ने सफर को आनंदमय बना दिया। पटाया पहुँचते ही वो समुद्र का किनारा, होटल की बालकनी से दिखता सूरज—शहर का ऊर्जा से भरपूर वातावरण मानो हमारा स्वागत कर रहा हो।



पटाया का समुद्र, बाजार और संस्कृति

पटाया में पहुँचते ही समुद्री जीवन का अनुभव हुआ। यहाँ के प्रमुख स्थानों में—पटाया बीच, **बिग बुद्धा हिल (Big Buddha Hill)** और रंग-बिरंगी **वाकिंग स्ट्रीट (Walking Street)** शामिल है। हर शाम सैर सपाटे के लिए ट्रॉपिकल समुद्र तट, कैबरे शो और पटाया की रात्रि संस्कृति देखना यात्रा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था।

अगली सुबह हम सभी दोस्त **कोरल (Coral)** आइलैंड के लिए निकले। जहाँ हमने कई वाटर एक्टिविटीज भी किया। हमने पैरासेलिंग करते हुए समंदर के उपर से पूरा पट्टाया शहर देखा तो वहीँ सी-वाक करते हुए समुद्र के अन्दर **कोरल (Coral)** और विभिन्न प्रकार की मछलियों को देखना काफी रोमांचक रहा। इसके बाद हमने वहां के **बनाना राइड (Banana Ride)** और जेट-स्की का भी आनंद लिया। इन सब गतिविधियों को करते हुए शाम को हम अपने होटल पहुंचे। थोड़ा आराम करने के बाद हम वहां की रात्रि संस्कृति देखने निकल पड़े।

अगले दिन हमें **फ्लोटिंग मार्किट (Floating Market)** घूमना बहुत पसंद आया—यहाँ लकड़ी की नावों में बैठकर स्थानीय हस्तशिल्प, रंगीन फलों और गिफ्ट्स की खरीददारी की। **अंडरवाटर वर्ल्ड पटाया (Underwater World Pattaya)** के अन्दर **100** मीटर लम्बी सुरंग में चलते हुए समुद्री जीवों का अद्भूत नजारा देखने को मिला।

पटाया के बाजारों में घूमते हुए खाने की अनुकरणीय विविधता और सस्ते स्मृति चिह्नों की खरीददारी का आनंद लिया। शाम को **सैंक्चुअरी ऑफ़ ट्रूथ (Sanctuary of Truth)** नामक लकड़ी से बनी विशाल शिल्पकला देखकर चकित रह गया।

वापसी की यात्रा—स्मृतियों के साथ

पटाया से वापसी का रास्ता भी सुखद अनुभव लेकर आया। विमान में बैठते हुए वे तमाम दृश्य—फुकेट के समुद्र तट, पटाया के रंगीन बाजार, मंदिरों की शांति और लोगों की मुस्कान—अब स्मृतियों का हिस्सा बन चुके थे। थाईलैंड की सर्दियों में वहां घूमना भीड़ कम होने के कारण और भी आनंददायक रहा—जैसे "बस आप और समंदर"।

ऐसे पल जहाँ दोस्त साथ हों, यात्रा का आनंद कई गुना बढ़ जाता है और ये यादें जीवन भर ताजा रहती है। पहली विदेश यात्रा का अनुभव साहसिक, सुखद और कभी-कभी चुनौतीपूर्ण भी होता है, लेकिन दोस्तों के साथ होने पर हर कठिनाई आसान लगती है और हर खुशी दोगुनी हो जाती है।

ग्रुप के साथ बिताए गए पल, चाहे सेल्फी हो या कोई मजेदार घटना, उन सभी ने इस यात्रा को यादगार बना दिया। हर शाम होटल लौटकर हंसी-मजाक में दिन की घटनाओं का चर्चा करना। विदेशी भाषा और संस्कृति के कारण कभी-कभी भाषा न समझने या गलतफहमी के कारण हास्यप्रद परिस्थितियाँ भी बनी।

इस यात्रा के हर मोड़ ने एक नई कहानी दी—सपनों से भरी, रोमांच से भरी और सुकून से भरी। यह यात्रा, यादों की डायरी में सबसे अनमोल पन्नों की तरह सुरक्षित रहेगी।



वैंटीलेटर: एक महा-यात्रा का पूर्णविराम



श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कमरे के भीतर की हवा में एक अजीब सी खामोशी तैर रही थी। यह वह खामोशी नहीं थी जो शून्य से पैदा होती है, बल्कि यह वह भारीपन था जो कई अनकहे शब्दों, सिसकियों और स्मृतियों के बोझ से दबा होता है।

दीवार के कोने में लगा शून्य वाट का मद्धम पीला बल्ब जल रहा था। उसकी मटमैली रोशनी पूरे कमरे में इस तरह फैल रही थी मानो समय खुद सुस्ता रहा हो। ठीक सामने की दीवार पर बत्तीस इंच का एक एल.ई.डी. टेलीविजन टंगा था। उसका काला, चमकदार स्क्रीन इस समय बिल्कुल खामोश और बेजान था। कभी इस स्क्रीन पर देश-दुनिया की खबरें चलती थीं, कभी क्रिकेट मैच के चौकों-छक्कों पर पूरा घर गूँज उठता था, लेकिन आज वह एक मृत आँख की तरह कमरे की बेबसी को ताक रहा था।

दायीं तरफ की खिड़की के पल्ले खुले हुए थे, जहाँ लोहा पीटकर बनाया गया पुराना खुरदुरा डार्क-ग्रीन रंग का एक भारी-भरकम कूलर फिट था। कूलर की मोटर से एक धीमी, लगातार सरसराहट की आवाज आ रही थी- 'घिररर-घिररर...'। वह खिड़की के बाहर की सूखी हवा को अपने भीतर की घास से छानकर कमरे में ठंडी फुहारें फेंक रहा था। हवा में भीगे हुए खस की सोंधी खुशबू थी, जो कमरे में मौजूद दवाइयों की तीखी गंध को दबाने की नाकाम कोशिश कर रही थी।

बाईं तरफ की दीवार से सटा हुआ सागवान की लकड़ी का एक पुराना दीवान था। दीवान पर सफेद सूती चादर बिछी हुई थी, जिस पर एक भी शिकन नहीं थी। उस बेदाग चादर पर अस्सी वर्ष के बुजुर्ग विश्वनाथ जी शांत लेटे हुए थे। उनकी देह ढलती उम्र और बीमारी की वजह से सूखकर काठ हो चुकी थी। चेहरे पर झुर्रियों का एक पूरा जाल था, जो उनके जीवन के लंबे अनुभवों, संघर्षों, जीती गई बाजियों और हारी गई लड़ाइयों का गवाह था। उनकी आँखें मूंदी हुई थीं, जैसे वे अपने भीतर की किसी अनंत दुनिया में सफर कर रहे हों।

दीवान के सिरहाने, ठीक कोने में, लोहे का एक बड़ा, भारी-भरकम ऑक्सीज़न सिलेंडर खड़ा था। हरे और काले रंग का वह सिलेंडर किसी यमदूत या रक्षक की तरह सिरहाने डटा हुआ था। सिलेंडर के माथे पर लगे प्रेशर गॉज के ठीक नीचे शीशे की एक पारदर्शक छोटी सी ट्यूब लगी थी, जिसमें आधा पानी भरा था। उस पानी के भीतर से हर सेकंड नीली-सफेद बूँदों की तरह अनगिनत बुलबुले उठ रहे थे।

सिलेंडर के वाल्व से निकलकर एक पतली, पारदर्शी प्लास्टिक की ट्यूब विश्वनाथ जी के चेहरे पर बंधे इलास्टिक वाले मास्क तक जा रही थी। वह मास्क उनके मुंह और नाक को पूरी तरह ढके हुए था। जब-जब सिलेंडर से शुद्ध प्राणवायु छूटती, मास्क के भीतर भाप की एक हल्की परत जम जाती और फिर उनके फेफड़ों के उठने-सिकड़ने के साथ वह साफ हो जाती। विश्वनाथ जी की छाती धीरे-धीरे ऊपर-नीचे हो रही थी। यह उनकी अपनी ताकत नहीं थी; यह तो उस लोहे के सिलेंडर के भीतर कैद कृत्रिम हवा थी, जो उनके बूढ़े और शिथिल हो चुके फेफड़ों को जबरन फुला रही थी। इसी सहारे वे अपनी सामान्य साँसें खींच पा रहे थे।

कमरे का भारी सा दरवाजा एक हल्के चरमराहट के साथ खुला। दहलीज पर राघव ने कदम रखा। चालीस साल का राघव, जिसके चेहरे पर वक्त से पहले ही चिंताओं की गहरी लकीरें उभर आई थीं। उसकी आँखें अधखुली, नींद की कमी से लाल और सूजी हुई थीं। माथे पर पसीने की बारीक बूँदें चमक रही थीं। उसने अपने सैंडल दरवाजे के बाहर ही उतार दिए थे ताकि बूढ़े पिता की नींद में खलल न पड़े।

राघव दबे पांव दीवान के पास आया। उसने अपनी काँपती हुई हथेलियों को फैलाया और धीरे से विश्वनाथ जी के ठंडे, झुर्रीदार माथे पर रख दिया। स्पर्श में थर्मामीटर जैसी सटीकता तो नहीं थी, पर एक बेटे का अगाध प्रेम और व्याकुलता जरूर थी। माथे की त्वचा सूखी और कुछ गर्म महसूस हुई।

जैसे ही राघव के हाथ का स्पर्श मिला, विश्वनाथ जी की पलकें धीरे से हिलीं। उन्होंने बहुत आहिस्ता से अपनी आँखें खोलीं। उनकी आँखों का तेज धुंधला चुका था, मोतियाबिंद के हल्के नीले घेरे साफ दिखाई दे रहे थे, मगर उन आँखों में जो गहराई और ठहराव था, वह किसी गहरे महासागर जैसा था।

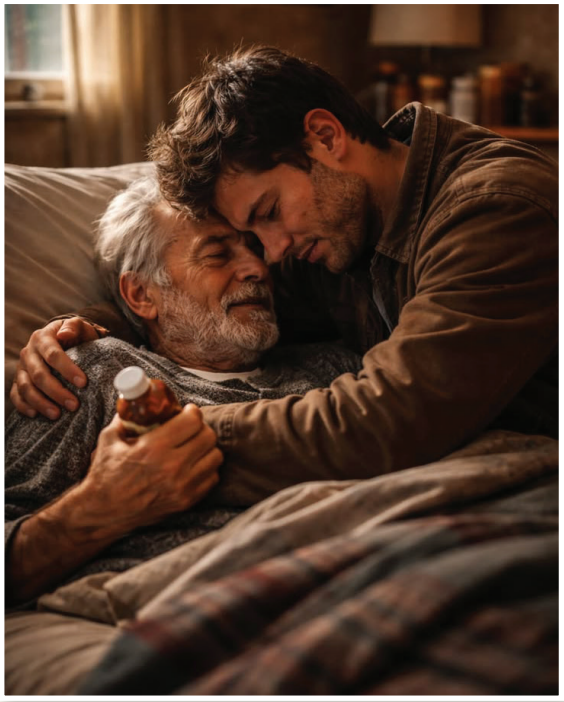
राघव ने अपने चेहरे पर जबरदस्ती एक झूठी मुस्कान तैरानी चाही, अपनी आवाज को जितना हो सके सामान्य और हौसले से भरा बनाए रखते हुए बोला, "पिताजी... ओ पिताजी, थोड़ा बैठ जाइए। उठिए, मैं आपका यह सूती कुर्ता बदल देता हूँ। आज स्पंज भी नहीं किया न सुबह से। नया साफ कुर्ता पहन लीजिए... हमें अस्पताल चलना है। डॉक्टर सिन्हा से बात हो गई है, उन्होंने आई.सी.यू. में बेड का इंतजाम करवा दिया है।"

विश्वनाथ जी ने राघव के चेहरे को देखा। वे अपने बेटे की आँखों के पीछे छिपे डर को साफ पढ़ सकते थे। उन्होंने मास्क के भीतर ही सूखी हुई जीभ को होठों पर फेरा। उनके होठों के कोनों पर एक बेहद धीमी, रहस्यमयी और तसल्लीबख्श मुस्कान उभर आई। उन्होंने हाथ के इशारे से मास्क को थोड़ा नीचे खिसकाने का संकेत किया। राघव ने झुककर मास्क को उनकी ठुड्डी तक सरका दिया।

विश्वनाथ जी की आवाज में घरघराहट थी, मानो सूखी पत्तियों पर कोई चल रहा हो, पर शब्द बिल्कुल साफ थे। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "अस्पताल?... फिर से? इस बार एम्बुलेंस बुलाई होगी तूने? क्योंकि तेरी वो सफेद वाली मारुति गाड़ी तो मुझे पिछली बार शहर के उस बड़े अस्पताल में पंद्रह दिन भर्ती कराने में ही बिक गई थी ना?"

राघव का दिल जैसे किसी ने जोर से भींच दिया। उसने नजरें चुरा लीं। वह दीवान के किनारे पर बैठ गया और पिता के ठंडे हाथों को अपने दोनों हाथों के बीच भींच लिया। उसने हकबकाते हुए कहा, "अरे पिताजी! आप भी न जाने क्या-क्या सोचते रहते हैं। इस समय इन बातों का क्या तुक है? वो गाड़ी... वो तो पुरानी हो गई थी। आए दिन रास्ते में बंद हो जाती थी, उसका क्लच प्लेट खराब था, गियर फंसता था। बहुत तंग

कर रही थी वह मुझे। और आपसे किसने कह दिया कि आपकी बीमारी की वजह से बिकी? आप बेकार की बातें मत सोचा कीजिए। अब इस बार आप ठीक होकर घर आ जाओ, फिर देखना... इस दीवाली पर हम सीधे शोरूम से चमचमाती हुई नई गाड़ी उठाएंगे। निशा और सूरज भी तो बड़े हो रहे हैं, छोटी गाड़ी में अब कहाँ पूरा आता है परिवार।"



विश्वनाथ जी ने एक गहरी सांस ली। मास्क हटा होने के कारण हवा की कमी उन्हें महसूस हुई, पर उनके चेहरे का हौसला कम नहीं हुआ। वे बोले, "चल छोड़... बहाने मत बना। तू मुझसे झूठ नहीं बोल सकता राघव। मैं तेरा बाप हूँ, तेरी रग-रग से वाकिफ हूँ। तू नई गाड़ी लेगा... हां? और निशा को मेडिकल कॉलेज की भारी-भरकम फीस भरकर डॉक्टर भी बनाएगा? और सूरज पिछले दो साल से जिस स्कूटी के लिए जिद कर रहा है, उसे वो स्कूटी भी दिला देगा? और... और इस घर का जो होम लोन बाकी है, उसकी किस्तें भी भरेगा? कहाँ से आएगा इतना पैसा, बेटा?"

राघव ने पिता की उँगलियों को सहलाते हुए कहा, "सब हो जाएगा पिताजी। आप बस मुझ पर भरोसा रखिए। ऊपर वाले ने सब रास्ते बनाए हैं। आप इन सब दुनियादारी की चिंताओं को छोड़िए और चुपचाप बैठ जाइए। मैं पहले आपका कुर्ता बदल देता हूँ। मैंने अपने दोस्त सुरेश की बड़ी वाली कार मंगवाई है। वह ठीक दस बजे हमारे घर के बाहर आकर खड़ी हो जाएगी। शहर के सबसे बड़े कार्डियोलॉजिस्ट और पल्मोनोलॉजिस्ट हमारा इंतजार कर रहे हैं।"

विश्वनाथ जी का चेहरा अचानक गंभीर हो गया। उन्होंने अपनी गर्दन को धीरे से तकिए पर दाईं और बाईं तरफ हिलाया। "नहीं राघव। मुझे किसी अस्पताल नहीं जाना है। नहीं जाना है मुझे उस सफेद संगमरमर की बनी बड़ी सी इमारत में, जहाँ सिर्फ मशीनों के रोबोटिक बीप की आवाजें आती हैं। अगर मुझे ठीक होना होगा, मेरी साँसों की डोर में अभी कुछ और गांठें बाकी होंगी, तो मैं इसी दीवान पर, इसी कूलर की हवा में ठीक हो जाऊंगा।"

राघव का सब्र का बांध जैसे टूटने लगा। वह झुंझलाया, उसकी आवाज में लाचारी और थोड़े गुस्से का मिश्रण था, "क्या बाऊजी! आप भी हर बार बच्चों की तरह जिद पकड़ कर बैठ जाते हो। पिछली बार भी जब छाती में दर्द हुआ था, तब भी आप ऐसे ही अड़ गए थे। तब अगर मैं जबरदस्ती आपको लेकर न भागता, तो क्या होता? मैं कह रहा हूँ न कि मेरे पास पैसे हैं। ऑफिस से मेडिकल क्लेम का भी कुछ हिस्सा मिल जाएगा, कुछ दोस्तों से बात की है। सब इंतजाम ठीक है। आप बस तैयार हो जाइए, जिद मत कीजिए।"

विश्वनाथ जी ने राघव की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। कमरा एक बार फिर उसी सन्नाटे में डूब गया, जिसमें सिर्फ कूलर की 'घिररर' और ऑक्सीजन सिलेंडर के पानी की आवाज सुनाई दे रही थी। वे कम से कम दो मिनट तक एकदम शांत, निश्चल लेटे रहे। ऐसा लगा मानो वे अपने भीतर संचित बची-कुची ऊर्जा को समेट रहे हों।

फिर, अचानक उन्होंने अपनी दोनों कुहनियों को दीवान पर टिकाया। उनके बूढ़े हाथों की नसें नीली होकर उभर आईं। राघव ने तुरंत उन्हें सहारा देना चाहा, पर विश्वनाथ जी ने अपनी कमजोर हथेली उठाकर उसे रोक दिया। उन्होंने अपने आत्मबल के सहारे अपनी कांपती हुई देह को ऊपर उठाया और दीवान के सिरहाने की लकड़ी से पीठ टिकाकर बैठ गए।

उन्होंने गहरी, सूखी साँस ली और राघव की आँखों में सीधे झांकते हुए बहुत ही शांत, पर बेहद वजनी आवाज में कहा, "देख बेटा राघव... बात पैसों की नहीं है। मुझे पता है, तू मेरा बेटा है। तू अपनी चमड़ी उधेड़ कर भी मेरे इलाज के लिए बेच देगा, तू कर्ज ले लेगा, जमीन गिरवी रख देगा, रात-दिन एक करके सब मैनेज कर लेगा। मुझे तेरी क्षमता और तेरे इस श्रवण कुमार जैसे प्रेम पर कोई संदेह नहीं है। किन्तु... प्रश्न ये नहीं है। प्रश्न बहुत बड़ा है, जिसे तू अपनी इस घबराहट में देखना नहीं चाहता।"

राघव ने अचरज से देखा, "बड़ा प्रश्न? क्या प्रश्न पिताजी?"

विश्वनाथ जी ने दीवार पर टंगे बंद टी.वी. की तरफ देखा और फिर अपने चेहरे पर लगे उस ऑक्सीजन मास्क को छुआ। "प्रश्न ये है बेटा... कि क्या इस आधुनिक दुनिया में, इस धरती पर आने वाले हर इंसान की विदाई अंत में अस्पताल के उस ठंडे आई.सी.यू. के बिस्तर पर, मुँह में ढेर सारे पाइप ठुंसे हुए और छाती पर वैंटीलेटर की मशीन बंधे हुए होना ही जरूरी हो गया है? क्या मर्यादा से मरने का हक इंसान से छीन लिया गया है?"

राघव ने चौंककर पिता को देखा। उसने जल्दी से उनका हाथ पकड़ा, "अब... वैंटीलेटर इसमें कहाँ से आ गया पिताजी? अभी डॉक्टर ने वैंटीलेटर की बात थोड़े न की है। वे तो बस बैकअप के लिए, आपकी कंडीशन को स्टेबलाइज करने के लिए बुला रहे हैं। और वैंटीलेटर कोई हौव्वा थोड़े ही है, यह तो आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था का एक बेहतरीन अंग है, विज्ञान का चमत्कार है। तो इसमें इतनी नकारात्मकता क्यों?"

"हाँ बेटा..." विश्वनाथ जी ने हामी भरी, उनकी आँखों में एक दार्शनिक चमक थी, "वो तो है। विज्ञान का चमत्कार तो है ही। और मैं विज्ञान का विरोधी नहीं हूँ। बहुत से मामलों में वैंटीलेटर लोगों की जान बचाता भी है। जब कोई जवान आदमी किसी सड़क दुर्घटना का शिकार हो जाए, किसी को अचानक कोई तीव्र इन्फेक्शन हो जाए, या किसी की अचानक साँस रुक जाए जबकि उसके बाकी अंग बिल्कुल स्वस्थ हों... तब वैंटीलेटर जीवनदान है। वह मौत के मुंह से खींच लाता है इंसान को।"

वे थोड़ा रुके, एक लंबी सांस खींची और फिर बोले, "मगर... जब अस्पताल के सफेद कमरों में, नियति के अटल आदेश से, बुढ़ापे और जर्जर हो चुकी देह के कारण कोई आदमी धीरे-धीरे प्राकृतिक मौत मर रहा होता है, जब उसकी उम्र पूरी हो चुकी होती है और उसके अंग एक-एक करके थक चुके होते हैं... तब अंत में ये डॉक्टर और कॉर्पोरेट

अस्पताल क्या करते हैं? वे उस मरते हुए शरीर पर वैंटीलेटर टांग देते हैं। क्यों? ताकि मशीनें जबरन दिल को धड़काती रहें, फेफड़े फूलते रहें, और अस्पताल का बिल हर दिन लाखों में बढ़ता रहे।"

राघव ने बीच में बोलना चाहा, "पिताजी, डॉक्टरों का काम जान बचाना है, वे..."

"खैर, वो एक दूसरी व्यावसायिक बात है, "विश्वनाथ जी ने हाथ के इशारे से राघव को शांत किया, "मगर देख... मैं बच्चों की तरह जिद नहीं कर रहा हूँ राघव। तू समझ क्यों नहीं रहा? ये मेरी कोई सनक नहीं है, बल्कि ये मेरा पिछले कई महीनों का गंभीर चिंतन है। मेरा अस्पताल न जाने का निश्चय एकदम दृढ़ है, पत्थर की लकीर है। और सुन, ये बात मैंने अपनी इस जीर्ण-शीर्ण देह में बैठकर सोची है। यह फैसला तेरी आर्थिक स्थिति के कारण नहीं है कि मुझे तरस आ रहा है कि मेरा बेटा गरीब हो जाएगा। अरे, अगर हमारी गाँव वाली वो पैतृक जायदाद, जो बरसों से मुकदमे में फंसी है या जो बची हुई है, वो बिक भी जाएगी, तो भी तेरे पास बहुतेरा पैसा आ जाएगा... तेरी बाकी की जिंदगी ठीक से गुजारने लायक। मगर सवाल पैसे का है ही नहीं।"

राघव उठ खड़ा हुआ। वह पिता के इन दार्शनिक तर्कों को सहन नहीं कर पा रहा था। उसे लग रहा था कि जैसे उसके पिता खुद अपनी मौत को बुलावा दे रहे हैं। उसने घबराकर कहा, "आप अधिक मत बोलिए पिताजी। आपकी साँस फूल रही है। आपके फेफड़ों पर जोर पड़ रहा है। मैं... मैं आपके लिए रसोई से गर्म दूध लेकर आता हूँ, उसमें हल्दी और सोंठ डालकर। आप चुपचाप बैठिए।" बेटे ने जैसे अपनी घबराहट को छिपाने के लिए एक बहाना ढूंढा।

"नहीं! अभी नहीं। तू जरा बैठ मेरे पास। भाग मत मेरी बातों से।" विश्वनाथ जी की आवाज में एक पिता का पुराना अधिकार लौट आया था। राघव ठिठक गया और भारी कदमों से वापस दीवान के कोने पर बैठ गया।

विश्वनाथ जी ने कमरे की खिड़की से बाहर झांका, जहाँ धूप अब धीरे-धीरे ढल रही थी और शाम के धुंधलके की शुरुआत हो रही थी। उन्होंने बहुत ही कोमल आवाज में कहना शुरू किया, "देख बेटा, इस धरती पर जब से जीवन का पहला अंकुर फूटा है, तब से दो ही चीजें सबसे बड़ी और अटल हैं- एक जन्म और दूसरी मृत्यु। जिस दिन कोई इंसान इस रंग-बिरंगी दुनिया में कदम रखता है, रोते हुए अपनी पहली साँस लेता है, उस दिन उसके भविष्य का कुछ भी निश्चित नहीं होता। कोई नहीं जानता कि वह राजा बनेगा या रंक, वह विद्वान बनेगा या मूर्ख, उसे सुख मिलेगा या दुख। इस पूरी जिंदगी के सफर में सब कुछ अनिश्चित है... सिवाए एक परम सत्य के।"

वे रुके, राघव के चेहरे को देखा और बोले, "और वो एक इकलौता सत्य यह है कि एक दिन उसे इस रंगमंच को छोड़कर जाना होगा। जो आया है, वो जाएगा। यह सृष्टि का नियम है।"

राघव ने अपनी नजरें झुका लीं। विश्वनाथ जी कहते रहे, "इंसान पूरी जिंदगी अपनी अनंत इच्छाओं के लिए, कभी न मिटने वाली तृष्णाओं के लिए, बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाओं के लिए भागता रहता है। वह दुनिया की सारी विलासिताओं को बटोरना चाहता है, भोगना चाहता है। वह समाज में मान-प्रतिष्ठा, पद-पैसा पाने के लिए और अपने वंश की बेल को आगे बढ़ाने के लिए चौबीस घंटे एक अंधी दौड़ में दौड़ता रहता है। वह कभी नहीं रुकता, उसे लगता है कि वह अमर है। वह दौड़ता ही रहेगा राघव... अगर नियति, अगर वो सुप्रीम पावर, कहीं न कहीं उसकी इस अंतहीन दौड़ पर एक 'पूर्णविराम' न लगा दे तो।"

उन्होंने यह बात कहते हुए अपने चेहरे पर वही हल्की, निश्छल मुस्कान बरकरार रखी, जो किसी ऐसे संत के चेहरे पर होती है जिसने जीवन का पूरा रहस्य समझ लिया हो।

राघव ने तड़पकर कहा, "कुछ भी हो पिताजी! आपकी ये फिलॉसोफी अपनी जगह सही हो सकती है, पर व्यावहारिक जीवन ऐसा नहीं चलता। आदमी को अपने आखिरी क्षण तक, अपनी आखिरी साँस तक स्वयं को स्वस्थ रखने का और जिंदा रहने का पूरा अधिकार है। हमारा कानून, हमारा समाज भी यही कहता है। अगर हम हाथ पर हाथ धरे बैठकर मौत का इंतजार करेंगे, इलाज नहीं करवाएंगे, तो ये तो एक तरह से आत्महत्या हो जाएगी। और मैं अपने जीते जी आपको ऐसा नहीं करने दूंगा।"

"आत्महत्या नहीं बेटा... इसे आत्महत्या नहीं कहते," 'विश्वनाथ जी ने बहुत प्यार से राघव के गाल को अपनी सूखी उँगलियों से छुआ' "इसे कहते हैं- आत्मसमर्पण। नियति के सामने सहर्ष आत्मसमर्पण। प्रकृति के नियमों के सामने और उस विधाता के विधान के सामने सिर झुकाना। तू याद कर, पिछली बार जब मेरी तबीयत बिगड़ी थी, तू मुझे जबरदस्ती एम्बुलेंस में लादकर शहर के उस पांच सितारा अस्पताल ले गया था ना? वहाँ उन्होंने क्या किया? लाखों रुपए खर्च हुए। आईसीयू के उस डरावने कमरे में, जहाँ दिन और रात का पता नहीं चलता था, चौबीस घंटे मशीनें टीं-टीं करती थीं, मेरे शरीर में चार जगह सूइयाँ और पाइप घुसा दिए गए थे। क्या उस इलाज ने मेरे इन कमजोर, बूढ़े और गल चुके लंग्स को बिल्कुल नया और युवा कर दिया था? क्या उन्होंने मेरी उम्र की ढलती सुई को पीछे घुमाकर मुझे फिर से पचास साल का बना दिया था? नहीं ना?"

राघव चुप रहा, उसकी आँखें डबडबा आईं।

विश्वनाथ जी ने कहा, "उन्होंने बस मेरी विदाई के काल को, उस प्रस्थान के क्षण को कुछ महीनों या कुछ दिनों के लिए थोड़ा सा आगे ही तो सरका दिया था। प्रकृति जो काम उस वक्त करना चाहती थी, विज्ञान ने उसमें अड़ंगा लगा दिया। पर नतीजा क्या हुआ? क्या मैं स्वस्थ हो गया? मैं आज भी इसी सिलेंडर के भरोसे हूँ ना?"

राघव के पास अब कोई तर्क नहीं बचा था। उसने रुंधे हुए गले से कहा, "पिताजी... आपकी बातों का' आपके इन तर्कों का तो मेरे पास कभी कोई जवाब नहीं है। आप हमेशा से पढ़ाते-लिखाते आए हैं, आप ज्ञानी हैं। लेकिन एक बेटे के फर्ज का क्या? समाज मुझे क्या कहेगा? मेरी अपनी आत्मा मुझे हर पल कोसेगी कि जब बाप बीमार था, तड़प रहा था, तो बेटा पैसों की खातिर या कायरता की वजह से उसे अस्पताल लेकर नहीं गया। मैं इस ग्लानि के साथ पूरी जिंदगी कैसे जीऊँगा, पिताजी? मेरे इस बेटे के फर्ज का क्या?"

विश्वनाथ जी की आँखों में कोमलता और गहरी करुणा उतर आई। उन्होंने राघव के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "अरे बावले... तूने कहाँ अपने फर्ज में कोई कसर छोड़ी है? तूने तो वो सब किया है जो एक बेटा सोच भी नहीं सकता। अपनी जमा-पूंजी लगा दी, अपनी सुख-सुविधाएं छोड़ दीं। तेरी निष्ठा पर तो यमराज भी उंगली नहीं उठा सकते। मगर... जरा ठंडे दिमाग से सोच। अच्छा चलो, मान लेते हैं कि मैं तेरी बात मानकर अस्पताल चला गया। डॉक्टरों ने मुझे वेंटिलेटर पर रखा, कुछ दवाइयों के हाई डोज दिए, और मेरी इस टूटती हुई उम्र को छह महीने या एक साल के लिए और बढ़ा दिया। ठीक है? मान ली तेरी बात।"

वे राघव की आँखों में झांकते हुए बोले, "तब तू मुझे बता बेटा, वो

जो छह महीने या एक साल बढ़ेगा, वो कौन सा साल होगा? क्या वो एक साल ऐसा होगा जिसमें मैं उठकर बगीचे में टहल सकूँगा? क्या मैं तेरे बच्चों के साथ खेल सकूँगा? क्या मैं खुल कर अपनी पसंद का खाना खा सकूँगा? नहीं ना! वो एक साल इसी पुरानी बीमारी, इसी असहनीय दर्द, और बुढ़ापे के भयंकर कष्टों को झेलता हुआ एक त्रासद साल होगा। दवाइयों की बैसाखियों के सहारे लड़खड़ाता हुआ, अस्पताल के बेड पर पट्टियों से बंधा हुआ, घिसटता हुआ एक बदसूरत साल।"

विश्वनाथ जी ने एक लंबी, गहरी सांस ली, जैसे वे अपने अतीत की स्मृतियों में खो गए हों। "मुझे लगता है राघव, कि पुराने काल में, हमारे पुरखों की जो फिलॉसफी थी, जो जीवन दर्शन था, वह आज के इस मशीनी दौर से कहीं ज्यादा सही और मानवीय था। पुराने जमाने में जब किसी बुजुर्ग का शरीर पूरी तरह थक जाता था, जब यह साफ दिखने लगता था कि अब उसके सरवाइव करने के, बचने के कोई चांस नहीं बचे हैं, तो लोग घबराकर किसी हकीम या डॉक्टर के चक्कर में घर की जमीनें नहीं बेचते थे। वे बुजुर्गों की घर पर ही, अपनों के बीच सेवा करते थे। उनके सिरहाने बैठकर भगवद् गीता या रामायण का पाठ करते थे। वे उन्हें उनकी अंतिम इच्छा का खिलाते-पिलाते थे, गंगाजल मुँह में डालते थे और ईश्वर से बड़ी श्रद्धा के साथ उनकी शांतिपूर्ण मुक्ति की प्रार्थना करते थे। मौत को एक उत्सव, एक सहज विदाई माना जाता था। मगर आज... आज क्या हो रहा है? आज खास तौर पर शहरों के लगभग सारे बुजुर्ग अपने परिवार के बीच, अपने नाती-पोतों के हाथ से गंगाजल पिए बिना, उस अस्पताल के ठंडे, अजनबी और मशीनी वैंटीलेटर पर तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहे हैं। उनके अंतिम क्षणों में कोई अपना पास नहीं होता, सिर्फ प्लास्टिक के ग्लव्स पहने नर्स और डॉक्टर होते हैं। क्या यह मौत गरिमापूर्ण है?"

राघव ने दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। उसके आंसू अब उसकी पलकों की कोर को तोड़कर गालों पर बहने लगे थे। उसने रोते हुए कहा, "अब तो नया जमाना है पिताजी। आप पुराने वक्त की तुलना आज से मत कीजिए। आज चिकित्सा क्षेत्र में बहुत तरक्की हुई है। नई-नई मशीनें, नई दवाइयां आई हैं। आप एक बार चलिए तो सही, सब ठीक हो जाएगा पिताजी। विज्ञान पर भरोसा रखिए।"

विश्वनाथ जी ने मुस्कुराकर राघव का हाथ झटकने का नाटक किया। "बौड़म है तू बिल्कुल। अरे, कहीं न कहीं तो इंसान को संतोष और सब्र होना चाहिए ना? इंसान को यह समझना चाहिए कि अब मैंने जीवन के अपने सारे दायित्व पूरे कर लिए हैं। मैंने अपनी नौकरी पूरी की, पाई-पाई जोड़कर तुझे पढ़ाया-लिखाया, तेरी शादी की, बच्चों को पैरों पर खड़ा देखा। जितनी मेरी क्षमता थी, इस जीवन की धूप-छाँव में, मैं उतना दौड़ लिया। मैंने मन का खाया, अच्छा पहना-ओढ़ा, दुनिया देखी। अब जितनी भी सांसें बची हैं मेरी इस फानी देह में... उन्हें मैं क्यों किसी डॉक्टर की नुकीली सूइयों से अपने इस कमजोर शरीर को छिदवाए बिना, उनके नुकीले शल्य शस्त्रों और चाकुओं से अपनी खाल को कटवाए बिना, शांति के साथ अपने घर में, अपने बच्चों के मध्य रहकर, तेरी और बहू की छाँव में गुज़ारूँ? क्या मेरा यह हक नहीं है?"

राघव अब पूरी तरह टूट चुका था। पिता की बातें सीधे उसके दिल के पार हो रही थीं। अतीत की तमाम खिड़कियाँ उसके दिमाग में एक साथ खुल गईं। उसे अपना बचपन, अपना लड़कपन याद आने लगा।

उसने हिचकी लेते हुए, रुंधे गले से कहा, "ऐसी बातें मत करो पिताजी... मुझे मत छोड़ कर जाओ। मुझे आज भी याद है, जब मैं छोटा था और मुझे वो भयंकर टाइफाइड हुआ था... डॉक्टर ने हाथ खड़े कर दिए थे। आप पूरी-पूरी रात बिना सोए, बिना करवट बदले मेरे सिरहाने जागकर बैठते थे और मेरे तपते माथे पर ठंडे पानी की सूती पट्टियां रखते थे। जब मैं नौवीं क्लास में था और मेरी पढ़ाई के खर्च के लिए पैसों की तंगी थी, तो आपने अपनी इकलौती ऐश- सुबह का अखबार- तक बंद करवा दिया था। ऑफिस की कैंटीन में जो आप दोस्तों के साथ चाय पीते थे, वो चाय पीनी बंद कर दी थी ताकि उन पैसों से मेरी ट्यूशन की फीस भरी जा सके... और... और आपने अपने लिए कभी कोई नया कपड़ा नहीं खरीदा। हमेशा मेरी खुशियों को आगे रखा। आज जब मेरी बारी आई है कि मैं आपके लिए कुछ कर सकूँ, तो आप मुझे अपने फर्ज से भागने को कह रहे हैं?"

राघव ने एक गहरी हिचकी ली। उसका गला पूरी तरह रुँध गया, आवाज गले में ही फंस गई और वह आगे कुछ नहीं बोल पाया। उसकी आँखों से आंसुओं का सैलाब बह निकला। वह अस्सी साल के उस बुजुर्ग के सामने फिर से वही सात साल का छोटा बच्चा बन गया था जिसका सब कुछ उसका पिता ही था।

विश्वनाथ जी की अपनी आँखें भी इस दृश्य को देखकर नम हो गईं। पर वे पिता थे, उन्हें इस समय कमजोर नहीं पड़ना था। उन्होंने अपनी कांपती हुई हथेली उठाई और राघव के घने बालों के बीच अपनी उँगलियाँ घुमायीं। उनके स्पर्श में वही पुरानी गर्माहट थी, जो राघव को बचपन में हर डर से बचा लेती थी।

वे बोले, "अरे... क्या छोटा बच्चा है रे तू? चालीस साल का गबरू जवान हो गया है, दो बच्चों का बाप है, दफ्तर में इतने बड़े पद पर है... और यहाँ ऐसे इमोशनल हो रहा है जैसे कोई खिलौना टूट गया हो?"

राघव ने रोते हुए अपना सिर पिता की गोद में रख दिया, "हाँ... बच्चा हूँ आपका। हमेशा बच्चा ही रहूँगा। मैं आपके बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता पिताजी। आज भी, इस उम्र में भी, कोई भी बड़ा काम क्या मैं आपसे पूछे बिना, आपकी सलाह लिए बिना कर सकता हूँ क्या? आप चले जाओगे तो मेरा मार्गदर्शन कौन करेगा? मुझे सही और गलत का अंतर कौन समझाएगा?"

विश्वनाथ जी ने राघव की पीठ को हौसले से थपथपाया। उनकी आवाज में अब एक अनोखी दृढ़ता और शांति थी। "बावले... जिंदगी से डरते नहीं हैं, जिंदगी से लड़ना सीख। तू मुझसे पूछता है कि मेरे बिना कैसे जिएगा? तू याद कर जब वो गई थी, तो हमें कैसा लगा था? तेरा भी उससे कितना गहरा लगाव था, और मेरा तो वो आधा शरीर थी। जिये न हम उसके बिना भी इतने बरस? क्या हमारी जिंदगी रुक गई? नहीं ना। समय किसी के लिए नहीं रुकता, बेटा। प्रकृति हमें सहना सिखा देती है।"

उन्होंने राघव का चेहरा अपनी दोनों हथेलियों में ऊपर उठाया और उसकी आँखों में आँखें डालकर कहा, "सुन मेरी बात। तू मेरा बहुत जिम्मेदार, बहुत संस्कारी और बेहद लायक बेटा है। मुझे तुझ पर गर्व है। जिंदगी के इस मोड़ पर आकर कभी लड़खड़ाना मत। मेरी सीख को हमेशा याद रखना। जितना इलाज होना था, वो हो चुका। दवाइयां अपनी जगह काम कर चुकी हैं। अब तू ये रोना-धोना बंद कर और कल से अपनी जॉब पर, अपने दफ्तर जाने की तैयारी कर। और सुन..." उन्होंने थोड़ा हंसते हुए माहौल को हल्का करने की कोशिश की, "मैं अभी कहीं नहीं जा रहा हूँ। न अस्पताल जा रहा हूँ और न इतनी जल्दी ऊपर यमराज के पास जा रहा हूँ। मैं यहीं हूँ, तेरे पास, इसी घर में।"

यह बोलकर उन्होंने दोबारा राघव के बालों में अपनी उँगलियाँ घुमायीं और उसे सहलाया। राघव को लगा जैसे उसके भीतर का सारा

तनाव, सारा डर उस स्पर्श के साथ धीरे-धीरे पिघल कर बह गया हो। उसे एक अजीब सा आत्मिक सुकून महसूस हुआ।



तभी कमरे के दरवाजे के पास एक हल्की सी आहट हुई। राघव और विश्वनाथ जी ने मुड़कर देखा। राघव की पत्नी, यानी विश्वनाथ जी की बड़ी बहू, अंजलि दरवाजे पर खड़ी थी। उसके दोनों हाथों में स्टील का एक चमचमाता हुआ ग्लास था, जिसमें से गर्म दूध की भाप उठ रही थी। दूध का रंग हल्दी के कारण हल्का पीला था और उसमें से सोंठ और केसर की भीनी खुशबू आ रही थी। अंजलि की आँखें भी नम थीं; वह काफी देर से दरवाजे के बाहर खड़ी होकर पिता और पुत्र के बीच के इस महा-संवाद को सुन रही थी। उसके चेहरे पर सम्मान और सत्कार के गहरे भाव थे। अंजलि बिना कुछ बोले, बेहद धीमे कदमों से दीवान के पास आई। उसने दीवान के पास रखी छोटी तिपाई पर दूध का ग्लास रखा। फिर उसने बहुत ही आदर और कोमलता के साथ विश्वनाथ जी के चेहरे के पास हाथ बढ़ाया। उसने उनके चेहरे पर बंधे उस प्लास्टिक के ऑक्सीजन मास्क को धीरे से हटाया। मास्क हटते ही विश्वनाथ जी ने खुली हवा में एक गहरी और स्वतंत्र सांस ली।

अंजलि ने तिपाई से दूध का ग्लास उठाया। उसने विश्वनाथ जी से कोई सवाल नहीं पूछा, न यह कहा कि 'पिताजी दूध पी लीजिए'। उसने बस एक माँ की तरह, जो अपने छोटे बच्चे को बिना पूछे दूध पिलाती है, बहुत ही आत्मीयता से उस ग्लास के किनारे को विश्वनाथ जी के सूखे होठों से लगा दिया।

विश्वनाथ जी ने भी एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह अपने होठ खोले और धीरे-धीरे दूध के घूंट भरने लगे। कमरे में इस समय कोई शब्द नहीं गूँज रहा था। केवल दूध पीने की मद्धम आवाज और उस पुराने कूलर की बयार थी। अंजलि ने बड़े सब्र के साथ उन्हें पूरा दूध पिलाया।

दूध समाप्त होने के बाद, उसने अपने कंधे पर रखे साफ, सफेद सूती तौलिए को उठाया और बहुत ही कोमलता से विश्वनाथ जी के होठों और दाढ़ी पर लगे दूध के अंश को साफ किया। उसने उनके चेहरे को ऐसे पोंछा मानो वह किसी मंदिर की मूर्ति को स्वच्छ कर रही हो।

इसके बाद, अंजलि और राघव दोनों ने मिलकर विश्वनाथ जी की कमजोर देह को बहुत ही आराम से सहारा दिया। उन्होंने उनके सिर के नीचे रखे मोटे तकिए को ठीक किया, उसे थोड़ा ऊंचा किया ताकि उन्हें सांस लेने में तकलीफ न हो, और फिर उन्हें धीरे से दीवान पर सीधा लेटा दिया। अंजलि ने उनके पैरों तक बिछी हुई चादर को ऊपर खींचकर उनके सीने तक सलीके से ओढ़ा दिया।

विश्वनाथ जी ने लेटने के बाद एक बेहद लंबी, तृप्त और गहरी सांस ली। उनके चेहरे पर अब न तो बीमारी का कोई कष्ट था, न मौत का कोई भय था, और न ही अस्पताल जाने की कोई व्याकुलता थी। वहाँ सिर्फ और सिर्फ एक असीम, अलौकिक शांति थी—वैसी ही शांति जैसी एक थके हुए मुसाफिर के चेहरे पर होती है जब वह अपने लंबे सफर के बाद आखिरकार अपने घर की दहलीज पर पहुँच जाता है।

उन्होंने अपने दोनों बच्चों को देखा, अपने होठों को आखिरी बार हल्का सा भींचा जैसे वे उन्हें आशीर्वाद दे रहे हों, और फिर बड़ी ही सहजता और असीम शांति के साथ अपनी आँखें बंद कर लीं।

कमरे के भीतर ऑक्सीजन सिलेंडर की ट्यूब में बुलबुले अब भी उठ रहे थे। मगर अब वे बुलबुले जीवन को जबरन खींचने की मशीनरी नहीं, बल्कि एक आत्मा की गरिमापूर्ण और स्वतंत्र यात्रा के साक्षी लग रहे थे। बंद टेलीविजन के काले स्क्रीन पर कमरे का वह मद्धम पीला बल्ब प्रतिबिंबित हो रहा था, जैसे किसी महा-यात्रा के पूर्णविराम पर एक मौन दीया जल रहा हो।



भाईचारा - एक अटूट बंधन



श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार

रघुनाथपुर गाँव की सुबहें विशेष थीं। सूरज की पहली किरणें जब खेतों पर पड़तीं, तो ओस की बूँदें मोतियों सी चमक उठतीं। हवा में मिट्टी और ताज़ी घास की सौंधी खुशबू घुल जाती। पक्षियों का कलरव दिन की शुरुआत का ऐलान करता, और इस शांत वातावरण में सोहन लाल का घर भी जाग उठता। उनके दो बेटे थे – अर्जुन, बड़ा और गंभीर, तथा समीर, छोटा और चंचल। अर्जुन, जो प्रकृति से शांत और ज़िम्मेदार था, सुबह तुरंत उठ जाता। समीर को थोड़ी और नींद प्यारी थी।

सोहन लाल अपने बेटों को खेतों में काम करना सिखाते, उन्हें मिट्टी की अहमियत बताते। "यह ज़मीन हमारी माँ है, बेटा। इसे सींचोगे, तो यह तुम्हें कभी भूखा नहीं रहने देगी।" उनके शब्द अर्जुन के मन में गहरे उतरते। वह हर बात को ध्यान से सुनता, समझता। समीर भी सुनता, पर उसका मन अक्सर शहर के चमक-धमक वाले सपनों में खोया रहता।

वक़्त किसी के लिए नहीं रुकता। एक दिन, सोहन लाल अचानक शांत हो गए। उनकी साँसें थम गईं, और रघुनाथपुर का वह घर, जो हमेशा उनकी आवाज़ से गूँजता था, अचानक खामोश हो गया। गाँव शोक में डूब गया। अर्जुन के कंधों पर अचानक एक भारी बोझ आ पड़ा। वह अभी युवा ही था, पर अब उसे केवल अपना नहीं, अपने छोटे भाई और माँ का भी ख़्याल रखना था।

अर्जुन ने अपने पिता की विरासत को संभाला। खेतों में पसीना बहाना, माँ की देखभाल करना, और समीर को पढ़ाना – यह सब उसकी दिनचर्या बन गया। वह समीर को कभी पिता की कमी महसूस नहीं होने देता। जब समीर स्कूल से आता, तो अर्जुन उसे पास बिठाता, उसके होमवर्क में मदद करता। समीर की आँखों में भी अपने बड़े भाई के प्रति अटूट विश्वास था।

अर्जुन के लिए समीर की पढ़ाई सबसे महत्त्वपूर्ण थी। वह चाहता था कि समीर शहर जाए, खूब पढ़ाई करे, और एक अच्छा इंसान बने।

"भैया, मुझे शहर जाना है। वहाँ कॉलेज में दाख़िला लेना है।" एक दिन समीर ने अर्जुन से कहा। उसकी आवाज़ में एक नई उम्मीद थी। अर्जुन के चेहरे पर एक पल के लिए चिंता की लकीर उभरी, पर तुरंत ही वह मुस्करा दिया। "ज़रूर जाएगा, मेरे भाई। तू पढ़ेगा, बड़ा आदमी बनेगा।"

शहर में पढ़ाई का ख़र्च ज़्यादा था। अर्जुन ने अपनी सारी जमा-पूँजी लगा दी। जब वह भी कम पड़ी, तो उसने अपनी पुश्तैनी ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा भी बेच दिया। माँ की आँखों में आँसू थे, पर अर्जुन उन्हें समझाता। "माँ, समीर का भविष्य हमारी ज़मीन से ज़्यादा कीमती है। वह पढ़ेगा, तो हमारा नाम रोशन होगा।"

समीर शहर चला गया। अर्जुन दिन-रात खेतों में मेहनत करता, हर फसल को अपनी खून से सींचता। जब समीर छुट्टियों में गाँव आता, तो अर्जुन उसके लिए नए कपड़े, किताबें, और उसकी पसंद की चीज़ें लाता।

"भैया, यह सब क्यों? आपने इतनी मेहनत की होगी।" समीर की आवाज़ में आभार था।

अर्जुन उसका कंधा थपथपाता। "तू मेरा भाई है। तेरे लिए कुछ भी। बस, मन लगाकर पढ़ना।"

साल बीतते गए। समीर ने अपनी पढ़ाई पूरी की और शहर में एक अच्छी नौकरी पा ली। उसकी शादी राधिका से हुई, जो शहर की ही थी। राधिका का स्वभाव थोड़ा अलग था। उसे गाँव की सादगी, खेतों की धूल-मिट्टी, और संयुक्त परिवार का माहौल रास नहीं आता था।

"समीर, इस बार हम गाँव जा रहे हैं क्या?" राधिका की आवाज़ में उत्साह की बजाय एक तरह की बेरुखी थी।

समीर अपनी पत्नी की ओर देखता। "हाँ राधिका, जाना तो पड़ेगा। बड़े भैया ने बुलाया है।"

"और कुछ लेने की ज़रूरत नहीं है। उनके लिए क्या लेना? वे तो बस... गाँव वाले लोग हैं।" राधिका का लहजा थोड़ा तिरस्कार भरा था। समीर के माथे पर हल्की सी शिकन उभरी। "राधिका, वे मेरे भाई हैं। उन्होंने मेरे लिए बहुत कुछ किया है।"

राधिका ने अपनी आँखें घुमाईं। "जो भी किया हो। अब क्या बार-बार एहसान जताना? वैसे भी, अब तो संपत्ति में हिस्सा लेने जा रहे हो। खाली हाथ थोड़ी जाओगे?"

समीर को राधिका की बातें अच्छी नहीं लगीं, पर वह जानता था कि उससे बहस करना बेकार है। उसने चुपचाप बाज़ार से अपने भाई के बच्चों के लिए कुछ खिलौने और भाभी के लिए एक सुंदर सी साड़ी खरीदी। उसके दिल में अपने बड़े भाई और उनके परिवार के लिए हमेशा प्यार भरा रहता था। वह जानता था कि अर्जुन ने उसके लिए क्या-क्या नहीं किया।

गाँव पहुँचकर, समीर का दिल एक बार फिर पुरानी यादों में खो गया। मिट्टी की वह सौंधी खुशबू, खेतों की हरी-भरी चादर, और अर्जुन का वही प्यार भरा चेहरा।

"समीर! आ गया मेरे भाई!" अर्जुन की आवाज़ में वही पुराना उत्साह था। उसने समीर को कसकर गले लगा लिया।

अर्जुन की पत्नी, राधा, भी मुस्कुराती हुई बाहर आई। "आइए, समीर भैया, राधिका जी। कब से इंतज़ार कर रहे थे।"

अर्जिका और छोटू, अर्जुन के बच्चे, समीर को देखते ही दौड़ पड़े। "चाचा, चाचा!" समीर ने उन्हें गोद में उठा लिया। "अरे, मेरे प्यारे बच्चों! कैसे हो?" उसने उनके हाथों में खिलौने थमाए। बच्चों की आँखों में चमक आ गई।

राधा की आँखों में भी खुशी थी जब समीर ने उसे साड़ी दी। "समीर भैया, इसकी क्या ज़रूरत थी? आप आ गए, यही बहुत है।"

"नहीं भाभी, यह तो बस... छोटा सा तोहफा है।" समीर ने मुस्कुराते हुए कहा। राधिका दूर खड़ी यह सब देख रही थी, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।

रात में खाने के बाद, अर्जुन और समीर आंगन में बैठे थे। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे, और हवा में एक अजीब सी शांति थी।

"भैया, मुझे आपसे एक ज़रूरी बात करनी थी ।" समीर ने धीमी आवाज़ में कहा।

अर्जुन ने उसकी ओर देखा। "हाँ, मेरे भाई। बोलो"

"मैं... मैं अपनी पुश्तैनी संपत्ति में अपना हिस्सा चाहता हूँ।" समीर ने अपनी बात कहने में थोड़ा संकोच किया।

अर्जुन के चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आया। वह शांत था। "जिस दिन तू चाहेगा, उस दिन तेरा हिस्सा तेरा होगा, मेरे भाई। इसमें पूछने की क्या ज़रूरत है?"

"नहीं भैया, मैं चाहता हूँ कि अब यह बँटवारा हो जाए।" समीर ने थोड़ा ज़ोर देकर कहा।

अर्जुन ने एक गहरी साँस ली। "ठीक है, समीर, जो भी ज़मीन बची है, वह आधी तेरी, आधी मेरी। और घर... घर तो हमारा साझा है।" समीर को अर्जुन की प्रतिक्रिया पर थोड़ी हैरानी हुई। उसने सोचा था कि अर्जुन शायद थोड़ा विरोध करेगा, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। अर्जुन का दिल हमेशा से विशाल था।



अगली सुबह, समीर गाँव में घूमने निकला। बचपन की गलियाँ, वही पुराने चेहरे। गाँव के लोग उसे देखकर खुश होते। "अरे, समीर बेटा! शहर से आया है? बड़ा आदमी बन गया है।" एक बुजुर्ग ने समीर से कहा।

"हाँ, काका। बस ऐसे ही।" समीर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"तुम्हारा बड़ा भाई अर्जुन... उसने तुम्हारे लिए बहुत कुछ किया है, बेटा। अपनी सारी जमा-पूँजी तुम्हारे पढ़ने में लगा दी। ज़मीन भी बेच दी थी।" एक और गाँव वाले ने कहा। समीर ने उनकी बात सुनी, और उसके मन में एक अजीब सा भाव जागा। उसने यह सब सुना तो था, पर कभी इस गहराई से सोचा नहीं था। "हाँ, मैंने सुना है।" समीर ने कहा, उसकी आवाज़ में एक गंभीरता थी।

"सुना ही नहीं, देखा भी है। जब तुम शहर गए थे, तब अर्जुन ने कितनी मेहनत की। दिन-रात खेतों में पसीना बहाता था, ताकि तुम्हारी पढ़ाई का ख़र्च चलता रहे।" गाँव के सरपंच ने, जो पास ही खड़े थे, अपनी बात रखी। "उसकी आँखों में हमेशा तुम्हारे लिए एक सपना था। वह चाहता था कि तुम पढ़ो, आगे बढ़ो। खुद के लिए उसने कभी कुछ नहीं सोचा।" समीर के कान में ये बातें गूँज रही थीं। एक-एक शब्द उसके दिल पर चोट कर रहा था। उसे लगा जैसे कोई उसके भीतर की परतों को उधेड़ रहा हो। उसे याद आया, कैसे अर्जुन ने उसे हमेशा सबसे अच्छी किताबें दिलाईं, कैसे उसने अपनी पसंदीदा साइकिल बेचकर उसे शहर भेजा। उसकी आँखों के सामने अर्जुन का चेहरा घूम गया, जो हमेशा उसके लिए त्याग करता आया था।

उसे अपने शब्दों पर पछतावा होने लगा। उसने अपने भाई से संपत्ति का हिस्सा कैसे माँगा? वह तो हमेशा उसके लिए एक पिता समान था। उसने अपने भाई के बलिदानों को कभी समझा ही नहीं था, या शायद समझना चाहा ही नहीं था। उसकी आँखें नम हो गईं और उसे महसूस हुआ कि परिवार का प्यार और समर्थन किसी भी संपत्ति से कहीं ज़्यादा मूल्यवान है। उसने अपनी आँखें पोंछीं। उसे अर्जुन से माफ़ी माँगनी थी।

समीर सीधे अर्जुन के पास गया। अर्जुन आँगन में बैठा, बच्चों को समीर के लाए खिलौनों के साथ खेलते निहार रहा था।

"भैया..." समीर की आवाज़ में एक अजीब सी कंपन थी।

अर्जुन ने सिर उठाया। "क्या हुआ, मेरे भाई? सब ठीक है?" उसकी आँखों में वही चिंता थी, जो हमेशा समीर के लिए रहती थी।

समीर अर्जुन के सामने बैठ गया। उसकी आँखें अर्जुन की आँखों से मिलीं। "भैया, मुझे माफ़ कर दो।" उसकी आवाज़ टूट गई।

अर्जुन हैरान था। "किस बात के लिए, मेरे भाई?"

"मैंने... मैंने आपसे अपनी संपत्ति में हिस्सा माँगा। मैं कितना गलत था।" समीर के होंठ काँप रहे थे। "मुझे आज पता चला कि आपने मेरे लिए क्या-क्या किया है। आपने अपनी सारी जमा-पूँजी लगा दी, ज़मीन बेच दी... सिर्फ़ मेरे भविष्य के लिए।" उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। अर्जुन ने समीर के कंधे पर हाथ रखा। "अरे, इसमें माफ़ी की क्या बात है, समीर? तू मेरा भाई है। तेरे लिए जो भी किया, वह मेरा कर्तव्य था।" "नहीं भैया, यह कर्तव्य से बढ़कर था। यह प्यार था, यह बलिदान था।" समीर ने सिर उठाया, उसकी आँखों में पछतावा और आभार दोनों थे। "मैंने आपकी मेहनत और बलिदान की कद्र नहीं की। मैं अब संपत्ति के लिए नहीं कहूँगा। मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

अर्जुन ने अपने भाई को कसकर गले लगा लिया। उसकी अपनी आँखें भी नम हो गईं। "मेरे भाई, संपत्ति से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है हमारा बंधन। हमारा प्यार। तेरी खुशी ही मेरे लिए सबसे बड़ी संपत्ति है। हम हमेशा एक-दूसरे के साथ रहेंगे।" समीर ने अपने भाई के परिवार के साथ अपने संबंधों को और मज़बूत बनाने का फैसला किया। उसने शहर लौटकर राधिका को भी समझाया। "राधिका, मैंने एक बहुत बड़ी गलती की थी।" समीर ने अपनी पत्नी को बताया। "मेरे भैया ने मेरे लिए जो किया है, वह कोई नहीं कर सकता। परिवार का प्यार और एकता सबसे महत्त्वपूर्ण है। संपत्ति कुछ भी नहीं है।"

राधिका ने अपने पति के चेहरे पर एक नई गंभीरता देखी। उसे समीर की बातें शायद पूरी तरह समझ नहीं आईं, पर उसे समीर के मन का बदलाव महसूस हुआ। "तो अब क्या?" राधिका ने पूछा। "अब हम वापस जाएँगे। गाँव। और इस बार तुम भी मेरे साथ चलोगी। हम सब मिलकर रहेंगे। परिवार ही सब कुछ है।" समीर की आवाज़ में एक नया संकल्प था। राधिका ने कुछ देर सोचा, फिर सिर हिला दिया। समीर के भीतर का यह बदलाव उसे भी प्रभावित कर रहा था। इस बार जब समीर गाँव आया, तो उसके साथ राधिका भी थी। उनके चेहरे पर एक नई चमक थी, एक नया संकल्प। अर्जुन और राधा ने उनका खुले दिल से स्वागत किया। बच्चों की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था।

"चाची!" अर्जुन की बेटी, अर्जिका, राधिका से लिपट गई। राधिका ने भी उसे प्यार से गले लगाया।

उस दिन रघुनाथपुर का वह घर खुशियों से भर गया। सबके मन साफ हो चुके थे। अर्जुन और समीर के परिवार एक हो गए। समीर ने अपने भाई के प्रति अपनी भावनाओं को समझा, और उनके रिश्ते में एक नई मज़बूती आई। उन्होंने मिलकर अपने परिवार के बीच प्यार और एकता को बनाए रखा, जो कि किसी भी संपत्ति से कहीं अधिक मूल्यवान था।

उन्होंने मिलकर एक नया अध्याय शुरू किया, जिसमें भाईचारे और प्यार की महत्ता थी। अर्जुन और समीर की कहानी गाँव में भाईचारे और बलिदान की एक प्रेरणादायक कहानी बन गई। उनकी कहानी ने गाँव के हर घर में यह संदेश पहुँचाया कि सच्चा धन संपत्ति नहीं, बल्कि परिवार का अटूट बंधन और निस्वार्थ प्रेम है।

प्रायश्चित



श्री पुरुषोत्तम दास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी
ग्रेड – II

ब्रजमोहन देव के पक्ष में जमीन की डिग्री नहीं हुई थी। जिस जमीन पर उसने दावा किया था वह प्रधानी जोत थी। जमीन पर उसका दावा खारिज हो गया था। लेकिन विशारदपुर थाने का बड़ा बाबू सकते में था। कल ही उसने इलाके के रसूखदार ब्रजमोहन देव के कहने पर उस खंडहरनुमा घर से एक महिला और उसके बच्चे को लाठी के जोर पर वहाँ से खदेड़ दिया था। यह खंडहर उसी विवादित जमीन पर या यूं कहिये विवादित बनाई गई जमीन पर था, जिसपर सुनवाई चल रही थी।

दारोगा शिवनाथ बाबू धर्मपरायण आदमी थे लेकिन कानून के पालन में अटल। लेकिन कल जब ब्रजमोहन देव ने बुलाकर उनसे कहा कि मुकदमे में उनकी डिग्री हुई जा रही है और उनको आगे इस जमीन पर कोई लफड़ा नहीं चाहिए तो, वे इतना भर भी न कह सके कि डिग्री की कागज पहले आने दे। उन्होंने न आव देखा न ताव, सीधा चले गए खंडहर को खाली कराने। अब उन्हें रह-रहकर ख्याल आ रहा था कि महिला कितना रोयी-गिड़गिड़ायी, अपनी लाचारी और भगवान की दुहाई दी और फिर भी बात न बनी तो उसने अपने बच्चे की दुहाई दी लेकिन वे टस-से-मस नहीं हुए। अब उन्हें अपना किया पीछा नहीं छोड़ रहा था। उन्हें ग्लानि तो हुई और वे उसी ग्लानि में वापस उस खंडहर पर गए कि पूस की ठंढ में महिला शायद वापस लौट आई हो। लेकिन व्यर्थ। खंडहर सूना था। उसने हारकर सिपाहियों को महिला और उसके बच्चे की खोज के लिए रवाना किया ताकि उसकी खैरकदम पता चले।

सिपाही खाली हाथ लौटकर चले आए थे। और उन्होंने जो जानकारी दी उससे उनका कलेजा फट पड़ा। सिपाहियों ने बताया कि महिला असहाय बेवा थी और अभी चंद दिन पहले ही लंबी बीमारी के बाद उसके पति भगवान को प्यारे हो गये थे। शहर में अपना कोई नहीं था तो महिला गाँव के खंडहर में रहकर अपना गुजर-बसर कर रही थी। प्रधानी की यह जमीन एक जमाने में उसके बाप-दादाओं की थी इसलिए।

सिपाही के लौटने की देरी थी कि दारोगा शिवनाथ व्यथित हो उठे। ये क्या कर दिया उन्होंने और क्या बीत रही होगी अभी उस अभागी महिला और बच्चे के साथ। गर्म लिहाफ के नीचे रहते हुए भी उसके हाथ-पैर कांप रहे थे। पत्नी चंद्रमा को रहा न गया तो आखिर पुछ ही लिया- 'जो हाथ शैतान-से-शैतान अपराधियों को धर दबोचने में नहीं कांपे वह इस लिहाफ के नीचे भी क्यों कांप रहे हैं। सब ठीक तो है।'

दारोगा इतना ही कह पाया- "हाथ किसी अपराधी की वजह से नहीं बल्कि खुद अपराधी होने के वजह से कांप रहे हैं, चंदा। हाँ, आज मैं ही अपराधी बन गया हूँ और पता नहीं कैसे प्रायश्चित करूँ?" कहकर उसने सारी बात अपनी पत्नी को बता दी।

पत्नी ने भी माथे पर हाथ रख लिया- "आह! ये क्या हो गया तुमसे? लेकिन तुम दिल छोटा न करो, रोज के काम में कुछ ऊँच-नीच हो ही जाती है। वो महिला और बच्चे जहाँ भी होंगे ठीक ही होंगे। अभी के लिए सब भुलकर सो जाओ।"

दारोगा ने भारी मन से कहा- "सो तो नहीं पाऊँगा क्योंकि वह महिला और उसका बच्चा मेरी आँखों के सामने से ओझल ही नहीं हो रहे हैं, और तुम कहती हो भूल जाओ? परंतु एक बात कहो अगर ऐसा किसी ने तुम्हारे और बाबू के साथ कर दिया होता तो क्या तुम यही कहती?" पत्नी ने कुछ नहीं कहा।



दारोगा शिवनाथ चौकी पर बैठे थे लेकिन बिलकुल शांत और चारो ओर अलग नीरवता पसरी हुई। आँखों के सामने दुखियारी बेवा और ठंढ से ठिठुरता उसका बच्चा सिर पर बिना छत के। ये अपराध पहाड़ मालूम होता था। उसी समय थाने पर एस.पी. साहब की दबिश हुई। दारोगा कमांडर अधिकारी को देखते ही अपनी कुर्सी छोड़ उठ खड़े हुए और मुस्तैदी से सैल्युट करते हुए 'जय हिंद' कहा।

"क्यों शिवनाथ, सबकुछ ठीक चल रहा है ? कुछ मायूस नजर आते हो।"

दारोगा सामने ही फफक पड़ा- "हुजूर मुझसे अपराध हो गया है।" दारोगा ने ब्रजमोहन देव के कहने पर महिला को खंडहर से निकाल बाहर करने की बात सदर अधिकारी को बयाँ कर दी।

एस.पी. साहब ने दारोगा के कंधे पर हाथ रखकर कहा- "तो तुम मुझसे क्या चाहते हो?"



दारोगा- "मेरे कुकर्मों की सजा माई-बाप। मैं इस बोझ को और बर्दाश्त करने में असमर्थ हूँ, मेरे दमन के कारण एक बेवा और मासूम पर जान का संकट आ गया। मैं दोषी हूँ हुजूर।"

एस.पी. साहब ने पूरी बात सुनी और एक गहरी साँस लेकर कहा- "तो ये बात है। तुम चाहते हो कि जिस अपराधबोध से तुम गुजर रहे हो उससे मैं भी गुजरूँ। मियाँ ये मुझसे न होगा। गाड़ी के नीचे आ जानेवाले मेमने के लिए ड्राइवर को जेल नहीं दी जा सकती है। तुम इससे बाहर आओ। कुछ दिन में सब ठीक हो जाएगा।" इतना कहकर एस.पी. साहब अपनी राह निकल लिए। पुलिस कमांडर ने सोचा कि समय से साथ उसकी संवेदना राह पकड़ लेगी लेकिन ऐसा न हुआ।

दिन बिता, शाम हो गई। लेकिन दारोगा के अंदर का तूफान जलजले का रूप ले रहा था। उसे लग पड़ा कि इससे बाहर आना नामुमकिन है। और अगर उसने समय रहते कुछ न किया तो जिंदा लाश बनकर रह जाएगा। उसने एक कागज निकाली और उसपर अपना अपराध उकेर कर रख दिया। पूस की वह रात भी पहाड़ से कम न थी, उसने वह रात भी आँखों-ही-आँखों में काटी।

सुबह वह नहा-धो, तैयार हो निकल गया लेकिन थाने की ओर नहीं कचहरी की ओर। कचहरी शुरू हो रही थी और कुरसी पर आसीन जिला जज मुकदमों की सुनवाई ले रहे थे। जज ने दारोगा की ओर देखा और दारोगा ने उनका अभिवादन किया।

"दारोगा साहब, आज सबेरे-सबेरे, किसकी पेशी है?" जज ने ब-हैसियत कहा।

"सर आज इंसाफ के दरबार में मेरी खुदकी पेशी है। मैंने वो अपराध कर दिया है कि मेरा जीवन मुझपर भार बन गया है। उसकी सजा मिलने तक मेरी आत्मा मुझको धिक्कारती है। इतना कि मैं इस बोझ को अब और सहन नहीं कर सकता हूँ।" इतना कहकर उसने वह चिट्टी जो लिखी थी जज साहब को सौंप दी।

जज साहब ने खत का पूरा मजमून पढ़ा और कहा- "गलती तो हुई है और आपने अपने प्रदत्त सीमा का ख्याल रखे बिना व्यवहार किया है और कुछ हद तक अपनी शक्ति का भी दुरुपयोग किया है। पुलिस को एक डॉक्टर की तरह व्यवहार करना चाहिए लेकिन कभी-कभी एक डॉक्टर को भी ऐसा ऑपरेशन करना पड़ता है जिसमें रोगी का अंग तो चला जाता है लेकिन जीवन बच जाता है। आपके साथ दुःखद यह है कि आपने ऑपरेशन की आवश्यकता की पुष्टि किये बिना ही चीर-फाड़ कर दी। मैं आपके आवेदन को समुचित कार्रवाई के लिए आपके उच्चधिकारी को भेज देता हूँ।"

"लेकिन साथ ही कहना चाहता हूँ कि आपने एक मिसाल कायम की है। दुनिया की सबसे बड़ी अदालत होती है अंतरात्मा और सबसे अच्छी चीज यह है कि आपने उसे दबाया नहीं। अंतरात्मा जरूर गवाही देती है कि आपने गलत किया है अथवा नहीं। आपने पछताने की जगह प्रायश्चित करने का जो फैसला लिया है वह आत्मा के शुद्धिकरण के लिए नितांत जरूरी है। लोग यदि अंतरात्मा में खुद के किये को देखने लगे तो ये दुनिया एक दिन अपराधमुक्त हो जाएगी।"



भक्ति आंदोलन श्री चैतन्य महाप्रभु, और उसके सामाजिक परिणाम



श्री चंदन साहा
सहायक लेखा अधिकारी

मध्यकालीन भारत के इतिहास में भक्ति आंदोलन एक ऐसी युगांतरकारी घटना थी, जिसने केवल तत्कालीन धार्मिक चेतना को ही नहीं बदला, बल्कि समाज को एक प्रगतिशील एवं सर्वसमावेशी आध्यात्मिक दिशा निर्देश प्रदान किया। इस आंदोलन ने मध्यकाल की रूढ़िवादी मानसिकता को तोड़कर एक नए सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण की नींव रखी। मनुष्य की आध्यात्मिक खोज के लिए इस आंदोलन ने कठोर जटिल अनुष्ठानों और संस्थागत पदानुक्रमों के बजाए किसी चुने हुए देवी/देवता के प्रति तीव्र निश्छल व्यक्तिगत भक्ति को समर्थन किया।

इस आंदोलन के कुछ युगांतरकारी विशेषताएं इस प्रकार थीं- महान भक्ति संतों ने समाज में व्याप्त जन्म-आधारित जाति व्यवस्था और छुआछूत पर कड़ा प्रहार किया, ज्ञान और धर्म पर समाज के सभी वर्ग के समान अधिकार की वकालत की, 'संस्कृत' के बजाय लोक-भाषाओं (क्षेत्रीय बोलियों जैसे अवधी, ब्रज, मैथिली, बंगाली और तमिल) में अपने उपदेश दिए और काव्य रचनाएँ कीं। इससे न केवल आम जनता तक ज्ञान एवं धर्म का लोकतंत्रीकरण हुआ साथ ही साथ क्षेत्रीय साहित्यों का भी अभूतपूर्व विकास हुआ।

इन संतों ने निर्भीकतापूर्वक यह घोषणा की कि - मोक्ष (**या भगवत्प्राप्ति** - इसे चाहे जिस नाम से भी पुकारा जाए) सभी के लिए सुलभ है - यह जन्म, लिंग या सामाजिक स्थिति के भेदभाव के परे है। ऐसे तो भक्ति आंदोलन को दो अलग-अलग दार्शनिक दृष्टिकोण से विभाजित किया गया है - सगुण और निर्गुण (जो मूलतः भक्ति के ही दो बिभाजन है)।

सगुण - जो ईश्वर को एक साकार (मूर्तिमान) रूप में मानता है। सरल शब्दों में कहें तो, ईश्वर को एक निश्चित रूप, नाम, गुण और मानवीय लीलाओं के रूप में पूजना ही सगुण भक्ति है। इसमें भक्त अपने आराध्य को माता, पिता, मित्र, स्वामी या प्रेमी के रूप में देखते हैं और उनसे एक गहरा, व्यक्तिगत रिश्ता जोड़ते हैं। यह मार्ग ज्ञान के बजाय प्रेम, पूर्ण समर्पण और गहरी भावनाओं पर टिका हुआ है। आम लोगों के लिए निराकार (बिना रूप वाले) ब्रह्म को समझना और महसूस करना कठिन होता है, लेकिन ईश्वर की एक सुंदर और कृपालु छवि से मन लगाना कहीं आसान होता है। यही कारण है कि यह मार्ग जन-जन में बेहद लोकप्रिय हुआ। इसमें वैष्णव, शैव्य और शाक्त सखायें प्रधान है- इसमें भी वैष्णव ही प्रमुख है। इस धरा के कुछ प्रमुख संत हुए- तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु, रामानुजाचार्य एवं दक्षिण के अलवार और नयनार संत समूह।

निर्गुण - इस विचारधारा के अनुसार, ईश्वर को किसी मूर्ति, रूप, रंग या आकार में न बांधकर, उसे एक निराकार (बिना किसी आकार के), सर्वव्यापी (सब जगह मौजूद) और **शाश्वत** सत्ता **माना** जाता है। ईश्वर किसी भौतिक शरीर में नहीं रहता, बल्कि वह एक अदृश्य ऊर्जा या चेतना है जो हर जीव और कण-कण में रची-बसी है। संत कबीरदास जी का **यह दोहा** निर्गुण की इस भावना को हमारे लिए सरल कर देता है —

"कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढे बन माहीं।
ऐसे घट-घट राम हैं, दुनिया देखत नाहीं॥"

इस धारा के उल्लेखनीय संत हुए- गुरु नानक जी, कबीर, रविदास आदि।

बाहरी **दृष्टि** से **सगुण** और निर्गुण में भले ही भेद दिखे, मगर **अंतस्तल** से दोनों धाराओं का **सार वही भगवान के प्रति अपने** प्रेम की प्रतिष्ठा है। महान कवि तुलसीदास जी ने इस बात को **रामचरितमानस** में बहुत सुंदर ढंग से स्पष्ट किया है कि निर्गुण और सगुण में कोई भेद नहीं है; परमात्मा ही भक्त के प्रेम के कारण निराकार या साकार रूप लेते **हैं** —

"सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥"

भक्ति आंदोलन की व्यापकता पूरे अविभाजित भारत में देखी जा सकती है। उत्तर-दक्षिण से लेकर पूर्व-पश्चिम और उत्तर-पूर्व तक, हर क्षेत्र में इसका प्रभाव था। चाहे हिंदी, मराठी, तमिल हो या बंगाली—हर भाषा वर्ग और देश के हर कोने में कोई न कोई संत या संप्रदाय सक्रिय दिखाई देता है। इसमें सबसे अनूठी बात यह है कि ये सभी संत आध्यात्मिकता के उन्हीं महान और साझा सिद्धांतों का प्रचार करते हैं। इस प्रकार, भारतीय संस्कृति की मूल संचालक शक्ति— 'विविधता में एकता'— भक्ति आंदोलन में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

तो आज हम इन्ही महान संत समूह में से गौड़िये वैष्णव परंपरा के सगुण संत श्री चैतन्य महाप्रभु के बारे में चर्चा करेंगे।

श्री चैतन्य महाप्रभु के जन्म ई. 1486 में - फाल्गुन पूर्णिमा के दिन बंगाल के नदिया जिला के श्रीधाम नवद्वीप के रहने वाले विद्वान ब्राह्मण परिवार में हुआ। संयोग से उस दिन चंद्रग्रहण था - लोग भगवान के नाम लेकर गंगास्नान करने जा रहे थे - चारो दिशाएँ खोल करताल एवं हरी नाम ध्वनि में मुखरित था - इसी बीच इनका जन्म हुआ था - इस घटना पर कृष्णदास गोस्वामी लिखते है -

"चौदह सौ सात शके माष जे फाल्गुन
पूर्णिमासी सांध्यकाले होइलो शुभ क्षण। ...
जगत भरिया लोक बोले हरि-हरि
सेई क्षणे गौर-कृष्ण भूमे अवतरी।"

उनके पिता जगन्नाथ मिश्र एवं माता शची देवी ने उनका नाम विश्वंभर रखा था, परंतु सभी इन्हें निमाई कहकर पुकारते थे, क्योंकि इनके जन्म नीम के पेड़ के नीचे हुआ था। उज्जवल गौरवर्ण शरीर होने के

कारण लोग इन्हें गौरांग, गौर सुंदर आदि भी कहते थे। गौरांग महाप्रभु के जीवन चरित्र और लीलाओं पर अनेक ग्रंथों की रचना की गई है, जिनमें श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी विरचित 'चैतन्य चरितामृत' सर्वप्रमुख है। साथ ही, श्री वृंदावन दास ठाकुर रचित 'चैतन्य भागवत' एवं लोचनदास ठाकुर कृत 'चैतन्य मंगल' भी इस श्रेणी के अन्य प्रमुख ग्रंथ हैं।

सामान्यतः चैतन्य महाप्रभु को भगवान कृष्ण के ही अवतार के रूप में देखा जाता है, परंतु गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय में इन्हें 'राधा-कृष्ण' का युगल (संयुक्त) अवतार माना जाता है। इस अवतार तत्व का रहस्य अत्यंत गूढ़ है, जिसकी चर्चा हम किसी अन्य लेख में करेंगे। उनके इस अवतार तत्व की प्रामाणिकता श्रीमदभागवद महापुराण, गरुड़ पुराण तथा पद्म पुराण आदि सनातन धर्म के प्राचीन ग्रंथों में भी स्पष्ट रूप से मिलती है।

निमाई बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। अत्यंत अल्पायु में ही उन्होंने न्याय और व्याकरण में पारंगता हासिल कर ली थी। मात्र १५ वर्ष की आयु में उनका पहला विवाह लक्ष्मीप्रिया देवी से हुआ, किंतु सर्पदंश के कारण उनका असामयिक निधन हो गया। इसके बाद उनका दूसरा विवाह विष्णुप्रिया देवी से कराया गया। किशोरावस्था के अंत तक उनके पिता का भी देहांत हो गया। पिता के श्राद्ध कर्म के लिए जब वे गया यात्रा पर थे, तब वहां उनकी भेंट ईश्वरपुरी नामक संत से हुई— यह घटना उनके जीवन का एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। २४ वर्ष की तरुण अवस्था में उन्होंने संत श्री केशव भारती से संन्यास की दीक्षा ली और गृहत्याग कर दिया। दीक्षा के उपरांत उनका नाम 'श्री कृष्ण चैतन्य' हुआ।

इस प्रसंग में 'चैतन्य चरितामृत' ग्रंथ के लेखक कृष्णदास कविराज लिखते हैं—

"चौबीस बत्सर शेषे जेई माघ मास।
तार शुक्लपक्षे प्रभु करीला संन्यास॥"

महाप्रभु चैतन्य के जीवन की लीलाओं को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है—आदि, मध्य और अंत लीला। उनके बाल्यकाल से लेकर संन्यास ग्रहण करने तक की समयावधि 'आदि लीला' कहलाती है। उक्त ग्रंथ के अनुसार, संन्यास लेने के पश्चात महाप्रभु ने झारखंड के जंगलों के रास्ते पैदल वृंदावन जाने का निश्चय किया था। किंतु उनके पार्षद श्री नित्यानंद महाप्रभु की चतुराई के कारण वे वापस नदिया (नवद्वीप) लौट आए और अद्वैत आचार्य (गोंसाई) के निवास पर ठहरे। चूंकि उनके बड़े भाई विश्वरूप पहले ही संन्यास लेकर गृहत्याग कर चुके थे, इसलिए अपनी माता शची देवी के विशेष अनुरोध पर उन्होंने नीलाचल क्षेत्र (जगन्नाथ पुरी धाम) को अपना स्थायी निवास बनाने का वचन दिया।

जब गौरांग महाप्रभु पहली बार जगन्नाथ मंदिर पहुंचे, तब भगवान की साक्षात छवि देखकर वे भाव-विभोर हो उठे और उन्मत्त होकर नृत्य करने लगे और अंततः मूर्छित हो गए। संयोगवश, वहां उपस्थित प्रकांड पंडित सार्वभौम भट्टाचार्य महाप्रभु की इस प्रगाढ़ प्रेम-भक्ति को देख अत्यंत प्रभावित हुए और उन्हें आदरपूर्वक अपने घर ले आए। वहां दोनों के मध्य शास्त्र-चर्चा आरंभ हुई, जिसमें सार्वभौम अपने अगाध पांडित्य का प्रदर्शन करने लगे। तब श्री गौरांग ने ज्ञान की तुलना में भक्ति के महत्व को सर्वोपरि सिद्ध किया और उन्हें अपने अलौकिक **'षड्भुज रूप'** के दर्शन कराए। इस चमत्कारी प्रसंग के बाद सार्वभौम भट्टाचार्य महाप्रभु के अनन्य शिष्य बन गए और जीवन के अंतिम समय तक उनकी शरण में रहे।

इसके बाद महाप्रभु ने नीलांचल (पुरी) से दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया। अपनी इस यात्रा के दौरान वे श्रीरंगम और सेतुबंध (रामेश्वरम) जैसे पवित्र स्थानों पर भी रहे। उन्होंने देश के कोने-कोने में जाकर प्रेम-भक्ति और हरिनाम संकीर्तन की अद्‌त महिमा का प्रचार-प्रसार किया। तत्पश्चात, वे वन के मार्ग से होते हुए वृंदावन के लिए आगे बढ़े। प्रामाणिक ग्रंथों के अनुसार, जब वे प्रेमावेश में हरिनाम महामंत्र का उच्चारण करते हुए चलते थे, तो जंगल के मूक पशु भी उनके साथ झूमने लगते थे। शेर, बाघ और हाथी जैसे हिंसक वन्य जीव भी महाप्रभु के अलौकिक प्रेम-भाव के आगे नतमस्तक होकर उनके साथ नृत्य करने लगते थे।

कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर वे वृंदावन पहुंचे। वहां रहकर उन्होंने प्राचीन श्रीधाम वृंदावन के लुप्त गौरव और महत्ता को पुनः प्रतिपादित किया तथा जनमानस की सुप्त भक्ति भावना को जागृत किया। वृंदावन के अत्यंत महत्त्वपूर्ण और पवित्र स्थल 'राधा कुंड' और 'श्याम कुंड'—जो समय के साथ धान के खेतों में तब्दील हो चुके थे— महाप्रभु ने ही उनकी खोज कर उनका पुनरुद्धार किया। अपनी इस व्यापक यात्रा के दौरान उन्होंने काशी, हरिद्वार, मथुरा, द्वारका और प्रयाग आदि प्रमुख तीर्थों की परिक्रमा की। इस विशाल भू-भाग के भ्रमण को स्वामी विवेकानंद या आदि शंकराचार्य की ऐतिहासिक भारत-यात्राओं की श्रेणी में गिना जा सकता है। इसी प्रकार, महाप्रभु ने अपनी इस संपूर्ण भारतवर्ष की यात्रा के दौरान स्मार्त, पातंजल, मीमांसावादी और मायावादी आदि अनेक मतों के संत-विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ किया। उन्होंने अपने अकाट्य तर्कों से उन सभी को पराजित किया और 'प्रेम-भक्ति' के मत को प्रतिस्थापित किया; जिसने आगे चलकर भक्ति आंदोलन को अभूतपूर्व बल दिया और साथ ही साथ जनमानस में भगवन्नाम के संकीर्तन को भी स्थापित किया।

श्री महाप्रभु ने अपनी नश्वर लीला के अंतिम वर्ष उत्कल (ओडिशा) नरेश महाराज प्रतापरुद्र के गुरु, पंडित काशी मिश्र के निवास पर व्यतीत किए थे—यह स्थान आज भी 'गंभीरा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थान पर रहते हुए वे कृष्ण-प्रेम की अत्यंत प्रगाढ़ और विरह अवस्था में लीन रहते थे। चैतन्य महाप्रभु के अंतर्धान (मृत्यु) का कोई ठोस ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। जनश्रुतियों के आधार पर भक्त इसकी अपने-अपने तरीके से व्याख्या करते हैं; कुछ संतों और भक्तों का मानना है कि महाप्रभु का पार्थिव शरीर साक्षात श्री जगन्नाथ विग्रह में समाहित हो गया था, तो वहीं कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि प्रेमावेश में समुद्र में लीन हो जाने के कारण वे अंतर्धान हो गए।

भक्ति आंदोलन के अंतर्गत गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय की 'चैतन्य धारा' का प्रभाव अत्यंत व्यापक और सुदूरगामी रहा है। इसने समाज के हर वर्ग और हर श्रेणी के लोगों को आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य किया। आत्मिक उन्नति के जो सोपान (रास्ते) अब तक जटिल नियमों और खर्चीले अनुष्ठानों के पीछे छिपे हुए थे, वे महाप्रभु के प्रयासों से अत्यंत सहज, सुलभ और सर्वजन स्वीकार्य हो गए। भगवान को प्रसन्न करने के लिए अब केवल उनके प्रति प्रगाढ़ प्रेम और उनके नाम का संकीर्तन (मृदंग और करताल की ध्वनि के साथ 'हरे कृष्ण, हरे राम' के महामंत्र के **सामूहिक नाम-जप**) ही पर्याप्त हो गया। इस संप्रदाय की एक और बेहद उदार और प्रगतिशील सोच जातिवाद का खंडन करने में निहित है। इस मत के अनुसार, वास्तविक पवित्रता (शुचिता) जन्म या जाति से नहीं, बल्कि मन के आंतरिक भाव और भक्ति से तय होती है। भगवान का नाम निष्कपट भाव से लेने मात्र से ही आत्मा पूरी तरह शुद्ध

हो जाती है।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने संपूर्ण लीलाकाल में लोक-कल्याण और शिक्षा हेतु केवल आठ श्लोकों की रचना की थी, जिन्हें **'शिक्षाष्टकम्'** कहा जाता है। इन्हीं में से एक सुप्रसिद्ध श्लोक है—

"तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः॥"

अर्थ: स्वयं को घास के तिनके (तृण) से भी छोटा समझते हुए, वृक्ष के समान सहनशील रहते हुए, स्वयं किसी सम्मान की इच्छा न रखते हुए परंतु दूसरों को सम्मान देते हुए, सदा श्रीहरि का नाम संकीर्तन करना चाहिए। इस दिव्य निर्देश का पालन करने से मनुष्य न केवल एक श्रेष्ठ सामाजिक प्राणी बनेगा, अपितु उसमें आध्यात्मिक सद्गुण भी स्वतः प्रकाशित होने लगेंगे।

चैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन आंदोलन ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों के मध्य एक सुदृढ़ सांस्कृतिक सेतु का निर्माण किया। जब तत्कालीन चांद काजी ने नगर में संकीर्तन पर प्रतिबंध लगाना चाहा, तब महाप्रभु ने इसके विरोध में एक विशाल एवं शांतिपूर्ण नगर-संकीर्तन जुलूस निकाला। इतिहास का यह पहला बड़ा अहिंसक सत्याग्रह इतना प्रभावशाली था कि काजी को न केवल अपना आदेश वापस लेना पड़ा, बल्कि वह स्वयं भी महाप्रभु के अलौकिक व्यक्तित्व और भक्ति भाव का अनन्य प्रशंसक बन गया। चैतन्य महाप्रभु द्वारा दक्षिण के पावन तीर्थों से लेकर पश्चिम में द्वारका और उत्तर में श्रीधाम वृंदावन तक की गई अखिल भारतीय यात्रा ने उनके भक्तों को एकता के सूत्र में पिरोने का महान कार्य किया। उनकी इस व्यापक राष्ट्र-परिक्रमा अभियान ने प्रांतीयता, भाषाई संकीर्णता और स्थानीय भेदभाव के दीवारों को तोड़कर एक वृद्ध राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता का मार्ग प्रशस्त किया।

श्री चैतन्य चरितामृत में महाप्रभु श्री चैतन्य के विषय में कहा गया है—

"आपनि आचरि धर्म जीवेरे शिखाय।"

इसका मुख्य संदेश 'कथनी और करनी में समानता' है। इस महान उक्ति के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि प्रभु ने समाज को जिस प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलने का निर्देश दिया, स्वयं भी उसी आचरण को अपने जीवन में उतारकर दिखाया। संसार में उपदेश देने वाले तो बहुत हुए हैं, परंतु समाज पर वास्तविक प्रभाव उन्हीं का पड़ा जिन्होंने अपने उपदेशों को पहले स्वयं जिया। श्री महाप्रभु ने मध्यकालीन भारत में समाज को संकीर्णताओं से ऊपर उठाकर जिस निश्छल प्रेम, समानता और हरि-भक्ति का मार्ग दिखाया, उसे उन्होंने केवल शब्दों तक सीमित नहीं रखा; बल्कि संकीर्तन में अश्रु बहाकर और जाति-धर्म के भेद से परे दीन-दुखियों को गले लगाकर उस भक्ति को साक्षात जीवंत किया। यही कारण है कि उनका पूरा जीवन ही उनका सबसे बड़ा उपदेश बन गया।

आगे चलकर आधुनिक काल में, चैतन्य महाप्रभु की इसी भक्ति-परंपरा से अनुप्राणित होकर वर्ष 1966 ईस्वी में श्रील भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा "**अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ**" (इस्कॉन) की स्थापना की गई, जिसे बोलचाल की भाषा में 'हरे कृष्ण आंदोलन' भी कहा जाता है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों को वैदिक ज्ञान, कृष्ण-भक्ति और भगवद्गीता के शाश्वत सिद्धांतों से जोड़ना है।

इस प्रसंग में एक अत्यंत प्रेरणादायक घटना का उल्लेख करना उचित होगा। 1960 के दशक में, जब स्वामी श्रील प्रभुपाद अमेरिका (न्यूयॉर्क) की यात्रा पर थे और इस्कॉन (ISKCON) की स्थापना भी नहीं हुई थी, तब वहां 'हिप्पी आंदोलन' (Hippie Movement) अपने चरम पर था। श्रील प्रभुपाद न्यूयॉर्क के 'लोअर ईस्ट साइड' इलाके में एक साधारण से कमरे में रहते थे, जहां उनकी मुलाकात हिप्पियों से हुई। ये युवा अत्यंत दयनीय और गंदे तरीके से रहते थे, स्नान नहीं करते थे और घातक नशीले पदार्थों के आदी थे। दरअसल, उस समय की युवा पीढ़ी मुख्यधारा के समाज, युद्ध के दुष्परिणामों और अत्यधिक भौतिकवादी जीवन से निराश होकर नशे और एक भटकती हुई जीवनशैली में शांति की तलाश कर रही थी।

श्रील प्रभुपाद ने उन्हें कभी भी घृणा की दृष्टि से नहीं देखा; बल्कि उन्हें सम्मान दिया, अपने हाथों से बना हुआ प्रसाद खिलाया और अपने पास बैठने का स्थान दिया। उन्होंने बिना किसी भेदभाव के इन युवाओं को अपनी अपार करुणा, पवित्रता और 'हरे कृष्ण महामंत्र' की शक्ति से सराबोर कर दिया, जिसने उनके जीवन को पूरी तरह से बदल कर रख दिया। जो हिप्पी नशीली वस्तुओं में झूठी शांति ढूंढ रहे थे, उन्हें श्रील प्रभुपाद ने श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा दिखाए गए प्रेम और भक्ति मार्ग से जोड़कर, अलौकिक आध्यात्मिक आनंद तथा शाश्वत शांति का अनुभव कराया। प्रभुपाद के इस निरंतर प्रयास से न केवल वे हिप्पी एक अच्छे इंसान बने, बल्कि सरकार और सिविल सोसाइटी (जो पहले उनकी हरकतों से परेशान रहती थी) भी उन्हें सम्मान की नजर से देखने लगी। इस अद्भूत रूपांतरण के बाद, उन उपद्रवी हिप्पियों को शांत, सौम्य और सदैव प्रसन्नचित्त देखकर लोग उन्हें 'हैप्पी' (Happies) कहकर संबोधित करने लगे। यह घटना हमें भक्ति मार्ग का अनुसरण करने का एक ठोस कारण देती है—जो कि समाज में वास्तविक शांति, आध्यात्मिक चेतना का विस्तार और नैतिक मूल्यों की स्थापना है। यह संस्था आज भी अत्यंत व्यापकता के साथ सनातन भारतीय सोच—'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के मूल सिद्धांत पर कार्य कर रही है। अतः यह कहना सर्वथा उचित होगा कि भक्ति आंदोलन आज भी जारी है, जो देश और काल की सीमाओं को तोड़कर वैश्विक स्तर पर जनमानस को एक सकारात्मक आध्यात्मिक दिशा प्रदान कर रहा है।

अंततः, महाभारत के 'यक्ष-युधिष्ठिर संवाद' के एक अत्यंत प्रसिद्ध श्लोक को उद्त करना प्रासंगिक होगा—"**धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पन्थाः।**" अर्थात्, धर्म का रहस्य अत्यंत गूढ़ है और यह साधारण मनुष्य की बुद्धि से परे है; इसीलिए जिस मार्ग पर महान और ज्ञानी पुरुष (ऋषि, मुनि और सत्य के मार्गदर्शक) चले हों, हमें भी उसी का अनुसरण करना चाहिए। आज के वर्तमान समय में भी यदि हम इन महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलें और उनके उपदेशों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारें, तो न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन सुंदर होगा, बल्कि हमारा समाज भी एक बेहतर दिशा में आगे बढ़ेगा। इससे पूरे देश और विश्व में एक आनंदमय वातावरण का निर्माण होगा।

इसी प्रकार से, मध्यकालीन भारत **का** भक्ति आंदोलन केवल एक धार्मिक पुनर्जागरण ही नहीं, **बल्कि उसके** साथ-साथ एक महान सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति भी थी, जिसने समाज के सामने धर्म और आध्यात्मिकता का एक **मानवीय** मार्ग प्रस्तुत किया।

भारत में महिलाओं की स्थिति: इतिहास, कानून, चुनौतियाँ और भविष्य



श्री गोविंद कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

"औरत महज़ हाड़-मांस का पुतला नहीं, वह इस सृष्टि की सबसे सुंदर और मुकम्मल कृति है।" छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ भारतीय मानस में नारी के प्रति गहरे आदर और संवेदनशीलता को व्यक्त करती हैं। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश है, जिसे हम 'माता' का दर्जा देते हैं। हमारे यहाँ ज्ञान, समृद्धि और शक्ति की अधिष्ठात्री देवियों के रूप में हमेशा से नारीत्व की पूजा की जाती रही है। परंतु इस दार्शनिक और आध्यात्मिक गौरव के समानांतर हमारे समाज का एक दूसरा और कड़वा व्यावहारिक सच भी है। सदियों से भारतीय महिलाओं ने पितृसत्तात्मक बंधनों, सामाजिक रूढ़ियों और लैंगिक असमानता का दंश झेला है। आज 21वीं सदी का भारत एक अजीब से चौराहे पर खड़ा दिखाई देता है। एक तरफ हमारी महिला वैज्ञानिक अंतरिक्ष अभियानों का सफल संचालन कर रही हैं, तो दूसरी तरफ समाज के एक बहुत बड़े हिस्से में महिलाओं की बुनियादी सुरक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समानता आज भी एक अधूरी लड़ाई बनी हुई है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय इतिहास के पन्नों को पलटें तो महिलाओं की सामाजिक स्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रही, इसमें लगातार बड़े उतार-चढ़ाव आए हैं। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ और सम्मानित मानी जाती थी। उन्हें शिक्षा का पूरा अधिकार था और वे धार्मिक अनुष्ठानों में बराबर की भागीदार होती थीं। गार्गी, मैत्रेयी और अपाला जैसी विदुषी महिलाओं ने अपनी बुद्धिमत्ता से शास्त्रों में पुरुषों के साथ शास्त्रार्थ किया। उस प्राचीन काल में बाल विवाह या सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियाँ मौजूद नहीं थीं।

परंतु, मध्यकाल आते-आते स्थितियां पूरी तरह बदल गईं। विदेशी आक्रमणों और सामंतवादी व्यवस्था के मजबूत होने के साथ महिलाओं की स्थिति में भारी गिरावट आई। सुरक्षा और मर्यादा के नाम पर उन पर कई तरह की पाबंदियाँ लगा दी गईं। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, जौहर और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाएँ इसी दौर में समाज का हिस्सा बन गईं। महिलाओं को घर की चहारदीवारी के भीतर कैद कर दिया गया और उन्हें पुरुषों पर आश्रित मान लिया गया। इसके बाद 19वीं सदी में राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले जैसे समाज सुधारकों ने इस व्यवस्था के खिलाफ एक लंबा संघर्ष छेड़ा। सती प्रथा उन्मूलन अधिनियम (1829) और हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (1856) जैसे ऐतिहासिक कानूनों ने समाज में एक बड़े बदलाव की नींव रखी।

संवैधानिक अधिकार और क़ानूनी सुरक्षा

1947 में जब देश आजाद हुआ, तो हमारे संविधान निर्माताओं ने महिलाओं को पुरुषों के बिल्कुल समान अधिकार देकर एक नई कानूनी क्रांति की शुरुआत की। संविधान का अनुच्छेद 14 और 15 हर नागरिक को कानून के समक्ष समानता की गारंटी देता है और लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है। इसी तरह, अनुच्छेद 15(3) राज्य को यह विशेष शक्ति देता है कि वह महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए सकारात्मक कदम या विशेष प्रावधान (जैसे आरक्षण) लागू कर सके। अनुच्छेद 21 के तहत प्रत्येक महिला को सम्मान के साथ जीने का मौलिक अधिकार मिला है, जबकि अनुच्छेद 39(डी) पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए 'समान काम के लिए समान वेतन' सुनिश्चित करने की बात करता है।

इन संवैधानिक प्रावधानों को जमीनी स्तर पर प्रभावी बनाने के लिए हमारी संसद ने समय-समय पर कई कड़े कानून भी पारित किए हैं। उदाहरण के लिए, 'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम (2005)' महिलाओं को घर की चारदीवारी के भीतर होने वाले शारीरिक और मानसिक शोषण से बचाता है। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए 'पॉक्स कानून (POSH Act, 2013)' बनाया गया, जिसके तहत हर संस्थान में एक आंतरिक शिकायत समिति का होना अनिवार्य है। इसके अलावा, दहेज प्रतिषेध अधिनियम (1961) और नाबालिग बच्चियों की सुरक्षा के लिए बनाया गया पॉक्सो अधिनियम (2012) महिलाओं को एक मजबूत सुरक्षा कवच प्रदान करते हैं।

न्यायपालिका कि भूमिका और फैसले

भारत की न्यायपालिका ने भी अपने प्रगतिशील और ऐतिहासिक फैसलों के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों को हमेशा मजबूत किया है। इस दिशा में सबसे पहला और बड़ा कदम 'विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997)' का मामला था। इस केस में सुप्रीम कोर्ट ने कार्यस्थल पर काम करने वाली महिलाओं को यौन उत्पीड़न से बचाने के लिए 'विशाखा गाइडलाइंस' जारी कीं, जिसने आगे चलकर 2013 के सख्त कानून का रूप लिया।

इसी तरह, साल 2017 का 'सायरा बानो बनाम भारत संघ' का मामला भी बेहद महत्त्वपूर्ण है, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने 'एक बार में तीन तलाक' (तलाक़-ए-बिद्त) की प्रथा को पूरी तरह असंवैधानिक और अवैध घोषित कर दिया। इससे मुस्लिम महिलाओं को एक बड़ी सामाजिक और वैधानिक सुरक्षा मिली। संपत्ति के अधिकारों की बात करें तो 'विनीत शर्मा बनाम राकेश शर्मा (2020)' के मामले में कोर्ट ने यह साफ कर दिया कि बेटियों को भी बेटों की तरह पिता की पैतृक संपत्ति में जन्म से ही बराबर का अधिकार है।

राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका

महिलाओं के इन संवैधानिक और कानूनी अधिकारों की जमीन पर निगरानी करने के लिए जनवरी 1992 में 'राष्ट्रीय महिला आयोग' का गठन एक स्वायत्त वैधानिक निकाय के रूप में किया गया था। यह आयोग समाज में महिलाओं के हितों की रक्षा करने वाले एक सजग प्रहरी की तरह काम करता है। इसका मुख्य काम महिलाओं से जुड़े मौजूदा कानूनों की समीक्षा करना और उनमें जरूरी सुधारों के लिए सरकार को सीधे सिफारिशें भेजना है।

इसके साथ ही, देश के किसी भी हिस्से से जब घरेलू हिंसा, उत्पीड़न या अधिकारों के हनन की शिकायतें आयोग के पास पहुँचती हैं, तो यह उन पर तुरंत संज्ञान लेता है और स्थानीय पुलिस व प्रशासन को कार्रवाई के निर्देश देता है। कई बार गंभीर मामलों में आयोग किसी औपचारिक शिकायत का इंतजार नहीं करता, बल्कि मीडिया या सोशल मीडिया की खबरों के आधार पर खुद (स्वतः संज्ञान लेकर) मामले की जांच शुरू कर देता है।

प्रेरणादायक जीवन-वृत्त

भारतीय महिलाओं की इस यात्रा को हम उन प्रेरणादायक व्यक्तित्वों के बिना नहीं समझ सकते, जिन्होंने समाज की बंदिशों को तोड़कर इतिहास रचा। इनमें पहला नाम डॉ. आनंदीबाई जोशी का आता है। 19वीं सदी के उस दौर में जब लड़कियों का घर से निकलना भी गुनाह माना जाता था, उन्होंने समाज के भारी विरोध और गंभीर अस्वस्थता के बावजूद अमेरिका जाकर चिकित्सा (Medical) की पढ़ाई पूरी की और भारत की पहली महिला डॉक्टर बनीं।

दूसरा बड़ा उदाहरण किरण बेदी का है। एक ऐसे दौर में जब पुलिस बल को पूरी तरह पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था, वे भारत की पहली महिला आईपीएस (IPS) अधिकारी बनीं। उन्होंने न केवल कानून व्यवस्था को कड़ाई से संभाला, बल्कि दिल्ली की तिहाड़ जेल में जो क्रांतिकारी सुधार किए, वे आज भी दुनिया भर के प्रशासनिक पाठ्यक्रमों में एक मिसाल के तौर पर पढ़ाए जाते हैं। इन महिलाओं ने यह साबित किया कि हौसला हो तो रास्ते अपने आप बन जाते हैं।

ग्रामीण बनाम शहरी महिलाओं की स्थिति

आज के भारत में महिलाओं की स्थिति को हम किसी एक नजरिए से नहीं देख सकते क्योंकि ग्रामीण और शहरी परिवेश की वास्तविकताओं में जमीन-आसमान का अंतर है। शहरों में रहने वाली महिलाओं के पास उच्च शिक्षा, तकनीकी कोर्सेज और रोजगार के बेहतरीन अवसर मौजूद हैं। वे कॉर्पोरेट, आईटी, बैंकिंग और सिविल सर्विसेज जैसे क्षेत्रों में बड़े पदों पर काम कर रही हैं और आर्थिक रूप से पूरी तरह आत्मनिर्भर हैं।

इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों का परिदृश्य आज भी काफी अलग है। वहाँ शिक्षा के संसाधनों की कमी के कारण लड़कियों की स्कूल छोड़ने (ड्रॉपआउट) की दर बहुत ज्यादा है। ग्रामीण महिलाएं खेतों में या असंगठित क्षेत्रों में पुरुषों से ज्यादा कठिन शारीरिक श्रम करती हैं, लेकिन उनके इस काम को न तो आर्थिक पहचान मिलती है और न ही परिवार के वित्तीय फैसलों में उनकी कोई राय ली जाती है। इसके अलावा, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण वे आज भी कुपोषण और एनीमिया (खून की कमी) जैसी बीमारियों से सबसे ज्यादा जूझ रही हैं।

वर्तमान समय कि उपलब्धियां और आधुनिक चुनौतियाँ

सकारात्मक पक्ष को देखें तो राजनीतिक क्षेत्र में भारत को इंदिरा गांधी के रूप में पहली महिला प्रधानमंत्री और प्रतिभा पाटिल व द्रौपदी मुर्मू के रूप में महिला राष्ट्रपति मिलीं। हाल ही में पारित हुए 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' ने संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% सीटें आरक्षित करके उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व को एक नई दिशा दी है। खेल के मैदान में पी.वी. सिंधु, मैरी कॉम और मीराबाई चानू जैसी बेटियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन किया है।

लेकिन इन शानदार उपलब्धियों के पीछे 21वीं सदी की कुछ नई और गंभीर चुनौतियाँ भी खड़ी हो गई हैं। आज इंटरनेट के इस दौर में महिलाएं साइबर स्टॉकिंग, ऑनलाइन ट्रोलिंग और 'डीपफेक' (Deepfake) जैसी खतरनाक एआई तकनीकों का शिकार हो रही हैं, जो सीधे उनकी निजता और मानसिक स्वास्थ्य पर चोट करता है। इसके अलावा, कामकाजी महिलाओं पर आज 'दोहरे बोझ' (Double Burden) का भारी दबाव है; उन्हें दफ्तर में भी खुद को साबित करना होता है और घर लौटने के बाद परिवार व बच्चों की जिम्मेदारी भी अकेले ही संभालनी पड़ती है। इसी सामाजिक दबाव के कारण कई महिलाएं करियर के बीच में ही पीछे छूट जाती हैं।

समाधान और आगे की राह

सरकार ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'उज्ज्वला योजना' और 'सुकन्या समृद्धि योजना' जैसी कई बेहतरीन योजनाएं चलाई हैं, लेकिन केवल योजनाएं और कड़े कानून बनाने से समाज नहीं बदलेगा। सबसे बड़ा और जरूरी बदलाव हमें अपने परिवारों की मानसिकता में लाना होगा। हमें अपने बेटों को बचपन से ही महिलाओं का सम्मान करना और घरेलू जिम्मेदारियों को साझा करना सिखाना होगा। इसके साथ ही, हमारी न्यायिक व्यवस्था में सुधार होना चाहिए ताकि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों का निपटारा फास्ट-ट्रैक अदालतों में जल्द से जल्द हो सके और अपराधियों के मन में कानून का डर पैदा हो। कार्यस्थलों पर भी सुरक्षित माहौल, डे-केयर (क्रेच) की सुविधा और लचीले काम के घंटे मिलने चाहिए ताकि महिलाएं बिना किसी डर या मजबूरी के काम कर सकें।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहें तो, भारत में महिलाओं की स्थिति आज एक बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही है। किसी भी देश की वास्तविक प्रगति इस बात से नहीं आंकी जा सकती कि वहाँ की गगनचुंबी इमारतें कितनी ऊंची हैं, बल्कि इस बात से आंकी जाती है कि वहाँ की आधी आबादी खुद को कितनी स्वतंत्र और सुरक्षित महसूस करती है। स्वामी विवेकानंद ने बिल्कुल सच कहा था कि **जिस प्रकार एक पक्षी केवल अपने एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र अपनी महिलाओं की स्थिति को सुधारे बिना तरक्की की उड़ान नहीं भर सकता।**

वैश्विक संकट, आर्थिक प्रभाव और भारत के कदम : एक नीतिगत विश्लेषण



श्री गोविंद कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

21 वीं सदी का तीसरा दशक पूरी दुनिया के लिए असाधारण चुनौतियों का दौर साबित हुआ है। पहले कोरोना महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में डाल दिया और उसके बाद रूस-यूक्रेन युद्ध, इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष तथा अमेरिका-ईरान तनाव ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और व्यापार व्यवस्था को अस्थिर कर दिया। इन घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि आज की दुनिया केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा, तकनीक और सामरिक दृष्टि से भी एक-दूसरे पर अत्यधिक निर्भर हो चुकी है।

भारत जैसे विकासशील और तेजी से उभरते देश के लिए ये संकट केवल अंतरराष्ट्रीय घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि इनका सीधा प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था, महंगाई, व्यापार, रोजगार और आम नागरिकों के जीवन पर पड़ता है। वैश्विक बाजार में तेल की कीमतों में बढ़ोतरी, सप्लाई चेन में व्यवधान और विदेशी निवेश में अनिश्चितता ने भारत के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी की हैं।

हालाँकि, इन संकटों ने भारत के लिए कई अवसर भी पैदा किए हैं। भारत ने अपनी संतुलित विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक प्रबंधन के माध्यम से न केवल इन परिस्थितियों का सामना किया, बल्कि स्वयं को एक विश्वसनीय वैश्विक शक्ति के रूप में भी स्थापित किया है।

वैश्विक संकटों का स्वरूप और उनके कारण

कोरोना महामारी आधुनिक इतिहास की सबसे बड़ी स्वास्थ्य आपदाओं में से एक थी। लॉकडाउन के कारण दुनिया भर के उद्योग, परिवहन और व्यापार लगभग ठप हो गए। उत्पादन रुक गया, रोजगार कम हो गया और वैश्विक अर्थव्यवस्था मंदी की ओर चली गई। भारत में भी लाखों लोगों की नौकरियाँ प्रभावित हुईं और आर्थिक विकास दर में भारी गिरावट दर्ज की गई।



इसके बाद रूस-यूक्रेन युद्ध ने पूरी दुनिया को नई आर्थिक चुनौतियों के सामने ला खड़ा किया। रूस ऊर्जा संसाधनों का बड़ा निर्यातक है जबकि यूक्रेन खाद्यान्न उत्पादन के लिए महत्त्वपूर्ण देश माना जाता है। युद्ध और पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण तेल, गैस और गेहूँ की वैश्विक आपूर्ति प्रभावित हुई, जिससे अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें तेजी से बढ़ीं।

मध्य-पूर्व में इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष ने भी वैश्विक व्यापार व्यवस्था को प्रभावित किया। लाल सागर क्षेत्र में बढ़ते तनाव और हूती विद्रोहियों द्वारा जहाजों पर हमलों के कारण स्वेज नहर मार्ग असुरक्षित हो गया। इससे माल ढुलाई का समय और लागत दोनों बढ़ गए।

अमेरिका और ईरान के बीच लगातार बढ़ता तनाव भी विश्व अर्थव्यवस्था के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। हॉर्मुज जलडमरूमध्य से दुनिया के बड़े हिस्से का तेल परिवहन होता है। इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार का तनाव तेल बाजार को तुरंत प्रभावित करता है और इसका असर भारत जैसे आयात-निर्भर देशों पर साफ दिखाई देता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

इन सभी संकटों का सबसे बड़ा प्रभाव वैश्विक सप्लाई चेन पर पड़ा। उद्योगों को कच्चे माल की कमी का सामना करना पड़ा और अंतरराष्ट्रीय व्यापार महँगा हो गया। जहाजों को लंबा रास्ता तय करना पड़ा, जिससे माल ढुलाई लागत कई गुना बढ़ गई। ऊर्जा और खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि के कारण दुनिया भर में महंगाई बढ़ी। महंगाई को नियंत्रित करने के लिए अमेरिका और यूरोप के केंद्रीय बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ाईं। इससे निवेश कम हुआ और वैश्विक आर्थिक विकास धीमा पड़ गया।रूस और बेलारूस से उर्वरकों की आपूर्ति प्रभावित होने के कारण कृषि लागत बढ़ी और कई विकासशील देशों में खाद्य संकट जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने खाद्य सुरक्षा को गंभीर वैश्विक चुनौती बताया।

भारत पर आर्थिक प्रभाव

भारत पर इन वैश्विक संकटों का गहरा प्रभाव पड़ा। तेल की कीमतों में वृद्धि से भारत का आयात बिल बढ़ा और चालू खाता घाटे पर दबाव बना। चूँकि भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है, इसलिए वैश्विक बाजार में तेल महँगा होने का सीधा असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। महँगे ईंधन के कारण परिवहन और उत्पादन लागत बढ़ी, जिससे घरेलू बाजार में महंगाई बढ़ी।



आम जनता के लिए खाद्य पदार्थों और आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आई।

वैश्विक अनिश्चितता के कारण विदेशी निवेशकों ने सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर रुख किया। इससे भारतीय बाजार से पूंजी निकासी हुई और रुपये पर दबाव बढ़ा। लाल सागर संकट और बढ़ती माल ढुलाई लागत का असर भारतीय निर्यातकों पर भी पड़ा। कपड़ा, इंजीनियरिंग और अन्य निर्यात क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा प्रभावित हुई। हालाँकि, इन संकटों के बीच भारत के सामने कई अवसर भी आए। भारत ने रूस से रियायती दरों पर कच्चा तेल खरीदकर ऊर्जा लागत को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की। इससे देश को आर्थिक राहत मिली। दुनिया की कई कंपनियाँ अब चीन पर अत्यधिक निर्भरता कम करना चाहती हैं। "चाइना प्लस वन" रणनीति के तहत भारत ने इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल निर्माण और फार्मा क्षेत्रों में निवेश आकर्षित किया है। भारत ने डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए स्थानीय मुद्रा में व्यापार को भी बढ़ावा दिया है। रुपया-रूबल और रुपया-दिरहम व्यापार व्यवस्था इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

भारत द्वारा उठाए गए कदम



भारत ने ऊर्जा सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए रूस सहित कई देशों से तेल आयात बढ़ाया और ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण किया। साथ ही रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को मजबूत करने की दिशा में भी कार्य किया गया। भारतीय रिजर्व बैंक ने महंगाई को नियंत्रित करने के लिए रेपो रेट में वृद्धि की और विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग कर रुपये को अत्यधिक कमजोर होने से बचाने का प्रयास किया। सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर उत्पाद शुल्क में कटौती की तथा किसानों के लिए उर्वरक सब्सिडी बढ़ाई ताकि आम जनता और कृषि क्षेत्र को राहत मिल सके। घरेलू खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर गेहूँ, चावल और अन्य खाद्यान्नों के निर्यात पर नियंत्रण लगाया गया। भारत ने संकटग्रस्त देशों से अपने नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए कई सफल अभियान भी चलाए। "वंदे भारत मिशन", "ऑपरेशन गंगा" और "ऑपरेशन अजय" भारत की मानवीय और कूटनीतिक क्षमता के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।

आगे का रास्ता

भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना होगा। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को बढ़ाकर ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी ताकि वैश्विक संकटों के समय देश पर अधिक दबाव न पड़े। भारत को सेमीकंडक्टर, रक्षा उत्पादन और फार्मास्युटिकल क्षेत्रों में घरेलू उत्पादन बढ़ाने पर भी जोर देना चाहिए। इससे सप्लाई चेन मजबूत होगी और आयात पर निर्भरता कम होगी। वैकल्पिक व्यापार मार्गों जैसे IMEC और INSTC को विकसित करना भी आवश्यक है ताकि संवेदनशील समुद्री मार्गों पर निर्भरता कम हो सके। कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाकर खाद्य तेल और दालों के घरेलू उत्पादन में वृद्धि करनी होगी, जिससे आयातित खाद्य मुद्रास्फीति से बचा जा सके।

निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि दुनिया अब केवल आर्थिक प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता का युग बन चुकी है। कोरोना महामारी, रूस-यूक्रेन युद्ध और मध्य-पूर्व के संकटों ने यह साबित किया कि किसी भी देश की वास्तविक शक्ति उसकी मजबूत अर्थव्यवस्था, विश्वसनीय सप्लाई चेन और रणनीतिक स्वतंत्रता में निहित होती है। भारत ने इन कठिन परिस्थितियों में संतुलित विदेश नीति, प्रभावी आर्थिक प्रबंधन और दूरदर्शी रणनीति के माध्यम से स्वयं को एक स्थिर और भरोसेमंद शक्ति के रूप में स्थापित किया है।

यदि भारत ऊर्जा आत्मनिर्भरता, मजबूत विनिर्माण, कृषि सुधार और वैश्विक आर्थिक कूटनीति पर लगातार ध्यान देता है, तो आने वाले समय में वह न केवल इन संकटों का सफलतापूर्वक सामना करेगा बल्कि विश्व अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख शक्ति के रूप में भी उभरेगा।

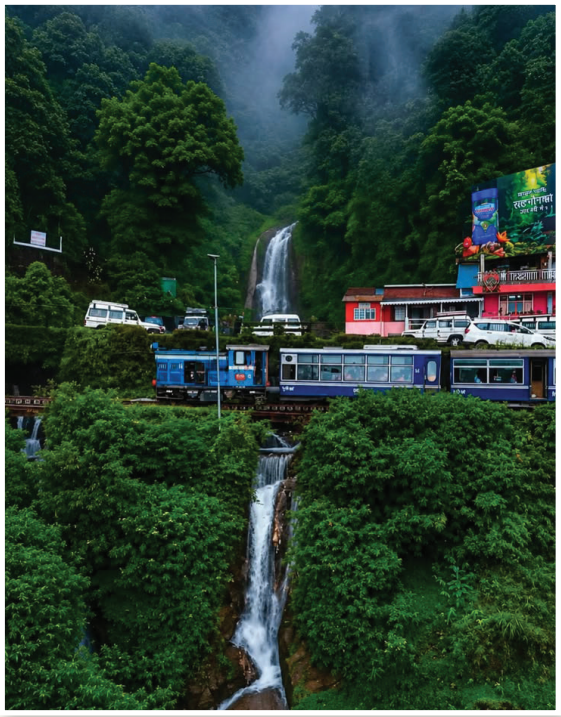
दार्जिलिंग की यात्रा



श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

अखबारों से पता चला कि रांची से अलीपुरद्वार तक के लिए एक सप्ताहिक ट्रेन शुरू की गई है, कुछ दिनों बाद इसे कामख्या तक बढ़ा दी गई। बचपन से ही हिल स्टेशन के नाम पर दार्जिलिंग का नाम सुनते आ रहे थे। अत: दार्जिलिग घुमने की हसरत पूरी करने के लिए योजना बनाई जाने लगी। पत्रिकाओं के पर्यटन विशेषांक खोजे जाने लगे। पता चला दार्जिलिंग के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन न्यू जलपाईगुड़ी या सिलीगुड़ी है, वहाँ से टॉय ट्रेन या सड़क मार्ग से दार्जिलिंग पहुंचा जा सकता है। हमने अप्रैल के पहले सप्ताह ही सिलीगुड़ी तक के लिए आने-जाने की टिकटेंआरक्षित करवा ली।

कामख्या एक्सप्रेस रांची से प्रत्येक बुधवार को रात 8:25 में खुलती है एवं अगले दिन दोपहर 1:00 बजे सिलीगुड़ी पहुंचती है। अतः हमने सफर में खाने के लिए कुछ सूखे नाश्ते रख लिए, गर्म कपड़े भी रख लिये। 18 मई 2011 को हम रात्रि आठ बजे ही रांची स्टेशन पहुंच गये, कुछ देर में ही ट्रेन प्लेटफार्म पर आ गई। हम अपने-अपने सीट पर बैठ गये, सामानों को सीट के नीचे रखकर चेन से ताला लगाकर सुरक्षित कर लिए।



चूँकि ट्रेन रांची स्टेशन से ही खुलती है। अत: धीरे-धीरे यात्रियों का सामानों के साथ बोगी में पदार्पण होने लगा। हमारी सीट के आगे-पीछे एवं बगल के सीटों पर तीन परिवार आ गये। पुरुष यात्री सामानों को व्यवस्थित करने में लगे थे तो महिलाएं सीटों को जांचने परखने में। उनलोगों के बात-चीत से पता चल रहा था कि तीन मित्र परिवार अपने बच्चों के साथ घुमने जा रहे हैं। बच्चों के मैट्रिक-इंटर के रिजल्ट निकल चुके थे और इसी बारे में बातें हो रही थी। ट्रेन अपने नियत समय पर चल पड़ी। लोग अपने-अपने सीटों पर बैठ चुके थे। नौ बजते-बजते पुरुष यात्री अपने-अपने बर्थों पर पसरने को तैयार होने लगे। हमारे सामने की यात्री मित्र परिवार जनों ने रात के भोजन का पिटारा खोला। महिलाएं भोजन सामग्री अपने पतियों और बच्चों को थमाने लगी। पुरुष अपनी मंडली में, बच्चे अपने साथियों के साथ और महिलाऐं सबको खाना देने के बाद खुद मिल बांटकर खाने लगी।

मैं अपने साथ बैठी उनके ग्रुप की बच्ची के साथ बात करने लगी, पता चला वे रांची के हरमू हाऊसिंग कॉलोनी के रहने वाले हैं, गर्मियों की छुट्टी में वे दार्जिलिंग जा रहे हैं। साढ़े दस बजे के आस-पास हम भी सोने की तैयारी में लग गये। स्लीपर कोच था, मेरा बीच का बर्थ था, रात शायद बारिश हुई थी अत: ठण्ड लगने लगी, मैंने चादर ओढ़ ली, सामने के बर्थ पर बीच के स्टेशन से चढ़ी महिला भी चादर ओढ़कर सोयी हुई थी। सुबह मेरी नींद चार-साढ़े चार बजे के करीब टूट गयी, मैं फौरन अपने नित्य कर्म से निबटकर दोबारा अपने बर्थ पर लेट गयी। देखा एक-दो करके यात्री जागने लगे थे और अपने-अपने गन्तव्य को तैयार हो रहे थे। किसी को टॉयलेट जाना था, किसी को ब्रश करना था, किसी का स्टेशन आने वाला था। चाय वाले भी अपने काम में पूरी तरह से मुस्तैद थे। देखा कि नीचे बर्थ पर सोया यात्री उतर चूका था। अत: मैंने भी अपना बीच वाला बर्थ नीचे उतार दिया और आराम से खिड़की के पास बैठकर नजारे देखने लगी। स्टेशन आते गये, लोग उतरते गये, चढ़ते गये, यही सब देखते-देखते हम भी अपना सुबह का नाश्ता बगैरह कर लिये। दिन चढ़ने लगा, गर्मी बढ़ने लगी, ट्रेन भी लेट होने लगी। दोपहर बारह-साढ़े बारह बजे के करीब ट्रेन न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पहुंची, अधिकतर यात्री यहीं उतर गये, बहुत ही भीड़-भाड़ वाला स्टेशन था। इसका अगला स्टेशन सिलीगुड़ी था। अत: हमने अपने सामानों को सीट के नीचे से निकाला, चप्पल-जूते सहेजे, चादर वगैरह समेटे और ट्रेन रुकने का इंतजार करने लगे। अंतत: हम सिलीगुड़ी पहुंच गये।

अपने सामानों को लेकर हम बाहर निकले ही थे कि टूर एंड ट्रेवल्स वाले हमें घेर लिए और अपने-अपने पैकेज वाले पम्पलेट दिखाते हुए हमारे पीछे पड़ गये। मेरे पति अपनी सूझ-बूझ दिखाते हुए एक ऑटो वाले से बात की और हम सिलीगुड़ी में होटल ढूढ़ने निकल पड़े। एकाध होटल देखने के बाद एक फाइनल किया और हमने चेक-इन की औपचारिकता पूरी की और कमरे में दाखिल हो गये। वहां नहा-धोकर फ्रेश हुए, वहीं खाना मंगवाया और आराम किये। शाम को शहर देखने निकल पड़े। शहर देखने के बाद समझ आया कि सिलीगुड़ी को मिनी कोलकाता क्यों कहा जाता है। होटल के मैनेजर से बातचीत के क्रम में पता चला कि स्टेशन के पास से दार्जिलिंग के लिए सुबह छ: बजे से गाड़ी मिल जाती है। उसने भी दार्जिलिंग के एक-दो होटल के कार्ड थमा दिए। रात का खाना बाहर ही खाकर, अगले दिन के लिए कुछ खाद्य सामग्री लेकर हम होटल आ गये।

सुबह हम जल्दी ही उठ गये, नहा-धोकर, तैयार होकर, चेक-आउट क्लियर कर हम ऑटो से स्टेशन की तरफ निकल पड़े। स्टेशन के पास वाले पूल के पास कई गाड़ियाँ खड़ी थी, ऑटो चालक ने बताया यहाँ से गाड़ी मिल जायगी, एक मारुती वैन जाने के लिए तैयार खड़ी थी हमने ऑटो वाले को किराया दिया और उस वैन में चढ़ गये। वैन चालक नेपाली लग रहा था, शायद सामान लेकर आया था, वापस खाली लौट रहा था। अत: यात्री मिल जाने पर वह खुश था। वह बड़ी तत्परता से गाड़ी में पेट्रोल डलवाकर हमें ले चला। देखते-ही देखते शहर की आवासीय कॉलोनियों, चाय बागानों को पार कर हम पहाड़ी इलाके में पहुँच गये। सुनसान खाली रास्ता, न इधर से कोई गाड़ी, न ही उधर से कोई गाड़ी केवल हम ही चले जा रहे थे। पतली पगडंडी नुमा रास्ता और चढ़ान, एक तरफ पहाड़ तो दूसरी तरफ खाई। हम दिल थाम कर बैठे रहे। बेटा नजारा देखते हुए अचानक कहने लगा अगर हमारी गाड़ी नीचे गिर जाये तो?...मैंने तुरंत उसका मुंह बंद करते हुए कहा "शुभ-शुभ बोल बेटा, ऐसा नहीं बोलते...। रास्ते में कुछ ग्रामीण बूढ़ी महिलाएं दिखी जो शायद अपने रोजमर्रा के कामों में लगी हुई थीं। रास्ते भर हम डर के मारे बात-चीत भी नहीं कर रहे थे, न ही ड्राइवर से कोई बात कर रहे थे, हम नहीं चाहते थे कि ड्राईवर की एकाग्रता भंग हो। सिर्फ नजारा देख रहे थे..., ऊँचे-ऊँचे चीड़, देवदार के दरख्त। कहीं कोई घर दिखता तो वह देखने लायक होता। घर छोटा पर बहुत ही सुन्दर, छोटी-छोटो खिड़कियों पर सुन्दर परदे, सामने रंग-बिरंगे फूलों से भरे गमले। घूम पहुँचने के बाद ही हमारी साँस में साँस आई। आती-जाती गाड़ियाँ दिखने लगी। खैर ग्यारह बजते-बजते हम दार्जिलिंग पहूंच गये। टॉय ट्रेन के पड़ाव के पास ही हमें उतार दिया। वैन से उतरते ही बेटा ठंड से कांपने लगा, मैंने तुरंत सूटकेश से उसकी जैकट निकाली और पहना दी। पतिदेव वहीं आसपास होटल देखने निकलने ही वाले थे कि एक अधेड़ सा दिखनेवाला आदमी उनकी मंशा भांप उसे होटल दिखाने ले चला। मैं बेटे के साथ वहीं टॉय ट्रेन के स्टेशन पर सामानों के साथ बेंच पर बैठकर इंतजार करने लगी।



करीब दस मिनट बाद उसी आदमी के साथ पतिदेव वापस लौट और हम अपने सामानों के साथ होटल चले गये। कुछ नीचे की बीस-पच्चीस सीढ़ियाँ पार कर हम होटल के रिसेप्शन में पहुंचे, आवश्यक खानापूर्ति निबटाकर हमने कमरे में प्रवेश किया। किराया पांच सौ रूपये प्रतिदिन का था जिसमें सुबह की चाय बिस्किट, आठ बजे के करीब नाश्ता, दिन का खाना, शाम की चाय और रात का खाना भी शामिल था। नीचे बेसमेंट में किचन और डायनिंग हॉल था। कुछ देर आराम कर हमने लंच करने का निर्णय लिया और डायनिंग हॉल की तरफ चले गये। खाने में चावल, दाल, आलू-बैंगन की सब्जी, परवल की भुजिया, सलाद, पापड़ परोसे गये। खाना बड़ा स्वादिष्ट था, एकदम घर के खाने की तरह। मन तृप्त हो गया। एकाध घंटा आराम करने के बाद सोचा, पूरा आधा दिन हमारे पास है, चलो घूम आते हैं। बढ़िया ठंड थी। अत: हमने अपने साथ लाये थर्मोकोट इनर पहन लिए, मैंने एक शाल भी ओढ़ लिया और निकल पड़े दार्जिलिंग दर्शन करने। ऊपर सड़क पर काफी गाड़ियाँ लगी हुई थी, हमने एक गाड़ीवाले से बात की और उसपर सवार होकर निकल पड़े। उन्होंने हमें सबसे पहले पद्मजा नायडू हिमालयन जुलोजिकल पार्क ले गया, हल्की बूंदा-बंदी होने लगी, फिर भी सैलानियों की अच्छी-खासी भीड़-भाड़ थी। आसमान के बादल आस-पास मंडराते नजर आने लगे। चूँकि हम पहाड़ी पर थे, सफेद बादल के टुकड़े हमारे नजदीक से गुजरते दिख रहे थे। बड़ा ही मनोरम दृश्य था। हमने पूरे पार्क का अवलोकन किया। वहां से निकल कर हमें अगले पड़ाव पर ले जाया गया। हम हिमालयन पर्वतरोहण संस्थान गये, वहां स्थित संग्रहालय देखे जिसमें पर्वतरोहण में इस्तेमाल होने वाले सामानों को देखा, हिमालय पर्वतमाला की श्रेणियों की मॉडल रुपरेखा देखा।

वहां से निकल कर हमें चाय बागानों के तरफ ले जाया गया। हम बागान में कुछ दूर घूमें, फोटो वगैरह खींचे और बाहर स्थित चाय की दुकान में मुफ्त में चाय पिए। बड़ा ही स्वादिष्ट चाय था, मैंने बेटे को भी चाय की चुस्कियां लेने दी। इसके बाद हम वापस होटल आ गये। तब तक शाम हो चुकी थी। रात का डिनर वहीं होटल में किये। शाम को होटल मैनेजर सुबह के अरुणोदय देखने, टाइगर हिल जाने के लिए गाड़ी बुक करने की बात पूछने लगा। इसके लिए सुबह चार बजे निकलना होगा, उसने कहा। हमने मना कर दिया।

रात बारीश होने लगी। सुबह तीन बजे से ही दरवाजा खटखटाया जाने लगा, बारीश तब भी जारी थी, कंबल से निकलने को जी नहीं कर रहा था, बादल के कारण अरुणोदय का नजारा दिख भी पाएगा या नहीं कोई गारंटी नहीं थी। अत: हमने दोबारा से मना कर दिया। ठंड काफी थी। अत: हमने गीजर ऑन करवा लिया ताकि गर्म पानी से नहाना-धोना किया जा सके। सुबह छ: बजे कमरे में चाय-बिस्किट पहुंच गया। बारिश तब भी बदस्तूर जारी थी। हम कमरे की खिड़कियों से ही आसपास का नजारा देखने लगे। कुछ देर बाद मौसम साफ होने लगा। कमरे में ही नाश्ता आ गया। हम नाश्ता कर घूमने निकल गये। वहीं सड़क किनारे से गाड़ी ठीक किया और निकल पड़े।

सुबह का समय था। अत: गाड़ी चालक सह गाईड हमें एक प्रसिद्ध बौद्ध मठ ले गया। वहां काफी भीड़ थी, मानो कोई विशेष अनुष्ठान चल रहा हो, हमने भी दर्शन किये, वाकई कोई विशेष दिन था, हर उम्र के

बौद्ध भिक्षु एक ही तरह के वस्त्र में दिख रहे थे। घंटियों की ध्वनि से परिसर गुंजायमान था। हाँ, वह इक्कीस मई, बुद्ध पूर्णिमा का दिन था। फिर एक-दो संग्रहालय घुमे, उसके बाद हम मिरिक के लिए रवाना हुए। रास्ते में एक स्थान पर काफी गाड़ियाँ रुकी थी, हमारी गाड़ी भी रुकी ड्राईवर ने बताया इस पहाड़ के उस पार नेपाल है। हमने वहां से नेपाल की झलक ली। उस स्पॉट पर कुछ दुकानें थीं। हमने भी कुछ चौकलेट खरीदे और निकल पड़े। फिर एक जगह उसने गाड़ी रोकी और बतलाया कि यहाँ से कुछ देर के लिए नेपाल जा सकते है, खरीदारी कर सकते है, नेपाल के कर्मचारी तैनात है, उनसे अनुमति लेकर जाया जा सकता है। हम भी वहां उतरे, कर्मचारियों से बाते की, अनुमति मिली। वहां अनेक गाड़ियाँ लगी थी। उसने एक सौ रूपये में एक किलोमीटर आगे घुमाने की बात कही। हम उसपर सवार हो गये। सड़क के दोनों ओर दुकानें थी, हम दो-तीन दुकानों में गये, सामान देखे, दाम महंगे ही लगे। अत: कुछ खरदारी नहीं की। वापस आए और मिरिक के लिए रवाना हो गये।

पता चला मिरिक संतरों के बगानों के लिए प्रसिद्ध है। यह पहाड़ की तलहट्टी पर बसा है। पहाड़ से नीचे उतरते ही गर्मी का एहसास होने लगा। मौसम साफ था, कुछ ही देर में हम मिरिक झील के पास पहुंच गये, सड़क किनारे काफी गाड़ियाँ खड़ी थी। यह एक पिकनिक स्पॉट भी है। हम भी वहां आसपास घूमें, दोपहर का समय हो चला था। अत: वहीं रेस्टोरेंट में खाना खाया। वहां छोटी-मोटी दुकानें भी थीं। कुछ देर बाद हमें वापस लौटना था। अत: हम गाड़ी में सवार हो गये। चाय के बगानों में पत्तियां तोड़ती महिलाओं का झुण्ड दिखाई दिया, हम उनके भी फोटो लिए। रास्ते में ड्राईवर हमें एक अन्य स्पॉट पर ले गया, सुनसान रास्ता, इका-दुक्का गाड़ियाँ ही दिख रही थी। हम एक सरकारी गेस्ट हॉउस सदृश इमारत के परिसर पहुंचे। ऊँचे-ऊँचे चीड़ के पेड़ों से पूरा परिसर घिरा हुआ था, हम आस-पास घूमें, फोटो लिए और एक जगह सुस्ताने के लिए बैठ गये। जहाँ बैठे थे वहाँ घास के साथ कुछ लाल-लाल छोटे-छोटे फल दिखाई दिए, मैंने एक फल तोड़ा और गौर से देखने लगी। दिमाग की बत्ती जली..., अरे, यह तो जंगली स्ट्रॉबेरी है, मैंने चखा, वही स्वाद था। मैंने बेटे को पास बुलाया और उसे स्ट्रॉबेरी चखाया। हमने कुछ फल तोड़े और पास रख लिए। शाम हो चली थी। अत: हम वहां से प्रस्थान कर गये।

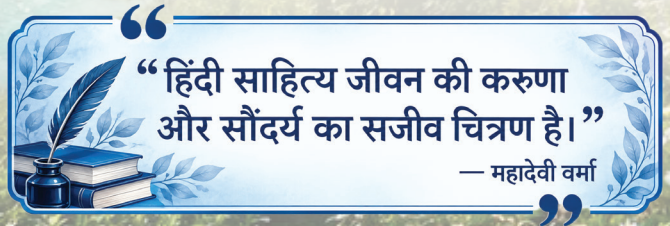
होटल में हम वापसी के बारे में चर्चा करने लगे, मैंने कहा जिस रास्ते से आए थे उस रास्ते से तो वापस नहीं जाना है, क्यों न एक दिन के लिए गंगटोक भी घूम लिया जाए, बस सहमति बन गई और हम अगले दिन गंगटोक (सिक्किम) जाने के संबंध में होटल के मैनेजर से जानकारियां लीं। उसने बतलाया, पास ही टैक्सी स्टैंड है, वहां से टैक्सी, टेकर मिल जायगी, उसने वहां के एक होटल का भी पता दिया।

अगले दिन नाश्ता वगैरह होटल में ही कर हम चेक आउट कर गये। बूंदा-बान्दी शुरू हो चुकी थी। स्थानीय अख़बार से पता चला कि स्थानीय संगठन द्वारा बंद का आह्वान किया गया है। सड़क पर लोग अपनी-अपनी छतरी लिए भीड़ इक्कट्ठा किये हुए थे। हम काफी देर तक जाम में फंसे रहे। किसी तरह हम धीरे-धीरे टैक्सी स्टैंड तक पहुंचने में कामयाब हुए। टैक्सी स्टैंड में गाड़ियाँ तो थी पर सन्नाटा पसरा था, पता करने पर मालूम हुआ कि एक गाड़ी गंगटोक के लिए जायेगी। काफी देर तक हम वहां गाड़ी में इंतजार करते रहे। अंतत: यात्रियों के भरने पर गाड़ी चल पड़ी। अधिकतर यात्री श्रमिक लग रहे थे, काम के सिलसिले में वे गंगटोक जा रहे थे।

घूम के बाद तीस्ता नदी के पूल को पार कर हम दायीं ओर मुड़े, बांयी ओर का रास्ता सिलीगुड़ी जाता है। बातों-बातों में पता चला कि आगे काफी चेकिंग होने वाली है। हमें अपने-अपने परिचय पत्र पास रख लेने की हिदायत मिली। चार-पांच जगह सीमा सुरक्षा बल द्वारा गाड़ी और यात्रियों की चेकिंग की गई, संतुष्ट होने पर हमें आगे बढ़ने मिला। रास्ते में हमें घरों के साथ लगे बगीचे भी देखने को मिले। घरों के सामने टेबल पर बगीचे में उपजाए गये सब्जियां जिनमें मूली, गाजर, शलगम थे, बिकने हेतु रखे थे। बंद का असर इधर भी देखने को मिला था, दुकानें बंद थी। चूँकि घरों के साथ ही दुकाने थीं। अत: दुकान की एक किवाड़ खुली थी। बच्चे, जवान, बूढ़े, महिलाएं सभी घर के सामने ही धूप सेंक रहे थे। बंद का असर उनके काम धंधे पर भी पड़ा था, लगता है सभी छुट्टी के मूड में थे।

शाम पांच बजे के करीब हम गंगटोक पहुँच गये। यहाँ होटलों के रेट काफी ज्यादा थे, आखिरकार हमने एक होटल फाइनल किया और चेक इन किया। दार्जिलिंग के अपेक्षाकृत गंगटोक का मौसम हल्की ठंढ़ वाला था। सामान वगैरह कमरे में रखकर हम घूमने निकल गये। ऑटो कर हम कुछ दूर पर महात्मा गाँधी रोड स्थित मॉल रोड गये। वहां सैलानियों की काफी भीड़ थी। सड़क के दोनों ओर दुकानें थी। काफी चहल पहल थी। वहां कुछ समय व्यतीत करने के बाद हम वापस होटल के पास आ गये। वहीं पास स्थित रेस्टोरेंट में रात का खाना खाया। होटल में स्वागत कक्ष में बैठी महिला ने हमसे बात-चीत की। बात-चीत के क्रम में जब हमने बताया कि हम क्रिकेटर धोनी के शहर रांची से हैं तो वह बहुत खुश हुई। उससे कमरे की चाबी लेकर हम दूसरे तल पर स्थित अपने कमरे में गये। होटल सैलानियों से पूरी तरह भरा हुआ था।

अगले दिन हम वापस सिलीगुड़ी के लिए निकलने वाले थे, सोचा फिर कभी सिक्किम घूम लिया जाएगा, फिलहाल इतना काफी है। सुबह आठ बजे हम ऑटो कर टैक्सी स्टैंड पहुंचे और सिलीगुड़ी के लिए रवाना हो गये। हमारी ट्रेन रात साढ़े नौ बजे की थी। अत: पूर्व की भांति हमने सिलीगुड़ी में होटल लिया, आराम किया, और रात नौ बजे स्टेशन आ गये। ट्रेन समय पर ही आ गई। अगले दिन हम रांची पहुँच गये। रांची पहुँचने पर पता चला कि यहाँ का मौसम भी बारिश की वजह से सुहावना हो गया था।



सेहत एवं जीवनशैली



श्री बृज नंदन कुमार
(द्वारा - श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

गौर किया जाए तो हमारी जीवन शैली (लाइफस्टाइल) ग्रामीण एवं शहरी दो अलग-अलग परिवेशों पर निर्भर करती है। ग्रामीण एवं शहरी जीवनशैली के स्तर में जमीन-आसमान का अंतर देखा या पाया जाता है। गतिविधियाँ, कार्य की प्रकृति, दिनचर्या, रहन-सहन, खान-पान आदि में काफी अंतर है। और यही अंतर सेहत पर अलग-अलग प्रभाव डालते हैं।

चूँकि दोनों परिवेशों में काफी असमानताएँ होने के कारण उनका तुलनात्मक विश्लेषण करने पर हमारा मूल विषय काफी व्यापक एवं विस्तृत हो जाएगा, जो सम्भव तो है किन्तु हम यहाँ विशेषकर शहरी परिवेश को मद्देनजर रखते हुए जीवनशैली और सेहत पर चर्चा करने जा रहे हैं।

आधुनिकता के दौर में आज की बदलती जीवनशैली, तेज रफ्तार जिंदगी, काम का दबाव, डिजिटल निर्भरता, अनिंद्रा, तनाव, अकेलापन आदि जैसे कारक आदमी से उसकी स्वभाविक दिनचर्या को छीन रहे हैं, जो गंभीर स्वास्थ्य समस्या को जन्म दे रहा है।

सेहत में गिरावट चिंता और चिंतन का विषय है। आमतौर पर जब शरीर स्वास्थ्य के अनुकूल होता है तो व्यक्ति लापरवाह होता है, प्रतिकूल होने पर ही फिक्रमंद होता है। हम अच्छी सेहत की चर्चा तो अक्सर करते है, किन्तु हमारी प्राथमिकता नहीं बन पाता, जब तक कि हमारे शरीर में ऐसी कोई समस्या नहीं आ जाती जो हमारे नियन्त्रण से बाहर हो।



शहरी जीवनशैली में मधुमेह, कब्ज, एसिडिटी, जलन, घुटनों का दर्द, किडनी रोग, हृदय रोग, रक्त चाप, मानसिक तनाव जैसी अन्य असंक्रामक बीमारियाँ निष्क्रिय जीवनशैली और खान-पान की गलत आदतों की पैदाइश है, जो आज आम स्वास्थ्य समस्या बनती जा रही है। हाल के कुछ वर्षों में, विशेषकर युवाओं में, सुबह के नाश्ते से लेकर रात के खाने तक फ़ास्ट फूड, जंक फूड, डिब्बा बंद भोजन, पैकेट जूस, प्रोसेस्ड फूड, तला-भुना व्यंजन उनके थाली में नजर आने लगे हैं। ऑनलाइन होम डिलीवरी सुविधा पर निर्भरता बढ़ी है, जो शहरी लाइफस्टाइल का हिस्सा बनता जा रहा है। हम प्रकृति और प्राकृतिक चीजों से नाता तोड़ अपने सेहत से खिलवाड़ कर रहे हैं, जिससे हमारे शरीर की दैनिक जैविक आवश्यकताएं जैसे कि प्रोटीन, विटामिन, सूक्ष्म खनिज तत्व आदि की कमी होने लगी है, जिसका सीधा असर हमारी मांसपेशियों, हड्डियों, हृदय की सेहत, शरीर की सहनशीलता एवं लचीलेपन आदि पर पड़ता है।

हर आदमी अच्छी तरह से यह जानता है कि अच्छी सेहत के लिए उसे कैसा आहार लेना चाहिए, उसकी दिनचर्या कैसी होनी चाहिए आदि, फिर दिक्कत क्या है? समस्या यह है कि हम विभिन्न स्रोतों से ढ़ेर सारी जानकारियां तो बटोर लेते हैं पर उस पर अमल नहीं करते।

चालीस की उम्र के बाद साल-दर-साल हमारी हड्डियाँ, मांसपेशियां स्वाभाविक रूप से कमजोर होने लगती हैं। शरीर की सक्रियता धीमी पड़ने लगती हैं। बढ़ती उम्र में हड्डियों, मांसपेशियों एवं अंगों की मजबूती इसलिए भी बेहद अहम है क्योंकि यही हमारे उपापचय (मेटाबोलिज्म) की गति, हड्डियों के घनत्व, उर्जा के स्तर और रोजमर्रा की शारीरिक एव मानसिक चुनौतियों से उबरने में मदद करती है। मजबूत हड्डियां एवं मांसपेशियां न सिर्फ शरीर को सहारा देती है बल्कि लंबी उम्र तक सक्रिय एवं स्वस्थ बने रहने में भी मदद करती है।

ऐसे दौर में तंदुरुस्त (फिट) रहने के लिए सक्रिय जीवनशैली से लेकर आहार-व्यवहार में सुधार आवश्यक हो जाता है। शुद्ध, सुरक्षित, पौष्टिक, संतुलित आहार जैसे कि अंकुरित अनाज, मोटा अनाज (मिलेट), हरे पत्तेदार सब्जियां, मौसमी फलों को भोजन में शामिल करने के साथ ही शराब, धूमपान से परहेज, शक्कर, नमक एवं वसा का नियंत्रित मात्रा में सेवन लाभदायक हो सकता है।

अच्छे सेहत के लिए आहार-व्यवहार के अलावे हमें अपने दिनचर्या में भी सुधार की आवश्यकता है। गलत दिनचर्या हमारे सेहत पर नकारात्मक असर डालते हैं। अनियंत्रित ढंग से देर रात तक मोबाईल फोन, टैब, लैपटॉप से चिपके रहने की लत से रातों की नींद गवां बैठे किशोर, युवा, अधेड़ अधूरी नींद या स्लीप डिसऑर्डर का शिकार हो रहे हैं। फलस्वरूप आलस्य, चिरचिरापन, तनाव, पाचन संबंधी विकृति के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। साथ ही गलत मुद्रा में लेटने, बैठने से मांसपेशियों, कमर, गर्दन आदि में भी दर्द एवं सुजन की समस्या आ सकती है।

निन्द्रावस्था में जब हमारा शरीर आराम की मुद्रा में होता है तब शरीर साईंकोटिन नामक प्रोटीन का निर्माण करता है जो संक्रमण और सुजन से लड़ने के साथ ही टूटे हुए कोशिकाओं के मरम्मत करने के काम भी करता है जिससे हम उर्जावान, तरो-ताजा एवं प्रफुल्लित महसूस करते हैं।

अक्सर लोग बढ़ते उम्र के साथ होनेवाली बीमारियों को समय का स्वाभाविक हिस्सा मान लेते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि थोड़ी-सी सजगता अपनाकर लंबे समय तक स्वस्थ और सक्रिय जीवन व्यतीत किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य साफ है कि नियमित व्यायाम, योग, आसन, तनाव मुक्त, वेवजह दवा सेवन से परहेज, स्वस्थ जीवन शैली, पर्याप्त नींद लें। बचाव के उपाय इस कदर किया जाए कि अंतिम उपाय के तौर पर ही चिकित्सक और अस्पताल का रुख करना पड़े। इस डिजिटल युग में फिटनेस एप, वेलनेस सेंटर, जिम की भी सहायता ली जा सकती है।

और अंत में **" स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है और निरोग शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है",** यह धारणा जीवन पर्यन्त हमारे मन मस्तिष्क में बनी रहनी चाहिए।

छत वाली गर्मी



श्री वैभव नंदन डान्गिल
(द्वारा - श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

आजकल की गर्मियों में वो बात नहीं रही, या शायद मैं ही बदल गया हूँ। कमरे में इन्वर्टर से जुड़ा पंखा अपनी पूरी रफ़्तार से चल रहा था। बाहर की गर्मी का अंदर कोई असर नहीं था, फिर भी नींद कोसों दूर थी। मैंने करवट बदली, कुछ देर छत को घूरा और फिर उठकर पंखा बंद कर दिया। अचानक छाई शांति और धीरे-धीरे कमरे में भरती उमस ने मुझे बरसों पीछे धकेल दिया। मुझे हमारा वो पुराना क्वार्टर याद आ गया।

उन पुरानी गर्मियों में जब घर के अंदर रहना मुश्किल हो जाता था, तो हमारी असली ज़िंदगी छत पर शुरू होती थी। वो हमारी एक मंजिला इमारत थी- ग्राउंड फ्लोर, फर्स्ट फ्लोर और फिर हमारी छत। रात को छत पर सोने जाना किसी रोज़मर्रा के काम जैसा नहीं, बल्कि एक पूरे 'एडवेंचर' जैसा होता था।



इस एडवेंचर का सबसे पहला और अहम हिस्सा होता था नीचे से छत तक बिजली पहुँचाना। मैं और पापा मिलकर किसी इंजीनियर की तरह तारों का जाल बिछाते थे। नीचे से एक्सटेंशन केबल खींचना, बोर्ड में स्विच लगाना, तारों को सँभालना और फिर उस इकलौते टेबल फैन को सेट करना, जो पूरी रात हमें लोरी सुनाने वाला होता था।

बिजली का काम पूरा होने के बाद शुरू होती थी बिस्तर लगाने की प्रक्रिया। दिन भर की धूप से तपती हुई छत को पहले बाल्टी भर-भर के पानी से धोया जाता। उस गर्म कंक्रीट पर पानी पड़ते ही जो सोंधी सी खुशबू उठती थी, वो किसी भी परफ्यूम से बेहतर थी। पानी से छत ठंडी होने के बाद बिछाई जाती थी खुरदरी सी चटाई, उसके ऊपर नर्म गद्दा और फिर उसके बाद चादर।

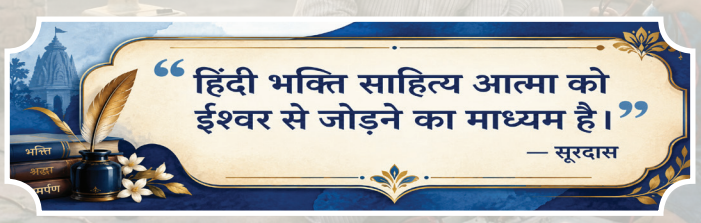
बिस्तर लग जाने के बाद बारी आती थी हमारे छोटे से महल की चारदीवारी खड़ी करने की यानी मच्छरदानी तानना। छत के अलग-अलग कोनों, छत के चारो कोनों में कीलों को ठोंक कर एक नींव तैयार कर के, उसे बाँधकर हवा में टिकाना अपने आप में एक कला थी। उस सफेद मच्छरदानी के अंदर की दुनिया बिल्कुल हमारी अपनी होती थी, जहाँ से बाहर का आसमान और तारे साफ दिखते थे और छनकर आती हुई ठंडी हवा सुकून देती थी। कई बार तो हम वहीं खुले आसमान के नीचे, तारों को देखते हुए साथ में रात का खाना खाते थे। बर्तन धुलने और बिस्तर पर लेटने से ठीक पहले, मेरा एक आखिरी 'मिशन' होता था नीचे जाकर पूरे फ्लोर की लाइट बंद करना।

जैसे ही मैं स्विच ऑफ करता, बत्तियाँ बुझतीं और सीढ़ियों पर अंधेरा छाता। उसी पल मेरे बाल-मन में अपने आप एक कहानी गढ़ जाती। मुझे लगता कि उस अंधेरे में कोई चीज़ है जो बस मुझे पकड़ने ही वाली है। मैं जी-जान से सीढ़ियाँ फांदते हुए, लगभग हाँफता हुआ भागकर वापस छत पर पहुँचता और फुर्ती से मच्छरदानी के अंदर घुसकर राहत की साँस लेता। आज मैं अंधेरे से नहीं डरता, वो खौफ अब पूरी तरह खत्म हो चुका है, पर सच कहूँ तो बचपन के उस कोरे दिमाग से पैदा हुए उस अनोखे रोमांच की आज बहुत याद आती है।

मैं, माँ और पापा तीनों उस मच्छरदानी के अंदर साथ में सोते थे। उस एक टेबल फैन की हवा खाने के लिए एक-दूसरे के करीब खिसकना, दिन भर की बातें करना और फिर तारों को गिनते-गिनते सो जाना। वो सिर्फ गर्मी से बचने का एक तरीका नहीं था, बल्कि एक सुकून था जो हमें एक-दूसरे से जोड़ता था। आज हम सब ग्राउंड फ्लोर पर आ गए हैं। अब सबका अपना-अपना अलग कमरा है। बिजली जाने का कोई डर नहीं क्योंकि इन्वर्टर ने वो परेशानी खत्म कर दी है। सुविधाएँ तो बहुत बढ़ गई हैं, लेकिन आज जब मैंने अपना पंखा बंद किया, तो समझ आया कि मैं असल में क्या याद कर रहा हूँ।

मैं उस पुराने क्वार्टर की छत, उस उमस या उस अंधेरे को याद नहीं कर रहा हूँ। मैं उस वक्त को याद कर रहा हूँ जब हम सब एक साथ होते थे। वो एक टेबल फैन, वो तनी हुई मच्छरदानी और अंधेरी सीढ़ियों का वो रोमांच हमें जितना करीब लाता था, आज की इन सुख-सुविधाओं और अलग-अलग कमरों की दीवारों ने हमें उतना ही दूर कर दिया है।

शायद इसलिए, आजकल की गर्मियों में वो बात नहीं रही।



सिक्किम : जहाँ रास्ते डराते भी हैं और मोह लेते हैं !



श्री कुंदन कुमार
लेखाकार

सिक्किम जाने का सपना बहुत दिनों से था। पहाड़ हमेशा मुझे अपनी ओर खींचते थे, लेकिन सच कहूँ तो ऊँचे रास्तों और गहरी खाइयों से मुझे डर भी बहुत लगता था। फिर भी, अप्रैल के महीने में सिक्किम को करीब से महसूस करने के लिए इस 5-6 दिनों के सफर पर हम एक दिन निकल पड़े- बादलों, बर्फ और रहस्यमयी घाटियों की उस दुनिया की ओर। यदि आप भी रोज़मर्रा की भागदौड़ से दूर प्रकृति की असली गोद को महसूस करना चाहते हैं, तो सिक्किम एक ऐसा गंतव्य है जो आपकी आत्मा को तरोताज़ा कर देगा और आपको जीवन भर की यादें देगा। इस यात्रा का सबसे बड़ा सहारा यह था कि वहाँ हमारे एक परिचित दोस्त, जो हमारे कार्यालय से प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत थे, मौजूद थे। उनके वहाँ होने की वजह से वहाँ जाना, घूमना और रहना काफी आसान हो गया। अनजान पहाड़ों में जब कोई अपना मिल जाए, तो सफर और भी अपनापन देने लगता है।

सिक्किम जाने के लिए अगर आप हवाई जहाज़ से आते हैं, तो सबसे नज़दीकी हवाई अड्डा बागडोगरा एअरपोर्ट है, और अगर ट्रेन से यात्रा करते हैं तो आपको एन.जे.पी. स्टेशन उतरना होता है। एन.जे.पी. स्टेशन से बाहर निकलते ही सिक्किम जाने वाली शेयर टैक्सी और रिजर्व गाड़ियाँ आसानी से मिल जाती हैं। सिलीगुड़ी पहुँचकर गंगटोक के लिए बस सेवा भी अच्छी है और इससे बजट यानी पॉकेट पर लोड भी काफी कम आता है। सिलीगुड़ी से गंगटोक की दूरी लगभग 120 किलोमीटर है, लेकिन पहाड़ी रास्तों की वजह से यह सफर 6 घंटे या उससे भी अधिक समय ले लेता है।

सिलीगुड़ी से जैसे ही गाड़ी ने सिक्किम की ओर चढ़ाई शुरू की, दिल में एक अजीब सा डर बैठ गया। एक तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और दूसरी तरफ इतनी गहरी खाई कि नीचे बहती तीस्ता नदी भी धुंधली दिखाई दे रही थी। सड़कें इतनी घुमावदार थीं कि हर मोड़ पर लगता था जैसे गाड़ी अब सीधा बादलों में चली जाएगी। लेकिन सबसे हैरानी की बात थी वहाँ के ड्राइवरों की समझदारी। सिक्किम में लोग बेवजह ओवरटेक नहीं करते। ना हॉर्न का शोर, ना जल्दबाज़ी। हर गाड़ी अपनी लाइन में धीरे-धीरे चलती है, मानो पहाड़ लोगों को धैर्य सिखा देते हों। ड्राइवर मुस्कुराकर बोला- "साहब, सिक्किम का रास्ता डराता जरूर है, लेकिन यही रास्ता सबसे खूबसूरत यादें देता है।" और सच में, जैसे-जैसे गाड़ी ऊपर बढ़ती गई, डर धीरे-धीरे आश्चर्य में बदलता गया।

गंगटोक पहुँचने के अगले दिन सुबह-सुबह हम नाथुला के लिए निकल पड़े। नाथुला भारत-चीन सीमा के पास स्थित एक ऐतिहासिक दर्रा है, जो समुद्र तल से लगभग 14,140 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इतनी ऊँचाई पर पहुँचते ही साँसें थोड़ी भारी लगने लगती हैं और हवा की ठंडक सीधे शरीर में उतर जाती है। नाथुला जाने के लिए परमिट जरूरी होता है जो एक दिन पहले ही आई.डी. प्रूफ देकर आसानी से बन जाता है, इसलिए रास्ते में कई जगह चेक पोस्ट पड़ते हैं जहाँ सेना के जवान हर गाड़ी को रोककर पूछते हैं- "परमिट है? कहाँ जाना है?"

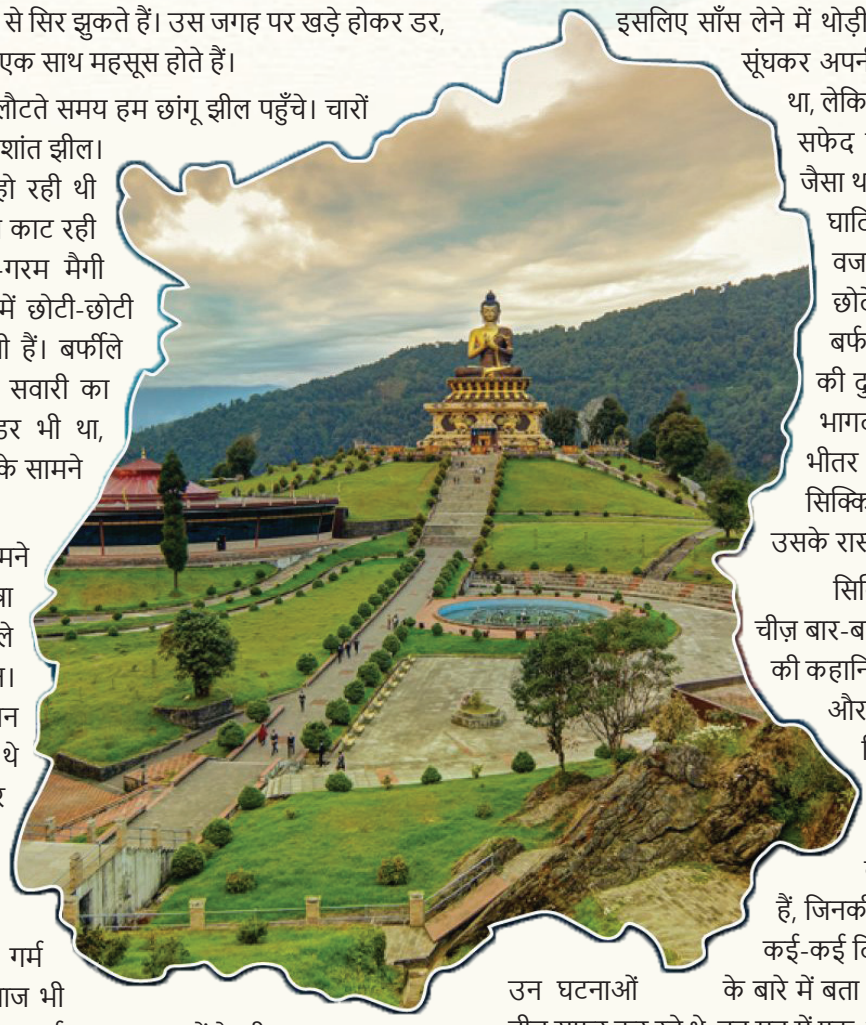
जैसे-जैसे हम ऊपर बढ़ते गए, रास्ते के दोनों तरफ बर्फ दिखाई देने लगी। घाटियों के बीच जगह-जगह भारतीय सेना के बेस बने हुए थे। इतनी कठिन जगहों पर जवानों को देखकर मन अपने आप सम्मान से भर जाता है। कई जगह बादल सड़क के इतना करीब आ जाते थे कि लगता था जैसे हम आसमान के बीच सफर कर रहे हों। आख़िरकार हम नाथुला पास पहुँचे। वहाँ खड़े होकर ऐसा महसूस हो रहा था जैसे हम दुनिया के किनारे आ गए हों। चारों तरफ बर्फ, तेज़ ठंडी हवाएँ और सामने भारत-चीन सीमा। वहाँ तैनात भारतीय सैनिकों को देखकर गर्व अपने आप महसूस होने लगता है। इतनी ऊँचाई और इतनी कठिन परिस्थितियों में भी वे मुस्कुराकर देश की रक्षा कर रहे थे।

नाथुला के रास्ते में सबसे अलग अनुभव था- बाबा हरभजन सिंह मंदिर। कहा जाता है कि सेना के जवान हरभजन सिंह ड्यूटी के दौरान इसी इलाके में शहीद हो गए थे, लेकिन लोगों का विश्वास है कि उनकी



आत्मा आज भी सीमा की रक्षा करती है। मंदिर में उनका कमरा आज भी वैसे ही रखा जाता है। जूते, यूनिफॉर्म और बिस्तर तक संभालकर रखे गए हैं। सैनिक भी वहाँ श्रद्धा से सिर झुकते हैं। उस जगह पर खड़े होकर डर, रहस्य और श्रद्धा- तीनों एक साथ महसूस होते हैं।

बाबा मंदिर से लौटते समय हम छांगू झील पहुँचे। चारों तरफ बर्फ और बीच में शांत झील। वहाँ याक की सवारी हो रही थी और ठंडी हवा चेहरे को काट रही थी। हमने वहीं गरमा-गरम मैगी और चाय पी। पहाड़ों में छोटी-छोटी चीजें भी याद बन जाती हैं। बर्फीले पानी के बीच नाव की सवारी का मज़ा अलग ही था। डर भी था, लेकिन उस सुंदर दृश्य के सामने डर छोटा लगने लगा।



अगले दिन हमने दक्षिण सिक्किम की यात्रा शुरू की। सबसे पहले पहुँचे टी.मी.- टी गार्डन। हरे-हरे चाय के बागान पहाड़ों पर ऐसे फैले थे जैसे किसी ने धरती पर हरी चादर बिछा दी हो। हवा में चाय की खुशबू घुली हुई थी। वहाँ कुछ देर रुककर गर्म चाय पीने का आनंद आज भी याद है। उसी रास्ते में बुद्ध पार्क आया। बादलों के बीच खड़ी विशाल बुद्ध प्रतिमा को देखकर मन अपने आप शांत हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे पूरा वातावरण ध्यान में डूबा हुआ हो। उसके बाद हम सिक्किम के प्रसिद्ध चारधाम मंदिर पहुँचे। एक ही जगह चारों धाम के दर्शन और बीच में विशाल शिव प्रतिमा। वहाँ का वातावरण भक्ति और शांति से भरा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ों के बीच कोई दिव्य संसार बस गया हो।

रात को हम गंगटोक के एम.जी. रोड पहुँचे। रोशनी से चमकती सड़कें, छोटे-छोटे कैफ़े, ठंडी हवा और धीमा संगीत... वहाँ रातें भागती नहीं, महसूस होती हैं। हमने वहाँ मोमो, थुकपा और सिक्किम की गर्म चाय का स्वाद लिया। पहाड़ों में गरम थुकपा शरीर ही नहीं, मन को भी गर्म कर देता है।

अगले ही दिन हमने उत्तर सिक्किम की ओर स्थित लाचेन और लाचुंग की यात्रा शुरू की। ये दोनों खूबसूरत पहाड़ी गाँव उत्तर सिक्किम में पड़ते हैं और गंगटोक से काफी ऊँचाई पर स्थित हैं। वहाँ पहुँचने का रास्ता अपने आप में किसी रोमांच से कम नहीं था। रास्ते में अनगिनत झरने, बादलों से ढकी घाटियाँ और बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देते रहे। कई जगह ऐसा लगता था जैसे बादल सड़क पर उतर आए हों। लाचेन अपनी शांत वादियों और गुरुडोंगमार झील के रास्ते के लिए प्रसिद्ध है। दुनिया के सबसे ऊँचे क्षेत्रों में स्थित (17,800 फीट) इस गुरुडोंगमार झील के लिए जब हम सुबह 4 बजे कड़ाके की ठंड में निकले, तो वह रोमांच शब्दों से परे था। चूँकि इतनी ऊँचाई पर ऑक्सीजन बहुत कम होती है, इसलिए साँस लेने में थोड़ी कठिनाई हो रही थी और कपूर सूंघकर अपनी सेहत का ध्यान रखना पड़ रहा था, लेकिन नीले आसमान के नीचे जमी हुई सफेद झील को देखना किसी चमत्कार जैसा था। जबकि लाचुंग अपनी खूबसूरत घाटियों, फूलों और युमथांग वैली की वजह से जाना जाता है। वहाँ के छोटे-छोटे लकड़ी के घर, ठंडी हवाएँ और बर्फ से ढके पहाड़ किसी कहानी की दुनिया जैसे लग रहे थे। शहरों की भागदौड़ से दूर वहाँ की शांति मन को भीतर तक सुकून देती है। सच कहूँ तो सिक्किम में मंज़िल से ज्यादा खूबसूरत उसके रास्ते और वहाँ की प्रकृति है।

सिक्किम में यात्रा के दौरान एक और चीज़ बार-बार सुनने को मिलती थी- भूस्खलन की कहानियाँ। रास्ते में कई जगह टूटे पहाड़ और गिरी हुई चट्टानों के निशान दिखाई देते थे। हमारा टूरिस्ट गाइड भी बताते जा रहा था कि बारिश के मौसम में यहाँ कई बार बड़े-बड़े भूस्खलन हो जाते हैं, जिनकी वजह से सड़कें घंटों नहीं बल्कि कई-कई दिनों तक बंद हो जाती हैं। जब वह उन घटनाओं के बारे में बता रहा था और हम उन्हीं पहाड़ों के बीच सफर कर रहे थे, तब मन में एक अजीब सा डर भी पैदा हो रहा था। पहाड़ जितने खूबसूरत दिखते हैं, उतने ही खतरनाक भी हो सकते हैं- यह एहसास वहीं जाकर होता है।

आख़िरी दिन जब हम लौट रहे थे, तब रास्ते में तीस्ता नदी के किनारे राफ्टिंग करने का मौका मिला। सच बताऊँ तो मुझे पानी से बहुत डर लगता है। राफ्ट में बैठते समय हाथ काँप रहे थे, लेकिन दोस्तों के कहने पर हिम्मत करके बैठ गया। जैसे ही राफ्ट तेज धाराओं पर उछलने लगी, दिल की धड़कनें तेज हो गईं। ठंडे पानी की छींटें चेहरे पर पड़ रही थीं और चारों तरफ पहाड़ गूँज रहे थे। धीरे-धीरे डर रोमांच में बदल गया। उस दिन समझ आया कि जिंदगी की सबसे खूबसूरत यादें अक्सर डर के उस पार मिलती हैं।

आज भी जब सिक्किम को याद करता हूँ, तो केवल बर्फ और पहाड़ याद नहीं आते... याद आते हैं वे घुमावदार रास्ते, तीस्ता की आवाज़, एम.जी. रोड की रातें, बाबा हरभजन सिंह मंदिर की रहस्यमयी शांति, नाथुला की ठंडी हवाएँ, लाचेन-लाचुंग की शांत वादियाँ और पहाड़ों के बीच बिताए वे कुछ दिन, जो शायद जिंदगी भर याद रहेंगे। इसलिए, अगर आप भी अपनी ज़िंदगी में किसी डर को पीछे छोड़ना चाहते हैं या प्रकृति की इस अनछुई दिव्यता को जीना चाहते हैं, तो अपना बैग पैक करिए और सिक्किम की इन खूबसूरत राहों पर निकल पड़िए। यकीन मानिए, यह सफर आपके जीने का नज़रिया बदल देगा।

सोनपापड़ी – परतों में छिपी कहानी



श्री प्रतीक जैन
सहायक लेखा अधिकारी

विगत कुछ वर्षों में मुझे सोनपापड़ी से अति स्नेह सा हो गया है, जो कुछ-कुछ रुचि और करुणा की मिश्रित भावना है। यूं तो भारतीय परिवेश में जाने कब से यह रची-बची है। परंतु पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया के अतिरेक में हर छोटे-बड़े त्योहारों पर इसकी जो इज्जत उतारी जाती है, इसके मीम्स वायरल होते हैं, उसे देखकर इस प्यारी सी मिठाई के लिए स्नेह और भी बढ़ जाता है। लोगों ने इसे मानो फुटबॉल बनाकर रखा है, इस पाले से उस पाले! इसको इतनी हेय दृष्टि से देखते हैं, जैसे उसने किसी का कुछ बिगाड़ रखा हो। मिठाइयों की श्रेणी में इसे सबसे निचले पायदान पर पटका गया है। अब यह गरीबों की मिठाई बन गई है और इसे देने वाले के पीठ पीछे बुराई ही की जाती है। यह परतदार मिठाई अब लेन-देन का साधन बनकर रह गई है। शायद हीं कोई इसकी पैकिंग खोलकर चखने की जेहमत उठाता हो।

परंतु सोनपापड़ी एक मिठाई नहीं बचपन की यादों और त्योहारों की परतों में बंटी एक अनोखी कहानी है। हर टुकड़े में असंख्य पतली-पतली परतें मुंह में घुल जाती है। कितना सहज सरल स्वाद! न ज्यादा ताम-झाम और न ज्यादा सजावट ही। इसे चांदी का वर्क नहीं चाहिए, और न मेवों की लक-दक। मिलावट की गुंजाईश भी न्यून ही है। दिवाली-होली पर नकली दूध, पनीर, खोवे की खेप जप्त होने की खबर हर साल आम है, फिर भी दूध से बनी मिठाईयों ने हलवाई के दुकानो से लेकर घर के फ्रिजों तक अपना कब्जा जमाया हुआ है, पर भला कभी दुकान या घर के कोने में सहमी पड़ी सोनपापड़ी ने किसी की तबीयत खराब भी की है? फिर भी बदनाम वही है। बेचारी हर-बार कन्यादान की हुई युवती की तरह अपनों को छोड़ परायों के साथ निर्विरोध चल देती है।

पहले मेरी सोच भी कुछ-कुछ जन सामान्य की धारणा जैसी ही थी, पर अब उसकी सरसता और सहजता जाने क्यों कर भाने लगी? यूँ तो इसके बनाने की प्रक्रिया बहुत कठिन है, सामान्य जन के तो बस की बात ही नहीं। सामग्री भी गरिष्ठ ही पड़ते हैं- बेसन, शक्कर, घी पर बनने के बाद की सादगी लाजवाब होती है। ऊपर से बस खरबूजे के मगज की कतरने और इलायची की शीतल सुगंधी। बनावट का जादू तो देखिए पतली रेशेदार परते, वह भी इतने कम सामग्रियों के मेल से।

इतने सद्गुणों का भंडार होने पर भी इसे मजाक का पात्र बना दिया गया है। इसे कम पसंद किए जाने वाले गिफ्ट के तौर पर ही देखा जाता है। इसको कोई प्रेम से घर लाना मुनासिब भी नहीं समझता। इस घर से उस घर तिरस्कारपूर्वक इसे धकेल दिया जाता है, पर विश्वास जानिए एक बार प्रीति से इसका टुकड़ा मुंह में डालकर देखिए यह नन्ही-जान आपको निराश नहीं करेगी। रसगुल्लों, लड्डुओं, राजभोग, बर्फी जैसी बीसियों पसंदीदा मिठाइयों में यह कहीं भी कमतर साबित नहीं होती। इसके निर्माण में जो पुरुषार्थ लगा है, उसका आदर इसे खाए बिना ना हो पाएगा। यह जटिल होकर भी सरल है, घृतवंत होकर भी लघु है, मिठास भी संतुलित है। मिठाइयों के आकाश का सबसे विनम्र तारा है यह, बस थोड़ी सी इज्जत के साथ खरीद कर घर पर लाकर खाइए और देखिए इसके स्वाद का अतिशय आपको निश्चय ही अभिभूत करेगा।



काशी घाट



श्री राहुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

नाव हौले-हौले गंगा की गोद में सरक रही थी, और मेरा मन सदियों पुरानी किसी कथा में उतर रहा था। लहरें तटों को स्पर्श कर रही थीं, मानो इतिहास के पन्ने स्वयं खुल रहे हों। घाट दर घाट सामने आते जा रहे थे, और काशी की अनंत कथा धीरे-धीरे अपना रहस्य खोल रही थी। सबसे पहले दिखा अस्सी घाट। यहीं से काशी की साँस शुरू होती है। यहीं कवियों की कल्पना, संन्यासियों की तपस्या और ज्ञान की प्राचीन ज्वाला आज भी जीवित प्रतीत होती है।

नाव आगे बढ़ी। अस्सी के बाद अनेक घाट सामने आए- कहीं श्रद्धा का स्नान, कहीं मंत्रों की गूँज, तो कहीं दीवारों पर समय की अमिट छाप। हर घाट अपने भीतर एक अलग युग समेटे खड़ा था।

हरिश्चन्द्र घाट के समीप सत्य की अग्नि आज भी प्रज्वलित थी। गंगा की शीतल हवा और अग्नि की तपिश एक अद्‌भुत संगति रच रही थी।

दशाश्वमेध घाट पर दीपों की स्वर्णिम लौ में पूरा ब्रह्मांड झिलमिला रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो समय भी यहाँ ठहरकर प्रणाम करता हो।

ललिता घाट की शांति, पुरातन सुगंध और काष्ठ मंदिरों की छाया में काशी का सौम्य स्वरूप दिखाई देता है।

फिर नाव काशी विश्वनाथ गंगा द्वार पहुँची, जहाँ स्वर्णिम आभा, भक्तों की जयघोष और गंगा के जल में झिलमिलाता मंदिर का प्रतिबिंब मन को भक्ति और शांति से भर देता है।



मणिकर्णिका घाट पर पहुँचकर अनुभूति होती है कि मृत्यु भी मोक्ष के आँगन में मुस्कुराती है। मानो काशी कह रही हो- **'अंत ही तो शुरुआत का दूसरा नाम है।'**

काशी का हर घाट समय का प्रहरी है- कहीं वीरों का साहस, कहीं भक्तों की तपस्या, कहीं संतों की वाणी और कहीं साधारण मनुष्यों की अनकही व्यथा।

जब घाटों की श्रृंखला पीछे छूट गई, तब महसूस हुआ- काशी केवल देखी नहीं जाती, वह भीतर उतर जाती है। और मैं आज भी वहीं हूँ- उस नाव पर, गंगा की धारा के बीच, जहाँ इतिहास, आस्था और मन एक साथ बहते हैं।

।। हर हर महादेव ।।



रावण: एक प्रतापी प्रतिनायक का अंतर्द्वंद्व

(पौराणिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और कलात्मक दृष्टिकोण से लंकापति का बहुआयामी विश्लेषण)



श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रस्तावना: मिथक, यूहेमेरिज्म और एक प्रतिनायक का जन्म

किंवदंती अथवा समाज में व्याप्त पौराणिक कथाएं कुछ और नहीं, बल्कि एक सच्चे अतीत की बिखरी हुई यादें हैं। एक ऐसा अतीत जो बदलते समय के साथ धरातल और अज्ञानता के नीचे दफ़्न हो चुका है। मानव का यह स्वभाव रहा है कि वह अपने इतिहास के नायकों और खलनायकों को समय के साथ एक अतिमानवीय स्वरूप प्रदान कर देता है।

अंग्रेजी भाषा का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण शब्द है **Euhemerism (यूहेमेरिज्म)**। यह अवधारणा सामान्य रूप से यह बताती है कि पौराणिक देवी-देवता और अलौकिक पात्र वास्तव में अतीत के सामान्य मानव ही थे—जैसे पराक्रमी राजा, योद्धा, या समाज सुधारक। समय के साथ मौखिक परंपराओं, अतिशयोक्ति और इतिहास के बीतने के कारण उनके वास्तविक जीवन के कार्यों को दिव्य और अलौकिक रूप दे दिया गया।

यह अवधारणा प्राचीन ग्रीक विचारक यूहेमरस (Euhemerus) के नाम पर रखी गई है, जिनका मानना था कि सभी प्रमुख देवता कभी पृथ्वी पर शासन करने वाले नश्वर मनुष्य ही थे, जिन्हें उनके उल्लेखनीय योगदान के कारण बाद की पीढ़ियों द्वारा पूजा जाने लगा। यूहेमेरिज्म इस बात पर दृढ़ता से बल देता है कि पौराणिक कथाएँ वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं और वास्तविक व्यक्तियों से उत्पन्न हुई हैं, जिनके कार्य समय के साथ विकृत और अतिरंजित कर दिए गए। रावण का चरित्र इस अवधारणा का सबसे सटीक उदाहरण है।

भारतीय पौराणिक कथाओं की आत्मा अच्छाई और बुराई की साधारण परिभाषाओं से कहीं आगे विस्तृत है। यदि हम इसके पात्रों के चरित्र की गहराइयों में उतरें, तो प्रत्येक कदम पर एक नया विमर्श और एक दिलचस्प गाथा हमारा स्वागत करती है। वर्तमान युग में, जब हम रावण को टेलीविजन धारावाहिकों अथवा आधुनिक फिल्मों के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं, तो हमारे सामने उसका एक अत्यंत निकृष्ट, एकांगी और खलनायक रूप प्रस्तुत किया जाता है। परंतु, जब हम मूल प्राचीन ग्रंथों और ऐतिहासिक लोककथाओं की ओर रुख करते हैं, तो रावण की छवि इस संकुचित रूप से परे जाकर एक 'प्रतिनायक' (Anti-Hero) के रूप में उभरती है।

मंदोदरी का विलाप: मोह और इंद्रियों की पराजय

रावण के चरित्र का सबसे मर्मस्पर्शी और दार्शनिक विश्लेषण वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में तब देखने को मिलता है, जब स्वयं रावण की अर्धांगिनी, सती मंदोदरी, युद्धभूमि में अपने पति के मृत शरीर के पास बैठकर विलाप करती है। मंदोदरी का यह विलाप केवल एक स्त्री का शोक नहीं है, बल्कि यह एक महान साम्राज्य के पतन का मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक सार है।

युद्धभूमि में राम द्वारा रावण का वध किए जाने पर मंदोदरी लंकापति रावण की मृत्यु का विलाप करती है और कहती है:

इन्द्रियाणि पुरा जित्वा जितं त्रिभुवनं त्वया।
स्मरध्दिरिव तद् वैर्मिन्द्रीयैरव निर्जितः॥
(वाल्मीकि रामायण 111 सर्ग का 14वाँ श्लोक)

अर्थात:- हे नाथ! पहले आपने अपनी इंद्रियों को जीत कर ही तीनों लोकों पर विजय पायी थी, और अब वैर के वशीभूत इन्हीं इंद्रियों ने आपको परास्त किया है।

इस श्लोक का अर्थ अत्यंत गंभीर है। रावण ने अपनी युवावस्था में घोर तपस्या की और अपनी सभी इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त किया। उसी इंद्रिय-संयम (आत्म-नियंत्रण) के बल पर उसने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की थी। परंतु अंत में, सीता के प्रति उसके भीतर उत्पन्न हुए मोह और वासना ने उसकी इंद्रियों को उसके विरुद्ध कर दिया। एक विजेता जो पूरे विश्व को जीत सकता था, वह अपनी ही इंद्रियों के आगे हार गया।

आगे इसी सर्ग (111) के श्लोक 28 में मंदोदरी अपने और सीता के मध्य की तुलना करते हुए अत्यंत मार्मिक सत्य उद्घाटित करती है:

न कुलेन न रूपेण न दाक्षिण्येन मैथिली।
मयाधिका वा तुल्या वा तत् तु मोहान्न बुद्ध्यसे॥

अर्थात्:- मिथिलेशकुमारी सीता न तो कुल में, न रूप में और ना दाक्षिण्य (सद्गुणों) आदि गुणों में ही मुझ से बढ़कर है। वह मेरे बराबर भी नहीं है; परंतु आप मोहवश इस बात पर ध्यान नहीं देते थे।

मंदोदरी का यह कथन रावण के 'मोह' (भ्रम) की पराकाष्ठा को दर्शाता है। रावण के पास मंदोदरी के रूप में एक अत्यंत गुणवान, सुंदर और पतिव्रता पत्नी थी, जो किसी भी प्रकार से सीता से कम नहीं थी। परंतु अहंकार और परस्त्री-मोह ने रावण की बुद्धि भ्रष्ट कर दी। यही उसके पतन का मूल कारण बना, जहाँ उसका सारा ज्ञान, बल और तपस्या व्यर्थ हो गई।

युद्धभूमि में शत्रु के तेज का स्वीकार (वाल्मीकि रामायण का साक्ष्य)

शत्रु की महत्ता को स्वीकार करना केवल एक महान चरित्र ही कर सकता है। महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण के युद्धकाण्ड (सर्ग 59) में उस



समय का एक अत्यंत रोमांचक प्रसंग आता है, जब युद्धभूमि में विभीषण भगवान श्रीराम को राक्षसराज रावण का परिचय करवाते हैं।

विभीषण रावण के प्रताप का वर्णन करते हुए कहते हैं:

यत्रैतदिन्दप्रतिमं विभाति छत्रं सितं सूक्ष्मशलाकमग्र्यम्।
अत्रैष रक्षोधिपतिर्महात्मा भूतैर्वृतो रुद्र इवावभाति॥ 24॥

अर्थ: जहाँ रावण के सिर पर यह चंद्रमा के समान सफेद और सूक्ष्म शलाकाओं वाला उत्तम छत्र सुशोभित हो रहा है, वहाँ यह महात्मा और राक्षसों के स्वामी रावण अपने सैनिकों से घिरे हुए साक्षात् भगवान रुद्र (शिव) के समान तेजस्वी प्रतीत हो रहा है।

असौ किरीटी चलकुण्डलास्यो नगेन्द्रविन्ध्योपमभीमकायः।
महेन्द्रवैवस्वतदर्पहन्ता रक्षोधिपः सूर्य इवावभाति॥ 25॥

अर्थ: यह सिर पर मुकुट धारण किए हुए है, इनका मुख कानों में हिलते हुए कुण्डलों से अलंकृत है। इनका शरीर गिरिराज हिमालय और विंध्याचल के समान विशाल एवं भयंकर है तथा यह इंद्र और यमराज के भी घमंड को चूर करने वाला है। देखिए, ये राक्षसराज साक्षात् सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा है।

विभीषण के इस परिचय को सुनकर शत्रुओं का दमन करने वाले भगवान श्रीरामचन्द्रजी भी रावण के अनुपम तेज से विस्मित हो उठते हैं और उत्तर देते हैं:

प्रत्युवाच ततो रामो विभीषणमरिन्दमः।
अहो दीप्तमहातेजा रावणो राक्षसेश्वरः॥ 26॥

अर्थ: अहो! राक्षसों के राजा रावण का तेज कितना दीप्त (प्रचंड) और महान है।

आदित्य इव दुष्प्रेक्ष्यो रश्मिभिर्भाति रावणः।
न व्यक्तं लक्षये ह्यस्य रूपं तेजःसमावृतम्॥ 27॥

अर्थ: रावण अपनी कांति से सूर्य की ही भांति ऐसी शोभा पा रहा है कि इसकी ओर देखना भी अत्यंत कठिन हो रहा है। चारों ओर फैले तेजोमण्डल से व्याप्त होने के कारण उसका रूप मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं दे रहा है।

यह प्रसंग न केवल रावण की अद्वितीय शारीरिक और आध्यात्मिक आभा को दर्शाता है, बल्कि भगवान राम के उदार और महान चरित्र को भी रेखांकित करता है, जो रणभूमि में भी अपने प्रबलतम शत्रु के वास्तविक तेज का सम्मान करते हैं।

वंश की नींव और अभूतपूर्व तपस्या

रावण के व्यक्तित्व के दोहरेपन को समझने के लिए उसकी वंशावली के मूल को समझना आवश्यक है। रावण का जन्म ब्राह्मणवादी शुद्धता और उग्र असुर संस्कृति के अद्भुत मिश्रण से हुआ था।

ऋषि कुल का उत्तराधिकार: रावण, परमपिता ब्रह्मा के मानस पुत्र सप्तर्षियों में से एक, महान महर्षि पुलस्त्य का पौत्र था। उसका जन्म अत्यंत ज्ञानी तपस्वी ऋषि विश्रवा और दैत्य राजकुमारी कैकसी (राक्षसराज सुमाली की पुत्री) के घर हुआ था। इसी कारण रावण आधा ब्राह्मण (ऋषि) और आधा असुर माना जाता है। उसमें ज्ञान की अथाह गहराई थी और साथ ही राक्षसों जैसी उग्रता भी।

बाल्यकाल और हठयोग: बचपन से ही रावण कुशाग्र बुद्धि का धनी था। उसने बहुत ही अल्पायु में चारों वेदों पर पूर्ण महारत हासिल कर ली थी। हालांकि, उसके हठी स्वभाव के कारण उसके पिता विश्रवा उससे अक्सर अप्रसन्न रहते थे, जिसके परिणामस्वरूप वह अपने नाना सुमाली के अधिक निकट होता गया और उसमें राक्षसी प्रवृत्तियों का विकास होने लगा।

10,000 वर्षों का घोर तप: परम शक्ति की लालसा में रावण ने अपने भाइयों कुंभकर्ण और विभीषण के साथ गोकर्ण पर्वत पर 10,000 वर्षों तक कठोर तपस्या की। अपनी निष्ठा और समर्पण को सिद्ध करने के लिए रावण ने नर्मदा नदी के तट पर तप करते हुए बारी-बारी से अपने सिर काटकर अग्नि में अर्पित कर दिए। जब भी वह अपना सिर काटता, वह पुनः उग आता था। ऐसा दस बार हुआ। अंततः ब्रह्माजी प्रसन्न हुए और उन्होंने रावण को वे दसों सिर वापस लौटा दिए तथा अजेयता का वरदान दिया।

वरदान की चतुर सीमा: रावण ने चालाकी से देवताओं, यक्षों, गंधर्वों और असुरों के विरुद्ध अजेयता का वरदान मांगा, परंतु मनुष्यों और जानवरों को उसने तुच्छ मानकर छोड़ दिया। यही अनदेखी अंततः उसकी मृत्यु का कारण बनी, जब भगवान विष्णु ने मानव (राम) और वानरों के रूप में अवतार लिया।

दशमुख का वास्तविक रहस्य और दार्शनिक व्याख्या

लोककथाओं में रावण को शारीरिक रूप से 'दस सिर' वाला माना जाता है, परंतु दार्शनिक और आध्यात्मिक ग्रंथों में इसके अत्यंत गहरे अर्थ प्रस्तुत किए गए हैं। रावण के दशानन होने के पीछे दो प्रमुख मान्यताएं हैं:

क) ज्ञान का प्रतीक (६ शास्त्र और ४ वेद): रावण के १० सिर छह शास्त्रों और चार वेदों में उसकी अद्वितीय महारत के प्रतीक हैं। इन



समस्त विद्याओं को आत्मसात करने के कारण वह त्रिलोक का सबसे ज्ञानी पंडित और विद्वान बना। वह ६४ प्रकार की कलाओं और अस्त्र-शस्त्र संचालन की विधाओं में निपुण था। शास्त्रों में निपुण होने के साथ-साथ, रावण की सबसे बड़ी वैज्ञानिक देन वेदों को विशिष्ट संगीतमय सुरों (सामगान पद्धति) के साथ व्यवस्थित ढंग से संकलित करना था।

ख) मानवीय भावनाओं का प्रतीक (१० विकार): रावण के १० सिर मनुष्य के भीतर उठने वाले १० विकारों और मानसिक अवस्थाओं को भी दर्शाते हैं। ये विकार हैं: काम (वासना), क्रोध (गुस्सा), मोह (भ्रम), लोभ (लालच), मद (अहंकार), मात्सर्य (ईर्ष्या), मन (चंचलता), बुद्धि (तर्कशीलता), चित्त (इच्छाशक्ति), और अहंकार (स्वयं का घमंड)।

राजा महाबली की सीख: एक बार महान दानवराज महाबली ने रावण को सलाह दी थी कि वह इन नौ नकारात्मक भावनाओं को त्याग दे और केवल 'बुद्धि' के मार्ग पर चले। परंतु रावण का तर्क था कि ये सभी भावनाएं मनुष्य को संपूर्ण बनाती हैं। बुद्धि का सिर उसकी नियति तय करता था, परंतु वासना और अहंकार से चालित उसके बाकी सिरों ने उसके कर्म तय किए, जिससे अंततः उसका विनाश हुआ। अपनी शक्तियों और ज्ञान का सही आचरण में उपयोग न कर पाना ही युद्ध के मैदान में मृत्यु शैय्या पर लेटे रावण का सबसे बड़ा पश्चाताप था।

कला और विज्ञान में रावण का अतुलनीय योगदान

रावण केवल एक प्रतापी राजा और योद्धा ही नहीं था, बल्कि विज्ञान, चिकित्सा, ज्योतिष और संगीत की दुनिया में उसका योगदान अतुलनीय था। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यूहेमेरिज्म की दृष्टि से देखें, तो वह अपने समय का महानतम वैज्ञानिक और अन्वेषक था।

1. **अर्क प्रकाश (आयुर्वेद / रसायन विज्ञान):** रावण ने आयुर्वेद में एक नई विधा का आविष्कार किया जिसे 'अर्क कल्पना' कहा जाता है। इसमें आसवन (Distillation) विधि से जड़ी-बूटियों का औषधीय तेल (अर्क) निकाला जाता था।
2. **नाड़ी परीक्षा (रोग-विज्ञान):** चिकित्सा के क्षेत्र में उसने कलाई की नस पर उंगलियों (तर्जनी, मध्यमा, अनामिका) के स्पर्श से वात, पित्त, कफ की स्थिति जानने की विद्या का प्रतिपादन किया। यह आज भी आयुर्वेद की रीढ़ है।
3. **कुमार तंत्र (बाल चिकित्सा):** रावण ने शिशु स्वास्थ्य, बाल रोग और प्रसवोत्तर देखभाल पर विस्तृत ग्रंथ की रचना की, जो उस समय की सबसे उन्नत पीडियाट्रिक (Pediatrics) गाइड थी।
4. **रावण संहिता (वैदिक ज्योतिष):** ज्योतिष के क्षेत्र में रावण संहिता का आज भी कोई सानी नहीं है। इसमें कुंडली विश्लेषण, नक्षत्रों की चाल (जैसे अश्विनी और रोहिणी नक्षत्रों में केतु-राहु का प्रभाव) और सटीक भविष्यवाणियों का गूढ़ वर्णन है।
5. **शिव तांडव स्तोत्रम् (भक्ति साहित्य):** शिव स्तुति का सबसे ऊर्जस्वी और कठिन छंदबद्ध काव्य, जिसकी रचना रावण ने तब की थी जब उसके हाथ कैलाश पर्वत के नीचे दब गए थे।
6. **संगीत और रावणहत्था का आविष्कार:** रावण जैसा रुद्रवीणा वादक संसार में कोई नहीं था। दर्द से तड़पते हुए अपनी वीणा के तार टूट जाने पर उसने अपने शरीर की नसों को निकाल कर तार बनाया और अपने ही सिर को रेज़ोनेटर बनाकर 'रावणहत्था' नामक वाद्य यंत्र का आविष्कार किया। यह वाद्य यंत्र विश्व का पहला 'बोड स्ट्रिंग' (धनुष-नुमा तार वाला) वाद्य यंत्र था, जो बाद में अरब व्यापारियों के माध्यम से 'रेबाब' बना और

अंततः यूरोप जाकर आधुनिक वायलिन के रूप में विकसित हुआ।

स्वर्ण नगरी लंका का वैभव और ऐश्वर्य

रावण के शासनकाल में लंका का ऐश्वर्य और वास्तुकला अपने चरम पर थी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड में हनुमान जी के माध्यम से लंका की सुंदरता का अनुपम वर्णन किया है:

गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी। कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी॥
अति उतंग जलनिधि चहुँ पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा॥

भावार्थ: समुद्र पार कर त्रिकूट पर्वत पर चढ़कर हनुमान जी ने लंका देखी। वह सोने का किला इतना भव्य और अभेद्य था कि उसका वर्णन करना कठिन है। उसके चारों ओर गहरा समुद्र था और सोने की विशाल चारदीवारी (परकोटा) से दिव्य प्रकाश निकल रहा था।

आगे कनक कोट की गलियों का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं:

कनक कोटि बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना॥

भावार्थ: विचित्र मणियों से जड़ा हुआ सोने का विशाल परकोटा है, जिसके भीतर भव्य अट्टालिकाएं बनी हैं। सुंदर चौराहे, बाजार, सड़कें और गलियां नगर की शोभा बढ़ा रही हैं। लंका की सेना में हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदल सैनिकों के साथ-साथ अनेक रूप धरने वाले महाबलशाली राक्षसों के दल मौजूद हैं, जिनका वर्णन करना असंभव है। रावण ने अपनी प्रशासनिक और आर्थिक क्षमताओं से लंका को तत्कालीन विश्व की सबसे समृद्ध नगरी बना दिया था।

भक्ति का एक अनूठा रूप: भौतिक ऐश्वर्य बनाम शिव-शरणागति

स्वर्ण नगरी लंका और अपरिमित ऐश्वर्य का स्वामी होने के बावजूद, रावण के मन के किसी कोने में एक वैरागी साधु भी बसता था। सोने के महलों और तीनों लोकों की सत्ता के मध्य भी उसका हृदय शिव की भक्ति के लिए लालायित रहता था। शिव तांडव स्तोत्र के १३वें श्लोक में रावण अपनी अंतरात्मा की पुकार को इन शब्दों में व्यक्त करता है:

कदा निलिंपनिर्झरी निकुंजकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमंजलिं वहन्।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥13॥

भावार्थ: ललाट पर सुंदर चंद्रकला धारण करने वाले भगवान शिव में एकाग्र होकर, मैं अपने इन समस्त सांसारिक कुविचारों को त्याग कर, इस पवित्र गंगा नदी के तट पर बनी किसी शांत कुटिया (निकुंज) के भीतर कब रहूँगा? अपने सिर पर हाथ जोड़े हुए, डबडबायी हुई विह्वल आँखों से 'शिव' मंत्र का जाप करता हुआ मैं कब वास्तविक सुख को प्राप्त करूँगा?

यह श्लोक प्रमाणित करता है कि रावण भली-भांति जानता था कि वास्तविक आनंद भौतिक भोग-विलास और सोने की लंका में नहीं, अपितु महादेव की परम भक्ति में लीन होने में ही है। एक शासक के भीतर एक संन्यासी का यह द्वंद्व रावण को भारतीय साहित्य का सबसे जटिल और रहस्यमयी पात्र बनाता है।

साहित्यिक परंपराओं में विविध दृष्टिकोण

विभिन्न कालों और क्षेत्रों के ग्रंथों में रावण के चरित्र को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखा गया है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि वह केवल एक खलनायक नहीं था:

कंब रामायणम (तमिल): १२वीं सदी के महान तमिल कवि कंबन ने रावण को शेक्सपियर के दुखांत नाटकों के नायक की भांति प्रस्तुत किया है। उन्होंने रावण की बेमिसाल बुद्धि और सांस्कृतिक शान पर ज़ोर देते हुए लिखा है कि उसके पास 'हज़ार महान ऋषियों का ज्ञान' था, परंतु वासना की एक छोटी सी चिंगारी ने उसके पूरे साम्राज्य को भस्म कर दिया।

रामचरितमानस (अवधी): गोस्वामी तुलसीदास जी ने रावण के चरित्र को 'वैरी भक्ति' (दुश्मनी के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करना) के रूप में दर्शाया है। रावण जानता था कि राम साक्षात् ईश्वर हैं और उनसे सीधे युद्ध कर वीरगति प्राप्त करना ही वैकुंठ वापस लौटने का एकमात्र मार्ग है।

जैन और बौद्ध व्याख्याएँ: जैन रामायणों (जैसे आचार्य विमलसूरि की पउमचरियं) में रावण को राक्षस नहीं, बल्कि एक महान विद्याधर राजा और परम तपस्वी माना गया है, जो अपनी ही वासना के कारण पतन को प्राप्त हुआ। जैन परंपरा में उसे एक उच्च कोटि का आराधक और भविष्य का तीर्थंकर भी माना जाता है।

निष्कर्ष: सनातन चेतावनी और रावण का समग्र मूल्यांकन

रावण की कथा केवल एक राजा की विजय और पराजय की कहानी नहीं है, बल्कि यह मानव मनोविज्ञान के लिए एक शाश्वत चेतावनी है। वह दर्शाता है कि चाहे कोई मनुष्य कितना भी बड़ा वेदों का ज्ञाता हो, त्रिलोक विजयी हो, सिद्ध चिकित्सक हो अथवा उत्कृष्ट कलाविद् हो; यदि वह अपने अहंकार पर अंकुश नहीं रख पाता और अपनी इंद्रियों का दास बन जाता है, तो उसका पतन निश्चित है।

यूहेमेरिज्म (Euhemerism) का सिद्धांत रावण पर पूर्णतः चरितार्थ होता है। वह एक ऐतिहासिक महामानव, अद्वितीय विद्वान और अपराजेय योद्धा था, जिसकी भव्यता और क्रूरता दोनों ही इतनी अधिक थीं कि आने वाली पीढ़ियों ने उसे एक दस सिर वाले अतिमानवीय दैत्य के रूप में गढ़ दिया।

रावण का संपूर्ण ज्ञान और पराक्रम अंततः उसकी वासना और मद के आगे घुटने टेक देता है। मंदोदरी का वह विलाप कि 'तुम्हें श्रीराम ने नहीं, बल्कि तुम्हारी इंद्रियों ने मारा है' रावण के जीवन का सबसे बड़ा सच है। इसी कारण, रावण भारतीय इतिहास में सदैव एक 'प्रतिनायक' (Anti-Hero) के रूप में अमर रहेगा—एक ऐसा महाज्ञानी जो पूजनीय तो न बन सका, परंतु अपनी भूलों, अपने ज्ञान, और अपने अंतर्द्वंद्व से मानव सभ्यता के लिए सदा-सदा के लिए प्रेरणादायी बन गया।

मेरा गांव अब उदास रहता है....
(भाग-II)



अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वो पनघट की राहें अब वीरान हो गई हैं,
कुएं की जगत भी जैसे बेजान हो गई है।
पनिहारिनों की हंसी अब वहां गूंजते नहीं,
सूखी हुई बाल्टी को अब कोई पूजते नहीं।
तालाब में अब वो तैरने की होड़ नहीं होती,
पुरानी बरगद की जटाओं से वो दौड़ नहीं होती।
पानी तो है, मगर उसमें न वो प्यास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

स्कूल का वो घंटा भी अब खामोश पड़ा है,
टूटी दीवार के पास बस, तन्हा खड़ा है।
तख्ती और स्लेट वाले वो दिन बीत गए,
शहर की चकाचौंध से, हम गांव को जीत गए।
मासाब की डांट में भी जो प्यार छुपा होता था,
एक ही टाट पर बैठकर, सारा संसार सधा होता था।
अब बच्चों के शोर का वहां, कोई आभास नहीं,
बस यहां शिक्षा है, मगर वो अहसास नहीं।
शहरी पढाई में न कोई अब बिंदास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

डाकिए की साइकिल की घंटी अब नहीं बजती,
चौपाल पर शाम की, वो महफिल नहीं सजती।
चिट्ठियों का इंतज़ार अब कोई नहीं करता,
मनीऑर्डर के लिए अब कोई आहें नहीं भरता।
वीडियो कॉल पर ही अब हाल-चाल बंट जाते हैं,
परदेस में बसे बेटे, बस त्यौहार पर घर आते हैं।
दो दिन रहकर, घड़ी देख वापस भाग जाते हैं,
बूढ़ी आँखों में फिर से, सूनापन दाग जाते हैं।
रिश्तों में पहले सी न अब मिठास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

खेतों की मेढ़ों पर, अब वो हरियाली रूठ गई,
बैलों की जोड़ी भी, न जाने कहाँ छूट गई।
ट्रैक्टर की आवाज़ में, वो गीत दब गए हैं,
फसल काटने वाले हाथ, मशीनों में अब गए हैं।
जिस आंगन में कभी, अनाज के ढेर लगते थे,
वहां अब बस सूखे हुए, बेर लगते हैं।
मिट्टी की वो सोंधी खुशबू, अब आती नहीं,
कोयल भी अब आम की डाल पर गाती नहीं।
प्रकृति तो है, पर उसमें न अब लिबास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

त्यौहारों पर अब गांव में सन्नाटा पसरा है,
जैसे खुशियों को निगलता कोई खतरा गहरा है।
न ढोलक की थाप, न फाग के वो गाने हैं,
सब अपनी ही दुनिया में, हुए बेगाने हैं।
तरक्की की आंधी में, जड़ें हिल गई हैं,
ईंट-पत्थर तो बचे हैं, पर रूहें छिल गई हैं।
वो सुकून, वो अपनापन, बस अब इतिहास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

मधुबनी की रेखाएँ अब दीवारों पर कम दिखती हैं,
दादी के रंगे आँगन में अब रंगतें कहाँ टिकती हैं।
अरिपन की शुभ रचना अब बस पर्वों तक सिमट गई,
सीकी-दौरी बुनने वाली हथेलियाँ भी थक गई।
विद्यापति के मधुर पद अब विरले ही गाए जाते हैं,
नई पीढ़ी के कानों में बस शहर के स्वर समाते हैं।
मिथिला का गौरव जैसे कुछ उदास रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।।

सामा-चकेवा का उत्सव अब पहले-सा नहीं सजता,
भैया-दूज का नेह भी अब हर आँगन में नहीं बसता।
झिझिया की वह गोल मण्डली अब विरली नज़र आती,
कजरी, सोहर, विदापत-गान की धुन कहाँ सुनाती।
पाग, मखान और पान की वह अपनी अलग कहानी,
धीरे-धीरे खोती जाती गाँवों की पहचान पुरानी।
रीति-रिवाजों में भी अब अवकाश रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।।

आम, लीची की बगिया में अब वैसी बहार नहीं,
धान की सुनहरी बालियों में पहले-सा श्रृंगार नहीं।
कमला, कोसी, बागमती भी अपना दुःख सुनाती हैं,
कभी बाढ़ तो कभी प्यास की पीड़ा साथ लाती हैं।
मछुआरे की नाव किनारे चुपचाप खड़ी रहती है,
नदियों से जीवन की हँसी जाने कहाँ बहती है।
प्रकृति में भी जैसे कोई संन्यास रहता है,
मेरा गाँव अब उदास रहता है।।

फिर भी आशा की लौ मन में आज अभी जलती है,
सूखी धरती पर भी वर्षा की पहली बूँद मचलती है।
लौटें फिर से गाँव की गलियाँ, चौपालें मुस्काएँ,
मधुबनी के रंग, विद्यापति के पद घर-घर गाए जाएँ।
पनघट फिर से हँसे, खेतों में हरियाली लहराए,
मिथिला की माटी का गौरव फिर दुनिया को भाए।
यही प्रार्थना हर साँस, हर एहसास रहता है,
मेरा गाँव फिर आबाद रहता है।।

अब के नेता



श्री जगर नाथ सन्डील
वरीय प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी
सुवर्णरेखा नहर प्रमंडल, जमशेदपुर

निकल पड़ते अपनों की अगुवाई करने और बनने बुलंद आवाज,
देश की मुख्यधारा के साथ, जोड़ने अपना पिछड़ा समाज।।

क्रान्ति का पथ प्रशस्त करने और करने उन्नति का आगाज।
समर्थन और भरोसा जीत, स्थापित करता अपना एक सम्राज्य।।

बन रहे नेता गली-गली में, देश में नेताओं की बाढ़ है।
समाज में फिर भी सामाजिक समरसता और न्याय का सुखाड़ है।।
अपनी और अपनों की उन्नति करता रहता सामजिक न्याय बस आड़ है।
जनता का धन लूटने और बटोरने का ये तो बस जुगाड़ है।।

झूठ, फरेब, जुमले और हसीन सपनों के मकड़जाल वो बुनते हैं,
सामाजिक न्याय से जिसका कोई सरोकार नहीं, कर्म वो ऐसा करते हैं।
भ्रष्टाचारी, व्याभिचारी और दबंग जो किसी की नहीं सुनते हैं,
जनता चुनती ऐसे ही बेईमानों को और वो नेता-मंत्री बनते हैं।
आम जन से करता व्यवहार दबंग और बेशर्मी हो,
लोक लाज से विमुक्त मन मष्तिस्क में अपार गर्मी हो,
नेता वही बन पा रहा जो असामाजिक और कुकर्मी हो,
धर्म और समाज के नाम करता काम अधर्मी हो।

समाज के लिए संघर्ष और बलिदान का पाठ वो पढ़ाता है।
न्याय और क्रान्ति के सपने दिखा सबकों वो बढ़ाता है।।
आपस में इंसान को इंसान से स्वार्थ के लिए लड़ाता है।
सामान्य जन को मूर्ख बनाता और सुली पर चढ़ाता है।।
अपनी झूठी बातों पर ना कोई लोक लाज हो,
झूठी तसल्ली देता जब गिरता कोई गाज हो,
काम कोई ऐसा करता नहीं जिसपर कोई नाज हो,
प्रयास हर पल करता, जैसे करता काम दगाबाज हो।

उत्थान को सामाजिक हो या राजनैतिक या हो धार्मिक,
हर संगठन में चमचे और नेता एक दूसरे के पूरक हैं।
भ्रमजाल हरपल बुनते रहते अपनी बेहतरी की आशा में,
दिन रात ठगी जाती बेचारी जनता और बनायी जाती मूरख है।
आदर्श और पंथ जनता को गुमराह करने का एक हथकंडा है।
भटकता रहता भाँति-भाँति संगठनों में जैसे आदर्श और पंथ क्षणभंगुर है।

समाजिक उन्नति और कल्याण की चिंता छोड, स्वार्थ की पूर्ति के लिए,
पाला ऐसे बदलता रहता जैसे करता काम चंचल-चपल लंगूर है।।



ए.आई. बनेगा साथी हमारा



श्रीमती रंजना कुमारी
(द्वारा- श्री बिनय प्रधान
वरिष्ठ लेखाकार)

कल का सूरज नया होगा,
नसों में बिजली दौड़ेगी,
सोच की सीमाओं को अब,
मशीनें पीछे छोड़ेंगी।
सिर्फ गणना नहीं,
अब इनमें अहसास भी जागेंगे,
इंसानी ज़हन के हर रहस्य,
अब इनके आगे भागेंगे।
हाथों के कौशल को अब,
चिप्स की रफ्तार मिलेगी,
सूनी आँखों के सपनों को,
एक नई बहार मिलेगी।
खेतों से ब्रह्मांड तक,
इसका ही परचम होगा,
बीमारी और मुश्किलों का,
अब वजूद ही कम होगा।
पर डर है उस दिन का भी,
जब रूह कहीं खो जाएगी,
क्या इंसानी धड़कन भी,
कोड्स में सो जाएगी?
सर्जन जब सृजन करेगा,
तो क्या ममता भी लाएगा?
या ठंडे लोहे का दिल,
बस तर्क ही हमें सुनाएगा?
भविष्य सुनहरा है मगर,
नियंत्रण हाथ में रखना होगा,
मशीन को साथी,
न कि खुद को गुलाम बनाना होगा।
ए.आई. बनेगा साथी हमारा,
गर हम विवेक न खोएंगे,
वरना अपनी ही बनाई दुनिया में,
हम अजनबी हो जाएंगे।



मैं भी अजीब हूँ



श्री काजल कुमारी
(द्वारा- श्री कुंदन कुमार
लेखाकार)

मैं भी अजीब हूँ,
भागते वक़्त को थामना चाहती हूँ,
बचपन के उन सुनहरे पलों को,
फिर से जीना चाहती हूँ।
वो पापा का लाड,
वो माँ की गोदी,
वो बेफ़िक्र दिन,
मैं फिर से पाना चाहती हूँ।
कभी सोचती हूँ,
कोई जादू हो जाए,
बाबुल की देहरी पर,
वक़्त ठहर जाए।
पर अब समझ आया है,
मायका छूटना अंत नहीं,
एक नए आँगन में,
जीवन की नई शुरुआत है।

हाथों की मेहंदी,
सिर्फ़ रंग नहीं लाती,
एक लड़की को,
नए सफ़र पर ले जाती।
हर विदाई के आँसू में,
एक नई सुबह छिपी होती है,
हर मोड़ पर खुद को ढाल लेना,
औरत की सबसे बड़ी खूबी होती है।
मैंने माँ को देखा है,
आँखों में दर्द छुपाते हुए,
मुझे हँसकर विदा करते हुए,
अपने फ़र्ज़ निभाते हुए।
आज मेरी खुशियाँ देखकर,
उन्हें सुकून मिलता है,
बेटी जब नया घर अपनाती है,
तभी नया संसार बसता है।
वक़्त की यही ख़ासियत है,
अजनबियों को अपना बना देता है,
नए रिश्तों की गर्माहट से,
हर डर मिटा देता है।
मुझे याद है वो दिन,
जब नए घर में आई थी,
अनजाने लोगों के बीच,
थोड़ी सहमी, थोड़ी घबराई थी।
पर धीरे-धीरे सब अपना हो गया,
और मेरा डर, हौसले में बदल गया।

आज आईने में खुद को नया पाती हूँ,
सिर्फ़ बेटी या पत्नी नहीं, अब माँ बनने जाती हूँ।
मेरी कोख में पलती नन्ही-सी एक जान है,
यही मेरी दुनिया है, यही मेरी पहचान है।
उसकी आहट से, मन शांत हो जाता है,
हर धड़कन में, एक नया सपना मुस्कुराता है।
अब समझ गई हूँ, वक़्त कभी नहीं रुकता,
जो उसके साथ चल पड़े, वो कभी नहीं झुकता।
अब पीछे मुड़ना नहीं,बस आगे बढ़ते जाना है,
इस नन्हे से हाथ को थाम, मुस्कुराते हुए जीवन सजाना है।

"कुछ खोया और कुछ पाया"



श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार

इस जीवन की आपाधापी में,
वक्त का पहिया चलता रहा,
कुछ ख्वाब हकीकत बन बैठे,
कुछ रेत के जैसे फिसलता रहा।

ज़िंदगी की इस बहती नदी में,
वक़्त का बहाव चलता रहा,
कुछ किनारे छूटते गए पीछे,
कुछ नया रास्ता बनता रहा।

कभी फुर्सत में बैठकर सोचता हूँ,
इस सफर में क्या खोया क्या पाया,
क्या सचमुच कुछ हासिल भी हुआ,
या बस पीछे छूट गया साया?

ना नुकसान की कोई गिनती है यहाँ,
ना मुनाफ़े का कोई पुख्ता हिसाब है,
खोना अगर एक कड़वी हकीकत है,
तो पाना भी एक हसीन ख़्वाब है।

तराजू पर तौलूँ तो पलड़े दोनों ही भारी हैं,
खोने के मलाल पर पाने की खुशी भारी है।
कुछ खोए बिना कुछ मिलता कहाँ है,
पतझड़ के बिना बागों में फूल खिलता कहाँ है?

हिसाब-किताब तो बस दिमाग का काम है,
बांवरा दिल तो आज भी कहता है,
जो खोया वो एक खूबसूरत सबक था,
जो पाया, वही असली ज़िंदगी का इनाम है।

खाली हाथ आए थे , खाली हाथ ही जाना है,
फिर खोने-पाने का ये कैसा ताना-बाना है?
वक्त के साथ जो छूटा वो भी मेरा न था,
जीवन में जो पाया वो भी यहीं रह जाना है।

शिकवा नहीं कि सफ़र में क्या छूटा,
मलाल नहीं कि क्या हाथ आया,
बस इसी कशमकश का नाम है जीना,
कि यहाँ 'कुछ खोया और कुछ पाया'।



नन्हीं-सी कदम, तेरे दम से है दम



श्रीमती पुनम कुमारी
(द्वारा- श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार)

नन्हीं-सी कदम, तेरे दम से है दम,
नन्हीं -सी कदम, तेरे दम से है हम ।

कभी आगे हम, कभी आगे तुम,
कभी पीछे हम, कभी पीछे तुम ।
जहाँ तेरे कदम, वहीं हैं हम,
तुम हो संग, फिर नहीं कोई गम ।

नन्हीं -सी कदम, तेरे दम से है दम,
नन्हीं- सी कदम, तेरे दम से है हम ।

तेरे हाथों में खुशियों की सौगात है,
अपने से बड़ों का तुझे साथ है।
तेरी किलकारियों से गूंजे आसमाँ,
तेरे कदमों में है सारा जहाँ ।
नन्हीं-सी कदम, तेरे दम से है दम,
नन्हीं-सी कदम, तेरे दम से है हम ।

तुझसे लाड लगाए तेरी माँ,
तुझसे लाड लगाए तेरे पापा ,
तुझसे प्यार करे ये सारा जहाँ ,
खुशियों से खुशबू तेरा जीवन सारा।

नन्हीं -सी कदम तेरे दम से है दम,
नन्हीं- सी कदम, तेरे दम से है हम ।

जीवन में तू हमेशा खुश रहे,
मेरा आशीष हमेशा तेरे साथ रहे ।
छू ले तू आसमान की बुलंदियों को,
हर कामयाबी तेरे कदमों में रहे।

नन्हीं -सी कदम तेरे दम से है दम ,
नन्हीं -सी कदम तेरे दम से है हम ।

"हिंदी हमारी मातृभाषा है, यह हमारी आत्मा की आवाज़ है।"
— रामधारी सिंह दिनकर





प्रकृति



श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकृति परमेश्वर की वाणी, जीवन की अनुपम कहानी।
हरित धरा का पावन आँचल,
भरता जग में सुख का संबल॥

हिमगिरि ऊँचा शीश उठाए, भारत का गौरव कहलाए।
शुभ्र शिखर संदेश सुनाते, धैर्य धर्म का पथ बतलाते॥

गंगा निर्मल अमृत धारा,
जन-जन का जीवन उजियारा।
यमुना प्रेम सुधा बरसाती, संस्कृति की गाथा दोहराती॥

नर्मदा की शांत लहरियाँ,
मन में भरती मधुर उमंगियाँ।
गोदावरी पुण्य सलोनी, धरती की अनुपम है रानी॥

ब्रह्मपुत्र बलवान निराला, सिंचित करता देश विशाल।
कावेरी की मधुर रवानी, जीवन की शुभ अमृत-वाणी॥

सागर गाता गीत सुहाना, लहरों का अनुपम तराना।
पूर्व-पश्चिम तट मुस्काते, भारत की शोभा बढ़ाते॥

मरुभूमि का तप भी प्यारा, सीखा उसने धैर्य हमारा।
रेती भी संदेश सुनाती, श्रम से किस्मत स्वयं बनाती॥

वन उपवन की शीतल छाया, जीवन में नव सुख बरसाया।
पल्लव, पुष्प, लता मुस्काती, धरती का श्रृंगार सजाती॥

कोयल मधुर राग सुनाती, मन वीणा को स्वयं बजाती।
मोर नाचे मेघ बुलाकर, सावन आए प्रेम लुटाकर॥

पवन सुनाए मधुर कहानी, फूल बिखेरें नई जवानी।
भँवरे गाएँ प्रेम तराना, जीवन लगे मधुर अफसाना॥

उषा सुनहरी किरण बिखेरे, तम के सारे बंधन टेरे।
सूरज जग को राह दिखाता, कर्मपथ का दीप जलाता॥

चंदा शीतल प्रेम लुटाता, मन का सारा क्लेश मिटाता।
तारों का मधुमय उजियारा, लगता जैसे स्वर्ग हमारा॥

नारी जैसी धीर प्रकृति है, ममता जिसकी सच्ची स्मृति है।
दुख सहकर मुस्काना जाने, सबके जीवन दीप जलाने॥

माँ के आँचल सी हरियाली, बहन सरीखी छवि निराली।
बेटी जैसी कोमल काया, पत्नी जैसी अटूट माया॥

सीता सा धैर्य प्रकृति धारे, राधा सा अनुराग हमारे।
मीरा जैसी प्रेम पुजारिन, करुणा की अनुपम अधिकारी॥

अन्नपूर्णा रूप सँवारे, भूखे जन का पेट वह भरे।
दुर्गा बन अन्याय मिटाए, लक्ष्मी बन समृद्धि बरसाए॥

भारत की यह पुण्य धरा है, ऋषियों का पावन बसेरा है।
कण-कण में इतिहास समाया, विश्वगुरु का मान बढ़ाया॥
सतपुड़ा, विंध्याचल न्यारे, धरती के श्रृंगार हमारे।
नीलगिरि की शीतल बयार, भर दे मन में नव विस्तार॥

खेतों में जब फसल लहराए, किसानों के मुख मुस्काए।
हल की रेखा भाग्य जगाती, धरती माता अन्न उगाती॥

आम, नीम, पीपल की छाया, जीवन को सुखमय बनवाया।
बरगद देता धीर सहारा, वृक्ष जगत का सत्य सितारा॥

जल ही जीवन, जल ही दाता, जल से हर प्राणी सुख पाता।
बूँद-बूँद का मान बढ़ाएँ, सूखे जीवन में रस लाएँ॥

नदियाँ केवल जल न लातीं, संस्कृति की धारा बहातीं।
तीर्थ, तपोवन, पुण्य कहानी, भारत की अमिट निशानी॥

मेघ बरसते प्रेम लुटाकर, धरती का आँचल खुशबूकर।
इंद्रधनुष मुस्काता नभ में, रंग बिखेरे जीवन-पथ में॥

पशु-पक्षी सब मित्र हमारे, जीवन के अनुपम सहारे।
इनका भी अधिकार बचाएँ, धरती को स्वर्गिक बनवाएँ॥

प्रकृति नहीं उपभोग की वस्तु, यह तो जीवन की है सत्ता।
जिसने इसका मान बढ़ाया, उसने ईश्वर को ही पाया॥

लोभ-मोह जब मन भर जाता, वन का आँचल कटता जाता।
आओ मिल संकल्प उठाएँ, धरती फिर हरितिम बनवाएँ॥

एक-एक हम वृक्ष लगाएँ, जीवन में खुशियाँ बरसाएँ।
स्वच्छ नदी, निर्मल हो पानी, यही हमारी सच्ची वाणी॥

शुद्ध वायु का दीप जलाएँ, हर आँगन हरियाली लाएँ।
बच्चों को यह ज्ञान सिखाएँ, प्रकृति-प्रेम संस्कार बनाएँ॥

भारत माता की मुस्कान, प्रकृति उसका दिव्य विधान।
इसके हित जो शीश झुकाए, वह जीवन का मान बढ़ाए॥

पाण्डेय मैडम चरण हमारे, ज्ञानदीप के उज्ज्वल तारे।
आप सिखाएँ प्रेम प्रकृति से, जीवन जुड़े सदा संस्कृति से॥

प्रकृति माता सदा सुहानी, जीवन की अमृतमय वाणी।
भारत भू का मान बढ़ाएँ, हरित धरा का गीत सुनाएँ॥

नारी, नदियाँ, पर्वत, वन सब, ईश्वर के अनुपम हैं रब।
इनका नित सम्मान करेंगे, युग-युग तक गुणगान करेंगे॥

"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"
- कमलापति त्रिपाठी

बैगों की आधी रात वाली पंचायत



श्री संतोष कुमार राय
लेखाकार

रात का था सन्नाटा,
कमरे में था अँधेरा।
बैगों ने शुरू किया,
गपशप का एक डेरा।
सबसे पहले स्कूल बैग ने,
रो कर अपनी बात बताई-
"मेरी तो टूट गई पीठ,
किताबों ने जान है खाई!
मुझमें इतनी भारी कॉपियाँ,
जैसे रखी हो कोई ईंट।
रोज़ कंधों पर लटक कर,
पिट जाती है मेरी पीठ!"
तभी कोने से बोला,
एक बड़ा सा ट्रॉली बैग-
"अरे! मेरे नीचे पहिए हैं,
मेरा है अलग ही स्वैग!
मैं तो जाता हूँ घूमने,
पहाड़ों और समंदर।
छुट्टियों का सारा सामान,
रहता है मेरे अंदर!"
चमकती हुई पार्टी पर्स,
इठला कर यों बोली-
"तुम सब हो कितने बोरिंग,
मेरी दुनिया है रंगोली।
मुझमें रहता सिर्फ फोन,
और थोड़ा सा कैश।
पार्टियों में जाती मैं,
करती हूँ पूरी ऐश!"
यह सुनकर लैपटॉप बैग ने,
अपना गला खँखारा-
"मैं हूँ सबसे स्मार्ट बैग,
मुझसे चलता ऑफिस सारा!
मुझमें रहता कंप्यूटर,
और चार्जर का तार।
काम की सारी ज़िम्मेदारी,
है मेरे ही सिर पर यार!"
तभी पीछे से जिम बैग ने,
दी एक लंबी जम्हाई-
"मेरी तो किस्मत खराब है,
बदबू ने जान है खाई!
मुझमें रहते पसीने वाले,
कपड़े और गंदे जूते।
कोई मुझे नहीं धोता,
बस सामान हैं मुझमें ठूँसते।"
सब्ज़ी वाले कपड़े के झोले ने,
मुस्कुरा कर बोला-
"अरे, तुम सब चुप हो जाओ!
अब खुलेगा मेरा राज़।
बाज़ार से आलू-टमाटर,
मैं ही तो लेकर आता हूँ।
मैं ही इस पूरे घर को,
रोज़ खाना खिलाता हूँ।"
अंत में लाल रंग का टिफिन बैग,
हँसते हुए बोला-
"सबको भूख लगती है,
चाहे ऑफिस हो या स्कूल।
मैं देता हूँ सबको खाना,
यही है मेरा उसूल!"
सब बैगों ने ताली पीटी,
सबने मिलकर गाना गाया।
"हम सब हैं कितने ज़रूरी,
ये आज समझ में आया!
कोई भारी, कोई छोटा,
कोई घूमता देश-विदेश।
हम बैगों के बिना दोस्तों,
रुक जाएगा सारा देश!"



घमंडी का सिर



सुश्री आदिती प्रिया
(द्वारा - संतोष कुमार राय
लेखाकार)

किसी स्थान पर एक बाँस का पेड़ था और उसके समीप ही एक जामुन का पेड़ भी था। जामुन का पेड़ बहुत मजबूत था। उसकी शाखाएं चारों ओर फैली हुई थीं। इसके विपरीत बाँस का पेड़ पतला तथा लचीला था। जिस दिशा में हवा चलती थी, वह बाँस का पेड़ भी उस ओर झुक जाता था।

एक बार जामुन के पेड़ ने रूखे स्वर में बाँस के पेड़ से कहा, "तुम आज्ञाकारी के अनुसार हिलते डुलते रहते हो? तुम भी मेरी तरह शान से सीधे खड़े रहा करो। तुम हवा से कह दो कि उसकी आज्ञानुसार नहीं चलोगे! कुछ साहस का परिचय दो। इस संसार में बलवानों का ही बोलबाला है।"

जामुन के पेड़ की बातें सुनकर बाँस के पेड़ ने चुप रहना ही ठीक समझा।

बाँस के पेड़ को चुप देखकर जामुन का पेड़ क्रोधित होकर बोला, "तुमने मेरी बात नहीं सुनी, तुम मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देते?"

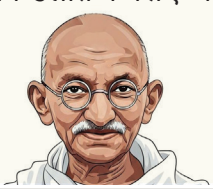
इस पर बाँस के पेड़ ने कहा, "मैं क्या कह सकता हूँ। तुम तो मुझसे बहुत अधिक मजबूत हो। मैं तो बहुत कमजोर हूँ, लेकिन मेरी एक बात ध्यानपूर्वक सुनो। अगर हवा बहुत ज्यादा तेज गति से चलने लगे, तो उसका सम्मान करना चाहिए नहीं तो....."

बाँस का पेड़ अपनी बात पूरी भी नहीं कर सका, तभी जामुन का पेड़ चिल्लाते हुए क्रोधित होकर उसकी बात काटता हुआ बोला, "किसी भी प्रकार की हवा मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।"

उस समय मंद-मंद चल रही हवा ने जामुन तथा बाँस के पेड़ के बीच चल रहे संवाद को सुन लिया। हवा जामुन के पेड़ से तेज़ वेग से टकराती हुई आगे निकल गई। कुछ देर बाद, हवा ने अपने-आप को और वेगशाली बना लिया। वह एक तूफ़ान में बदल गई। बाँस का पेड़ उस हवा के टकराने से लगभग पूरा झुक गया। तूफानी हवा जामुन के पेड़ से दुबारा टकराई। हवा के टकराने से उस पेड़ को कोई असर नहीं हुआ, वह शान से ही खड़ा रहा। उस तूफ़ानी हवा ने फिर से उस पेड़ की जड़ों पर प्रहार किया। इस वजह से उसकी जड़ें कमज़ोर हो गई। उस पेड़ की शाखाओं ने तूफ़ानी हवाओं को रोकने की भरपूर कोशिश की, परंतु तेज़ हवाओं ने पूरी शक्ति लगाकर उन शाखाओं को पीछे की ओर धकेल दिया। इस प्रकार जामुन का पेड़ अपना संतुलन खो बैठा। उसकी जड़ें कमज़ोर थीं और उसके बाद वह पेड़ गिर गया।

जामुन के पेड़ का अंत देखकर बाँस का पेड़ दुखी मन से सोचने लगा - "आखिरकार जामुन के पेड़ का अंत हो ही गया। काश! उसने मेरा कहा माना होता और हवा का आदर किया होता, परंतु यह तो घमंडी था। इसे शायद यह नहीं मालूम था कि घमंडी का सिर कैसे नीचा होता है।"

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।"



— महात्मा गांधी



लाल लिफ़ाफ़ा और स्कूल का खज़ाना



सुश्री आदिती प्रिया
(द्वारा - संतोष कुमार राय
लेखाकार)

बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। क्लासरूम के अंदर गणित वाले शर्मा सर ब्लैकबोर्ड पर सवाल हल कर रहे थे। लेकिन सातवीं क्लास में पीछे बैठने वाले तीन दोस्तों—आर्यन, रोहन और गोलू—का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था। रोहन के बैग के पास एक लाल रंग का लिफ़ाफ़ा रखा था। यह उसे सुबह पानी पीने वाली जगह पर मिला था। लिफ़ाफ़े पर मोटे काले पेन से लिखा था—"सिर्फ हिम्मत वाले ही इसे खोलें!" आर्यन ने रोहन को कोहनी मारी और धीरे से फुसफुसाते हुए बोला, "खोल कर देख ना, इसमें क्या है?" रोहन ने डरते हुए शर्मा सर की तरफ देखा। सर बोर्ड की तरफ मुड़कर लिख रहे थे। रोहन ने छुपकर लिफ़ाफ़ा थोड़ा सा फाड़ा। तभी शर्मा सर अचानक पलटे। "पीछे क्या बातें हो रही हैं?" सर ने कड़क आवाज़ में पूछा। तीनों एकदम सीधे होकर बैठ गए। "कुछ नहीं सर," गोलू ने घबराकर कहा। शर्मा सर ने उन्हें घूर कर देखा और फिर पढ़ाने लगे। तीनों ने तय किया कि अब वे लंच ब्रेक में ही इसे खोलेंगे। जैसे ही घंटी बजी—ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग! लंच ब्रेक होते ही तीनों दोस्त अपना टिफिन लेकर स्कूल के मैदान में एक बड़े से पेड़ के नीचे भागे। वहाँ कोई नहीं था। "अब जल्दी खोल इसे!" आर्यन ने खुशी से कहा।

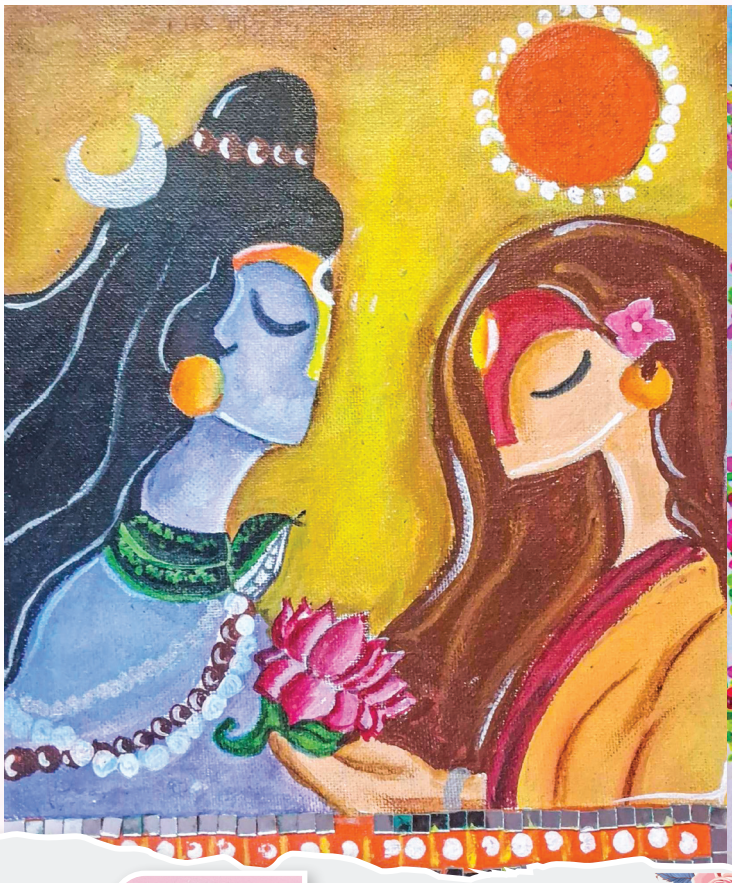


रोहन ने पूरा लिफ़ाफ़ा फाड़ दिया। उसके अंदर एक पीले रंग का कागज़ था। उस पर कोई नक्शा नहीं था, बल्कि एक पहेली लिखी थी:"मैं एक कमरा हूँ, जहाँ बहुत शांति होती है। मेरे पास बहुत सारी कहानियाँ हैं। अगर खज़ाना चाहिए, तो उस कमरे की सबसे बड़ी मेज़ के नीचे आना!"

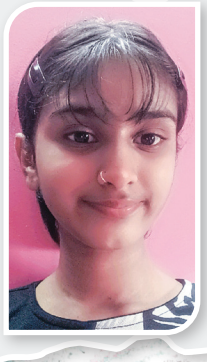
"शांति? कहानियाँ? यह कौन सी जगह है?" गोलू ने सिर खुजाते हुए पूछा। आर्यन खुशी से उछल पड़ा, "अरे बुद्धु! लाइब्रेरी! वहीं तो बहुत सारी किताबें और कहानियाँ होती हैं। और मैम हमें हमेशा चुप रहने को कहती हैं।"

तीनों बिना खाना खाए सीधे लाइब्रेरी की तरफ दौड़े। लाइब्रेरी का दरवाज़ा थोड़ा सा खुला था। अंदर एकदम सन्नाटा था। लाइब्रेरियन मैम अपनी बड़ी सी मेज़ के पास बैठी थीं। उनका चश्मा नाक पर टिका था और वह कुछ लिख रही थीं। आर्यन ने धीरे से कहा, "हमें बिना आवाज़ किए मैम की मेज़ के पीछे जाना होगा।" तीनों ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गए और चुपचाप रेंगते हुए आगे बढ़ने लगे। तभी गोलू का पैर एक कुर्सी से टकरा गया—'खट!' मैम ने सिर उठाया और चश्मे से इधर-उधर देखा। तीनों दोस्तों ने अपनी साँस रोक ली और एक डेस्क के पीछे छुप गए। मैम को कोई नहीं दिखा, तो वह फिर से अपना काम करने लगीं। बचते-बचाते तीनों छुपकर मेज़ के नीचे पहुँचे। वहाँ एक छोटा सा गत्ते का डिब्बा टेप से चिपका हुआ था। रोहन ने धीरे से टेप हटाया और डिब्बा बाहर निकाल लिया।

वे डिब्बा लेकर चुपचाप लाइब्रेरी से बाहर भागे और वापस पेड़ के नीचे आ गए। धड़कते दिल से उन्होंने डिब्बा खोला। उन्हें लगा कि इसमें ढ़ेर सारी चॉकलेट या कोई महंगा खिलौना होगा। लेकिन अंदर सिर्फ एक पुरानी कॉमिक बुक और एक चिट्ठी थी। चिट्ठी में लिखा था: "बधाई हो छोटे जासूसों! यह खज़ाना आठवीं क्लास के बच्चों ने छुपाया था। हम देखना चाहते थे कि तुम लोग पहेली सुलझा पाते हो या नहीं। असली खज़ाना यह कॉमिक बुक नहीं है। असली खज़ाना तो वह मज़ा है, जो तुम तीनों ने मिलकर इस खज़ाने को ढूँढने में किया! अब मजे से पढ़ो!" तीनों ने एक-दूसरे की शक्ल देखी। पहले तो उन्हें थोड़ा अजीब लगा कि कोई बड़ा खज़ाना नहीं मिला, लेकिन फिर वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। बात तो सच थी, उन तीनों को इस जासूसी और दौड़-भाग में बहुत मज़ा आया था। उन्होंने आराम से बैठकर अपना टिफिन खाया और मिलकर वह कॉमिक बुक पढ़ी। उस दिन उन्हें समझ में आया कि दोस्तों के साथ मिलकर खेला गया खेल किसी भी खज़ाने से बड़ा होता है।

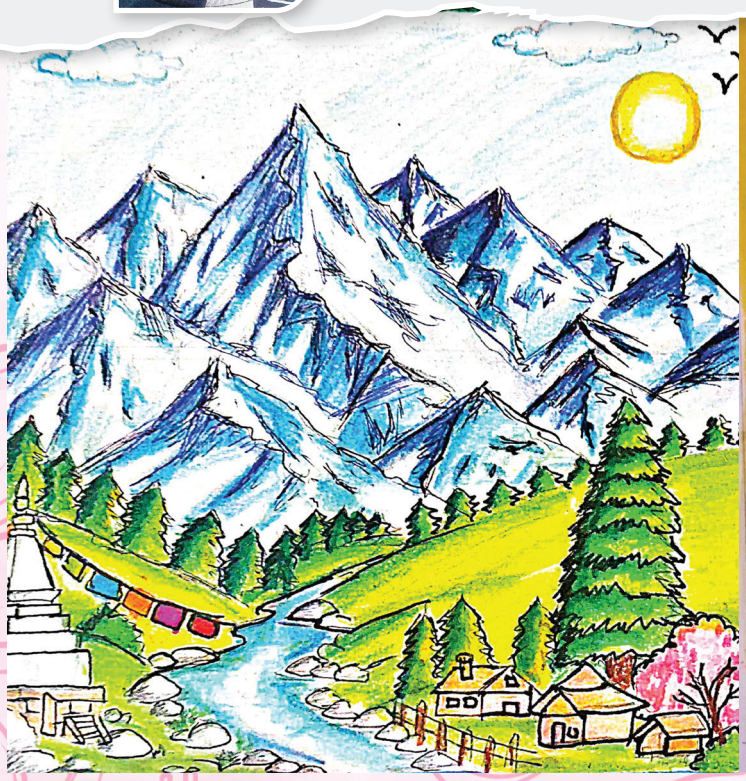


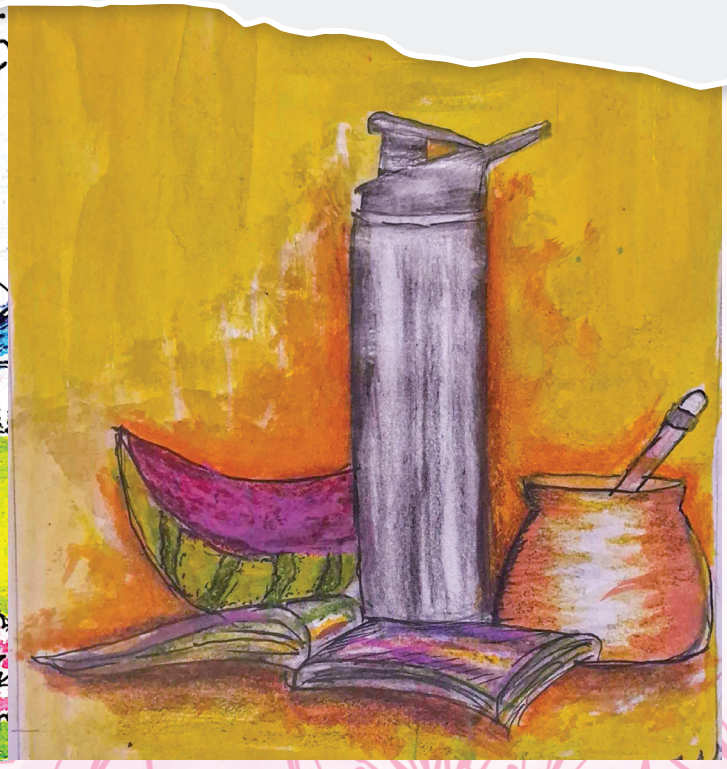




सुश्री विशालाक्षी श्रीजा

कक्षा - VII (सुपुत्री - श्री आशीष कर्ण, सहायक लेखा अधिकारी)






हुंडरू जलप्रपात
रांची
नेतरहाट
जनजातीय संस्कृति
हमारी पहचान
समृद्ध वन जीवन
हमारी जिम्मेदारी
ऐतिहासिक धरोहर
हमारी विरासत
खनिज संपदा
विकास का आधार